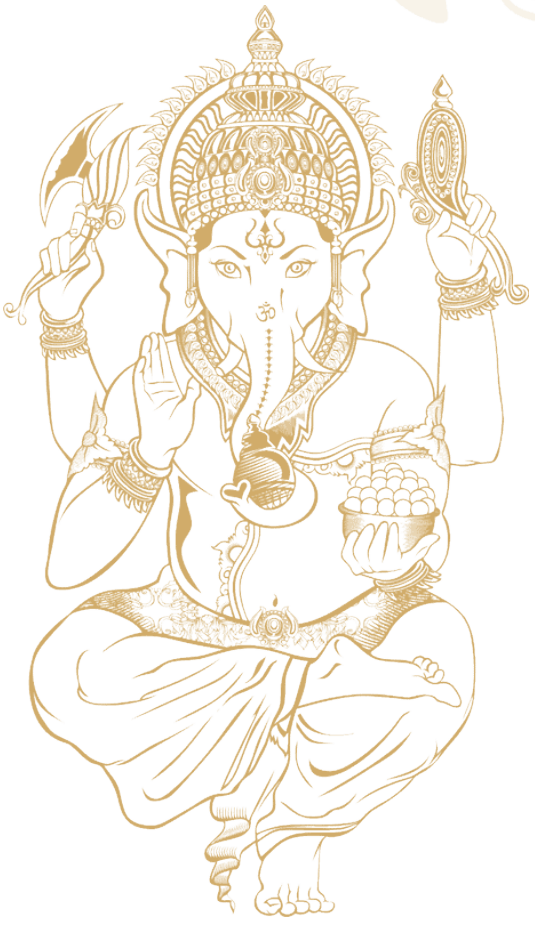

Kirti

06 Jul 1998

10:20 PM

Panipat

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121340301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**06/07/1998**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**22:20:00 घंटे**
इष्ट	42:09:55 घटी
स्थान	**Panipat**
राज्य	Haryana
देश	India

अक्षांश	29:24:00 उत्तर
रेखांश	76:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:22:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	21:57:52 घंटे
वेलान्तर	-00:04:40 घंटे
साम्पातिक काल	16:55:44 घंटे
सूर्योदय	05:28:01 घंटे
सूर्यास्त	19:25:22 घंटे
दिनमान	13:57:21 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	20:34:59 मिथुन
लग्न के अंश	13:20:16 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**वृश्चिक - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अनुराधा - 4**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	शुभ
करण	कौलव
गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ने-नैनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1920	आषाढ़	15
पंजाबी	संवत : 2055	आषाढ़	22
बंगाली	सन् : 1405	आषाढ़	21
तमिल	संवत : 2055	आनी	22
केरल	कोल्लम : 1173	मिथुनम	22
नेपाली	संवत : 2055	आषाढ़	22
चैत्रादि	संवत : 2055	आषाढ़	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2055	आषाढ़	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 21:05:52
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 25:11:31 घंटे
जन्म योग _____: अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग _____: शुभ
योग समाप्ति काल _____: 23:57:03 घंटे
जन्म योग _____: शुभ
सूर्योदय कालीन करण _____: बव
करण समाप्ति काल _____: 08:32:00 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 57:25:38
भभोग _____: 64:34:24
भोग्य दशा काल _____: शनि 2 वर्ष 1 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: आश्विन
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: रेवती
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: वृश्चिक
सूर्य _____: मकर
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: कुम्भ
बुध _____: वृश्चिक
गुरु _____: मीन
शुक्र _____: मेष
शनि _____: कर्क
राहु _____: वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

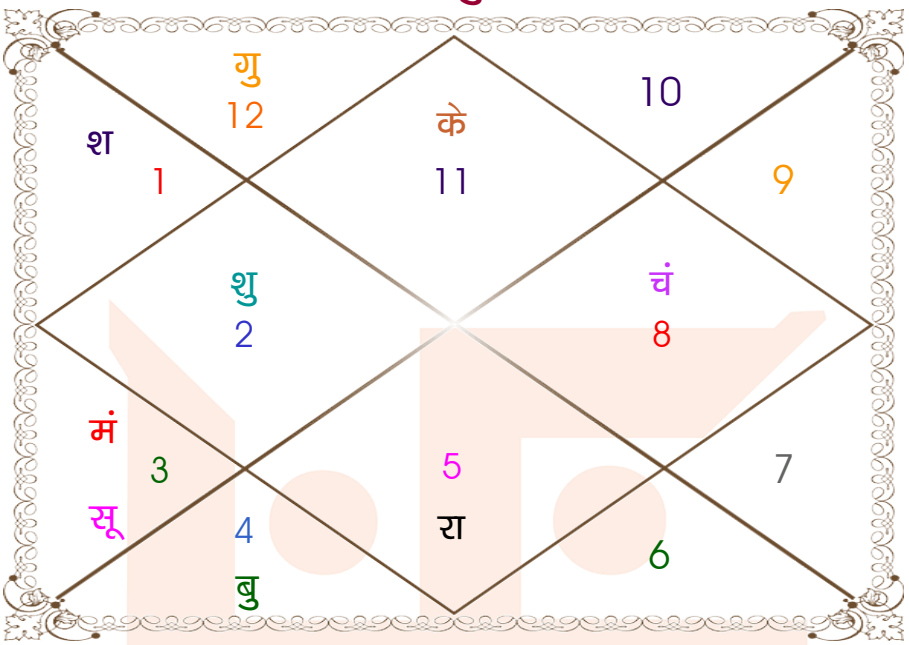

चन्द्र कुंडली

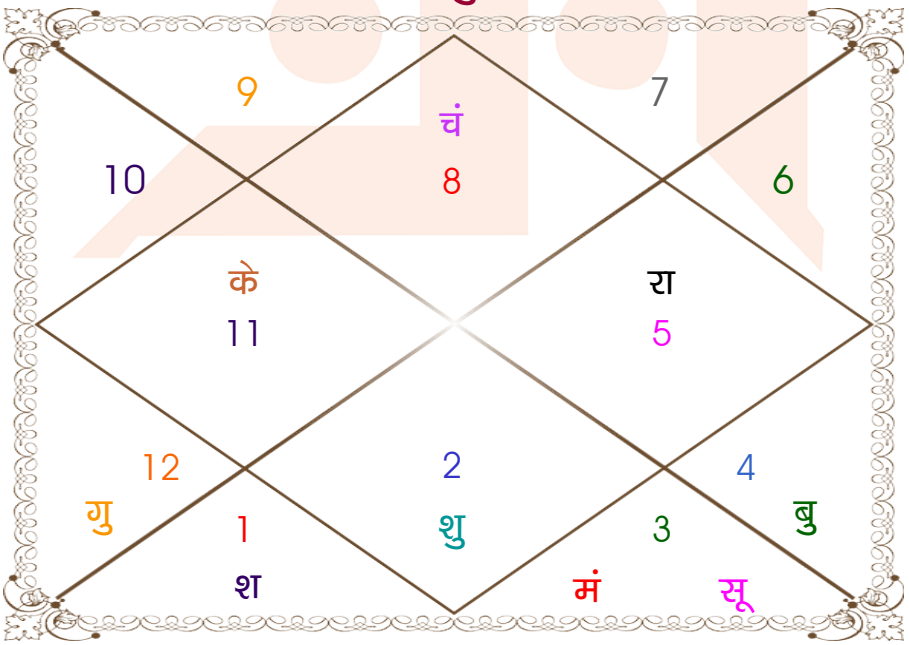

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

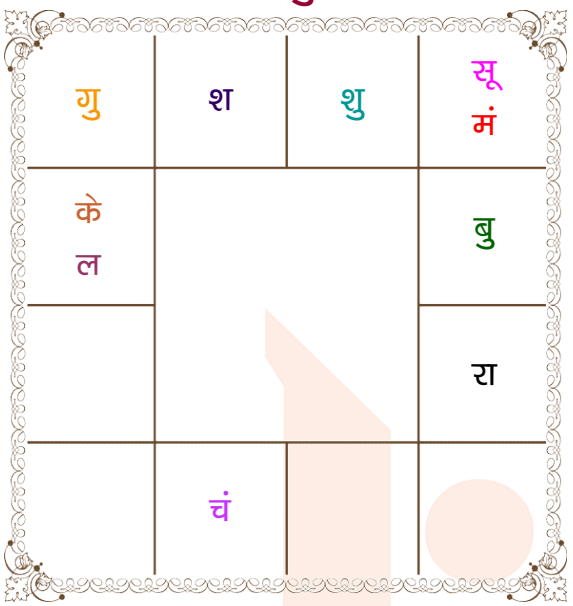

लग्न कुंडली

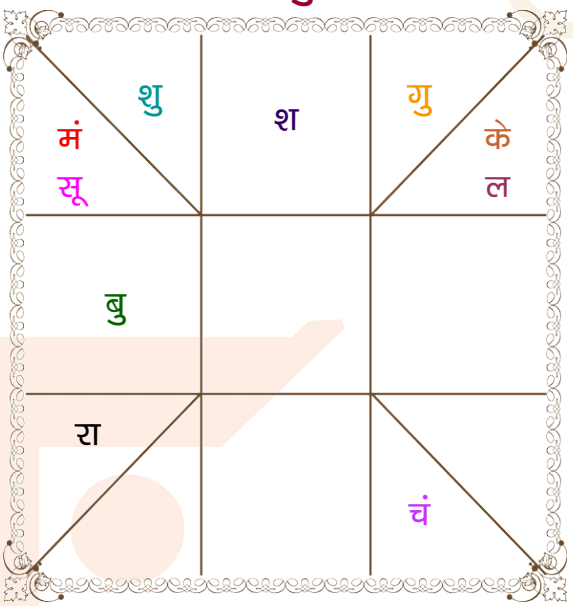

विंशोत्तरी
शनि 2वर्ष 1मा 14दि

शनि

06/07/1998

21/08/2101

शनि	20/08/2000
बुध	20/08/2017
केतु	20/08/2024
शुक्र	20/08/2044
सूर्य	20/08/2050
चन्द्र	20/08/2060
मंगल	21/08/2067
राहु	20/08/2085
गुरु	21/08/2101

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 5मा 11दि

पिंगला

16/12/2025

17/12/2027

पिंगला	26/01/2026
धान्या	28/03/2026
भ्रामरी	17/06/2026
भद्रिका	27/09/2026
उल्का	26/01/2027
सिद्धा	17/06/2027
संकटा	27/11/2027
मंगला	17/12/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	13:20:16	498:27:49	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	---
सूर्य			मिथु	20:34:59	00:57:11	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	15:10:36	12:29:35	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	नीच राशि
मंगल		अ	मिथु	06:23:12	00:40:35	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि
बुध			कर्क	14:48:48	01:24:22	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
गुरु			मीन	04:00:56	00:02:12	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	स्वराशि
शुक्र			वृष	20:39:34	01:11:38	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
शनि			मेष	08:26:21	00:03:55	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	नीच राशि
राहु	व		सिंह	08:44:53	00:07:53	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	08:44:53	00:07:53	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	17:58:39	00:02:02	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप	व		मक	07:23:37	00:01:32	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
प्लूटो	व		वृश्चि	11:53:05	00:01:11	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	---
दशम भाव			वृश्चि	21:21:53	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:03

लग्न-चलित

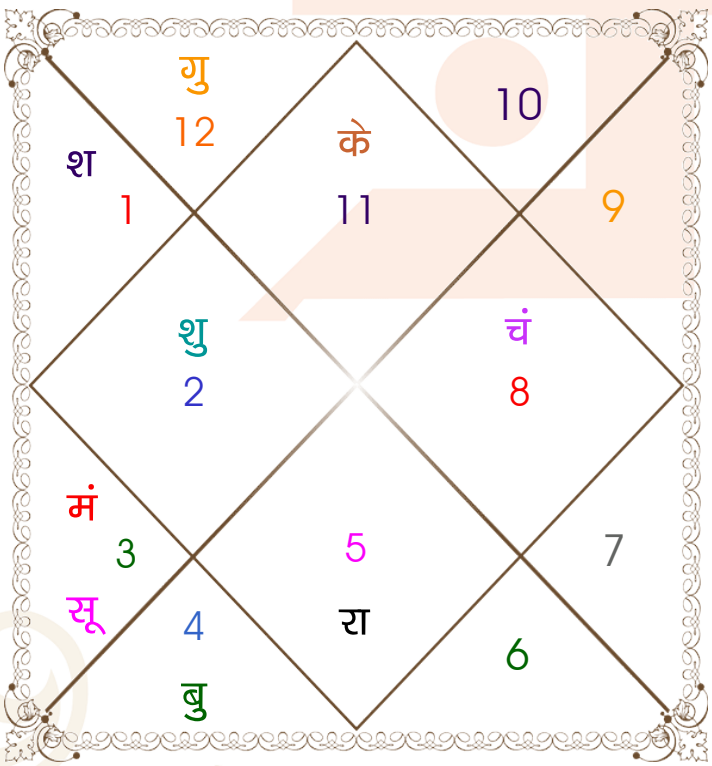

चन्द्र कुंडली

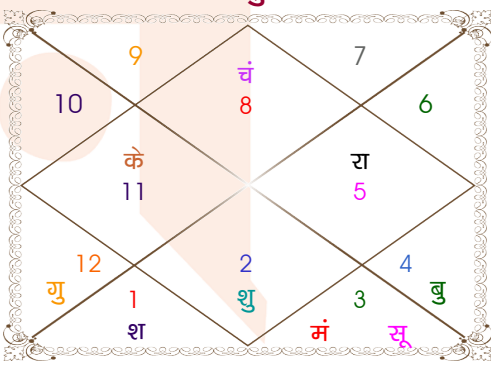

नवमांश कुंडली

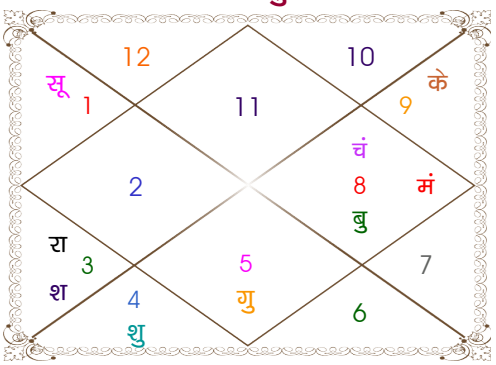

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	29:40:32	कुम्भ	13:20:16
2	कुम्भ	29:40:32	मीन	16:00:48
3	मेष	02:21:05	मेष	18:41:21
4	वृष	05:01:37	वृष	21:21:53
5	मिथुन	05:01:37	मिथुन	18:41:21
6	कर्क	02:21:05	कर्क	16:00:48
7	कर्क	29:40:32	सिंह	13:20:16
8	सिंह	29:40:32	कन्या	16:00:48
9	तुला	02:21:05	तुला	18:41:21
10	वृश्चिक	05:01:37	वृश्चिक	21:21:53
11	धनु	05:01:37	धनु	18:41:21
12	मकर	02:21:05	मकर	16:00:48

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	13:20:16
2	मीन	24:10:08
3	मेष	26:00:00
4	वृष	21:21:53
5	मिथुन	14:41:37
6	कर्क	10:12:38
7	सिंह	13:20:16
8	कन्या	24:10:08
9	तुला	26:00:00
10	वृश्चिक	21:21:53
11	धनु	14:41:37
12	मकर	10:12:38

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

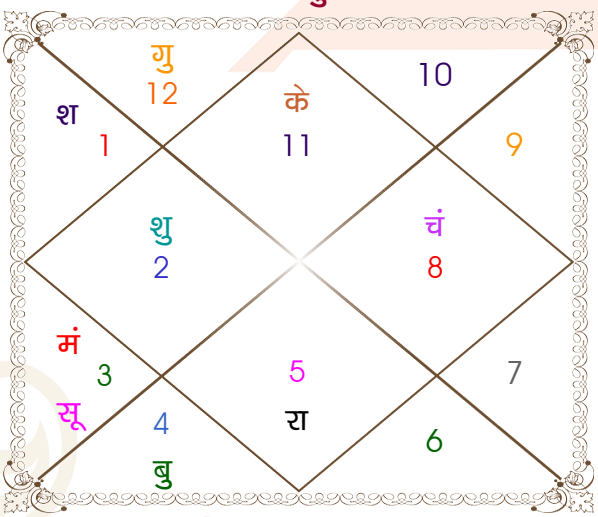

भाव कुंडली

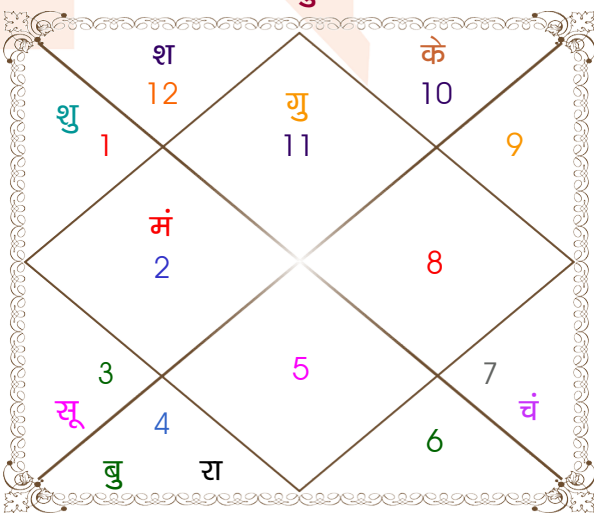

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	वृद्ध	शक्त	कौतुक	7.29	61 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	भीत	निद्रा	0.30	55 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	कुमार	विकल	प्रकाश	0.00	57 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	खल	उपवेशन	1.33	21 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	स्वस्थ	आगमन	3.44	80 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	कुमार	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	8.42	42 %
शनि	पुत्र	आयु	कुमार	भीत	सभा	0.32	40 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	33 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	33 %
कुल						21.12	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

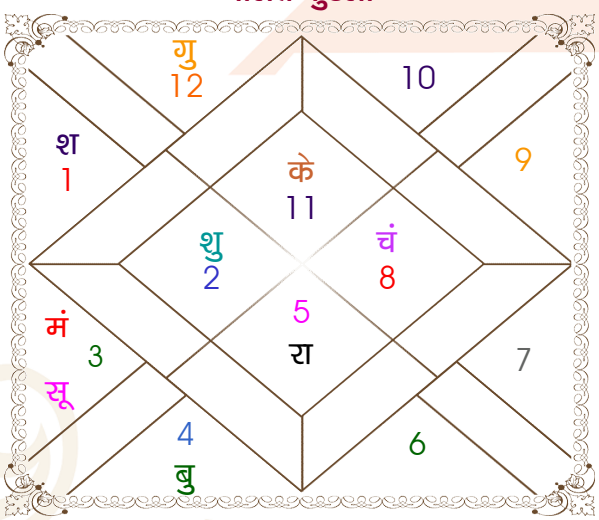

लग्न-चलित

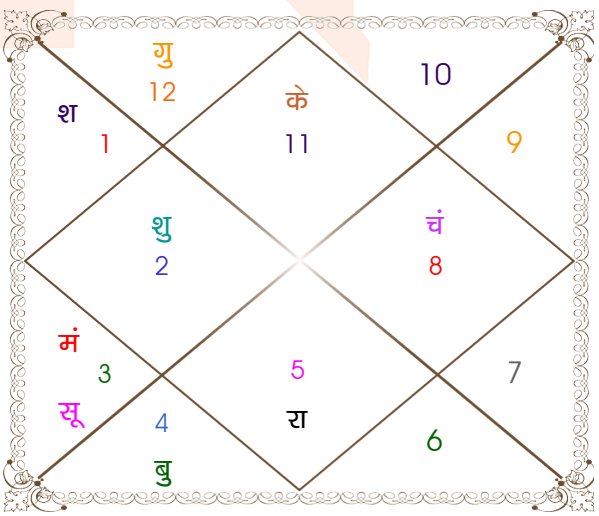

सुदर्शन चक्र

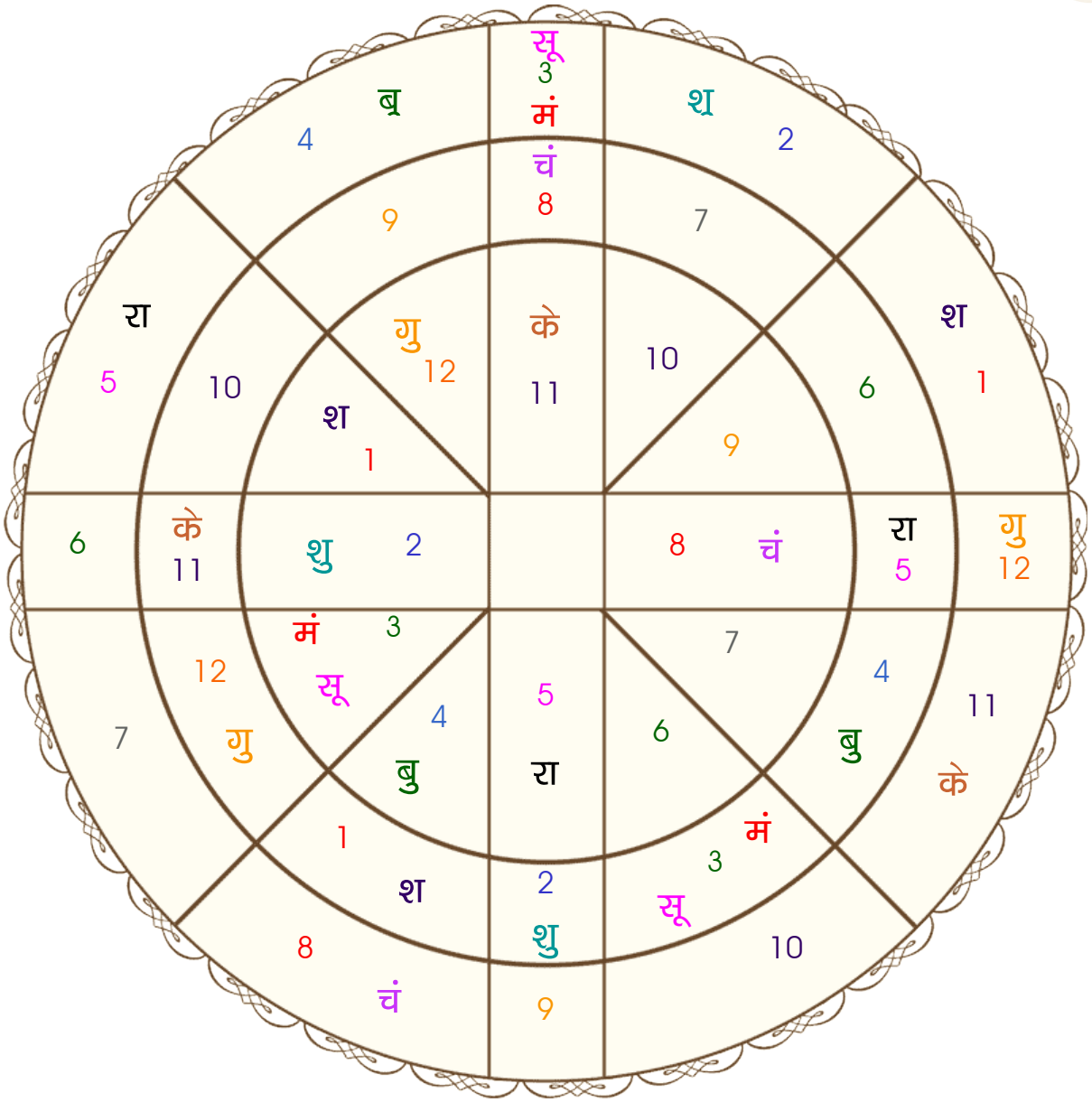

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 11 मास 22 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	20:41:06	बुध	गुरु	गुरु	बुध
चंद्र		वृश्चि	15:16:44	मंगल	शनि	गुरु	शनि
मंगल		मिथु	06:29:19	बुध	मंगल	चंद्र	शुक्र
बुध		कर्क	14:54:55	चंद्र	शनि	गुरु	गुरु
गुरु		मीन	04:07:04	गुरु	शनि	शनि	शुक्र
शुक्र		वृष	20:45:41	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र
शनि		मेष	08:32:28	मंगल	केतु	गुरु	शुक्र
राहु	व	सिंह	08:51:00	सूर्य	केतु	गुरु	चंद्र
केतु	व	कुंभ	08:51:00	शनि	राहु	गुरु	गुरु
हर्ष	व	मक	18:04:46	शनि	चंद्र	बुध	केतु
नेप	व	मक	07:29:45	शनि	सूर्य	केतु	गुरु
प्लूटो	व	वृश्चि	11:59:12	मंगल	शनि	चंद्र	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कुंभ	13:26:23	शनि	राहु	बुध	चंद्र
2	मीन	24:16:15	गुरु	बुध	राहु	राहु
3	मेष	26:06:08	मंगल	शुक्र	केतु	सूर्य
4	वृष	21:28:01	शुक्र	चंद्र	शुक्र	राहु
5	मिथु	14:47:45	बुध	राहु	केतु	राहु
6	कर्क	10:18:46	चंद्र	शनि	शुक्र	केतु
7	सिंह	13:26:23	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शुक्र
8	कन्या	24:16:15	बुध	मंगल	राहु	राहु
9	तुला	26:06:08	शुक्र	गुरु	केतु	राहु
10	वृश्चि	21:28:01	मंगल	बुध	शुक्र	केतु
11	धनु	14:47:45	गुरु	शुक्र	शुक्र	शनि
12	मक	10:18:46	शनि	चंद्र	चंद्र	राहु

के.पी. अयनांश : 23:43:56

फॉरच्युना : कर्क 08:02:01

लग्न कुंडली

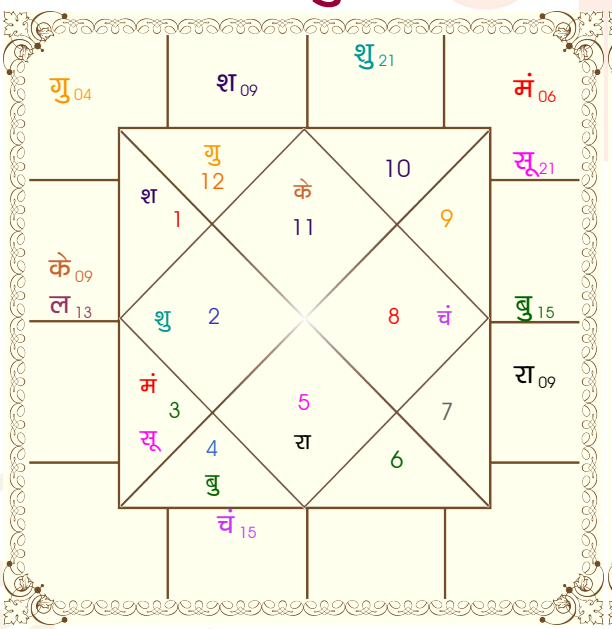

भाव कुंडली

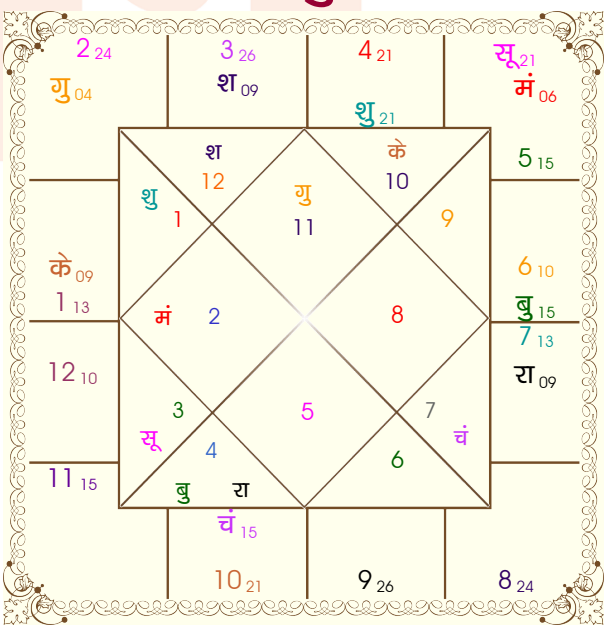

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र- बुध- गुरु+ शनि-
2	सूर्य- चंद्र, बुध, गुरु+ शनि,
3	मंगल, शुक्र,
4	मंगल+ शुक्र-
5	सूर्य, बुध-
6	चंद्र- बुध, शुक्र- राहु, केतु,
7	सूर्य-
8	बुध-
9	चंद्र, शुक्र+
10	मंगल,
11	सूर्य- गुरु-
12	चंद्र- बुध- गुरु- शनि+ राहु, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 2- 5, 7- 11-
चंद्र	1- 2, 6- 9, 12-
मंगल	3, 4+ 10,
बुध	1- 2, 5- 6, 8- 12-
गुरु	1+ 2+ 11- 12-
शुक्र	3, 4- 6- 9+
शनि	1- 2, 12+
राहु	6, 12,
केतु	6, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	सू	गु	चं बु गु	श
2	चं बु गु	श	सू	गु
3	--	शु	मं	मं
4	मं	मं	--	शु
5	--	सू	--	बु
6	के	बु रा	शु	चं
7	--	--	--	सू
8	--	--	--	बु
9	शु	चं	--	शु
10	--	--	मं	मं
11	--	--	सू	गु
12	श रा	के	चं बु गु	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	7	---	मिथुन	5
चंद्र	6	4,12	वृश्चिक	9
मंगल	3,10	8	मिथुन	4
बुध	5,8	2,10	कर्क	6
गुरु	2,11	9	मीन	1
शुक्र	4,9	3,7,11	वृष	3
शनि	1,12	6	मेष	2
राहु	---	1,5	सिंह	6
केतु	---	---	कुम्भ	12

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,11	9	1	2,11	9	1
चंद्र	1,12	6	2	2,11	9	1
मंगल	3,10	8	4	6	4,12	9
बुध	1,12	6	2	2,11	9	1
गुरु	1,12	6	2	1,12	6	2
शुक्र	6	4,12	9	4,9	3,7,11	3
शनि	---	---	12	2,11	9	1
राहु	---	---	12	2,11	9	1
केतु	---	1,5	6	2,11	9	1

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	80.58	225.18	66.39	104.81	334.02	50.66	8.44	128.75	308.75	287.98	277.39	221.88
सूर्य	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--	--
80.58	0.00	0.00	0.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	तृती	--	युति
225.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.40	0.00	0.00	0.00	2.23	0.00	9.41
मंगल	युति	--	--	--	--	--	--	तृती	--	8वां	8वां	--
66.39	0.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.44	0.00	3.49	9.94	0.00
बुध	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	सप्त	पंच
104.81	0.00	2.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.46	7.13	2.16
गुरु	5वां	9वां	चतु	5वां	--	--	--	--	--	--	--	9वां
334.02	1.63	3.91	2.44	4.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.79
शुक्र	--	सप्त	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	सप्त
50.66	0.00	8.40	0.00	0.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.07
शनि	3रा	--	3रा	--	--	--	--	पंच	--	10वा	10वा	--
8.44	2.95	0.00	9.77	0.00	0.00	0.00	0.00	2.99	0.00	5.41	9.94	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	चतु
128.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	2.04
केतु	--	--	पंच	--	--	--	तृती	सप्त	--	--	--	--
308.75	0.00	0.00	2.44	0.00	0.00	0.00	2.99	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	सप्त	--	पंच	--	--	--	--	युति	--
287.98	0.00	0.00	0.00	9.46	0.00	2.29	0.00	0.00	0.00	0.00	4.46	0.00
नेप	--	--	--	सप्त	तृती	--	चतु	--	--	युति	--	--
277.39	0.00	0.00	0.00	7.13	1.90	0.00	2.89	0.00	0.00	4.46	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	--	--	सप्त	--	--	चतु	--	तृती	--
221.88	0.00	9.41	0.00	0.00	0.00	6.07	0.00	0.00	2.04	0.00	1.15	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	313.34	346.01	18.69	51.36	78.69	106.01	133.34	166.01	198.69	231.36	258.69	286.01
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
80.58	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80	0.00	0.00	1.10	2.64	0.34	9.80	0.00
चंद्र	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
225.18	2.66	0.00	0.00	7.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00	2.93
मंगल	--	--	--	--	युति	नवां	--	4था	--	--	सप्त	8वां
66.39	0.00	0.00	0.00	0.00	2.79	0.83	0.00	5.33	0.00	0.00	2.79	5.33
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त
104.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.92	0.00	2.85	1.58	0.00	0.00	9.92
गुरु	--	युति	अष्ट	--	--	5वां	--	सप्त	--	--	--	--
334.02	0.00	3.09	0.87	0.00	0.00	3.09	0.00	3.09	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--
50.66	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	1.04	0.00	9.97	0.00	0.00
शनि	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा
8.44	0.00	0.00	4.77	0.00	4.77	0.00	0.00	0.00	4.77	0.00	0.00	7.02
राहु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
128.75	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
308.75	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति
287.98	0.00	2.61	2.95	1.90	0.44	9.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.79
नेप	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
277.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.20
प्लूटो	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
221.88	2.79	1.41	0.00	5.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.46	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	313.34	354.17	26.00	51.36	74.69	100.21	133.34	174.17	206.00	231.36	254.69	280.21
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
80.58	0.00	0.00	0.00	0.00	8.16	0.00	0.00	1.77	0.46	0.34	8.16	0.00
चंद्र	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
225.18	2.66	0.00	0.00	7.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00	0.80
मंगल	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	8वां
66.39	0.00	0.00	0.00	0.00	6.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.45	9.21
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	षष्ठ	सप्त
104.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.98	8.86
गुरु	--	--	--	--	--	5वां	--	--	9वां	--	--	--
334.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00	0.00	6.68	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--
50.66	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	1.82	0.00	9.97	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	--	3रा	चतु	--	सप्त	--	--	--	10वा
8.44	0.00	0.76	0.00	0.00	7.93	2.68	0.00	0.76	0.00	0.00	0.00	9.83
राहु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--
128.75	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.87	0.00	0.00	0.00	0.04	0.00
केतु	युति	अष्ट	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
308.75	8.87	0.79	0.00	0.00	0.04	0.00	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
287.98	0.00	0.00	0.00	1.90	0.00	6.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.87
नेप	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
277.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.57
प्लूटो	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
221.88	2.79	0.00	0.00	5.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.46	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

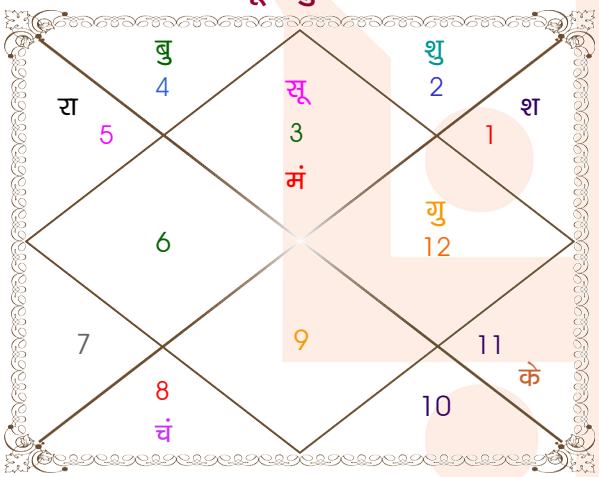

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

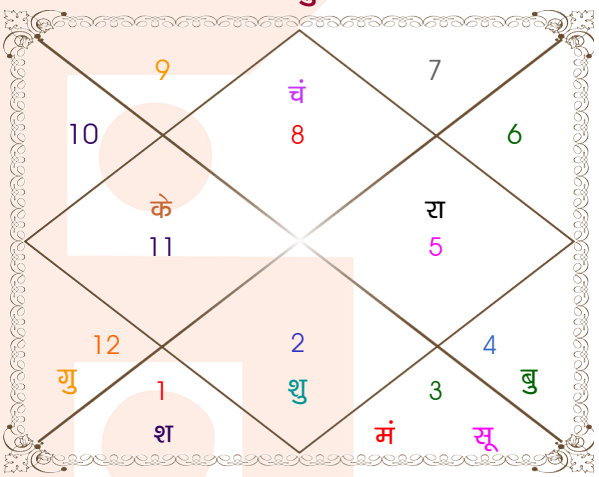

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

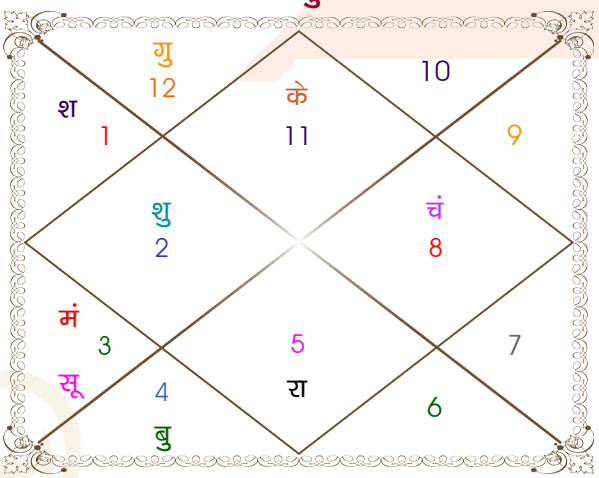

देह विचारः

होरा कुंडली

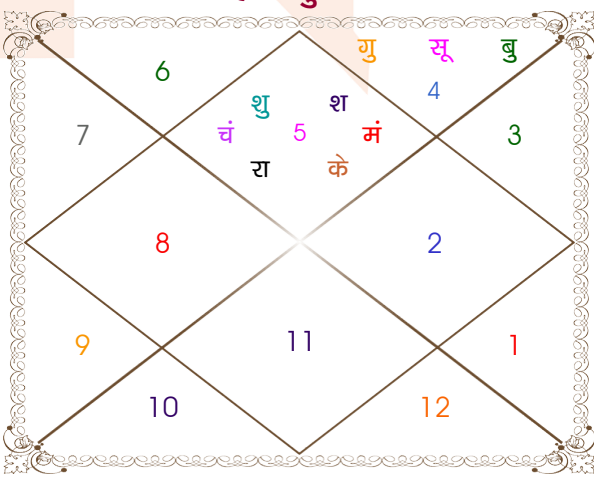

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

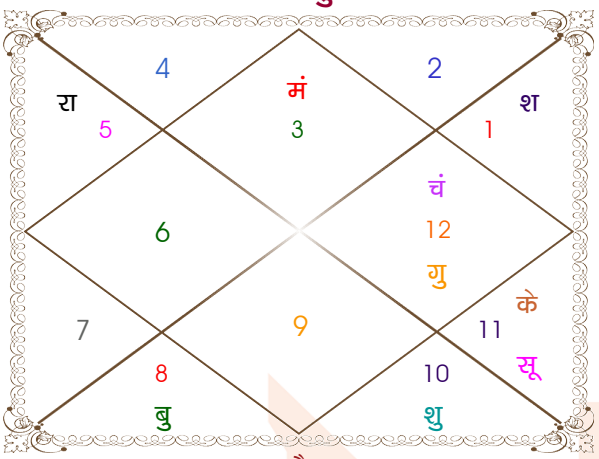

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

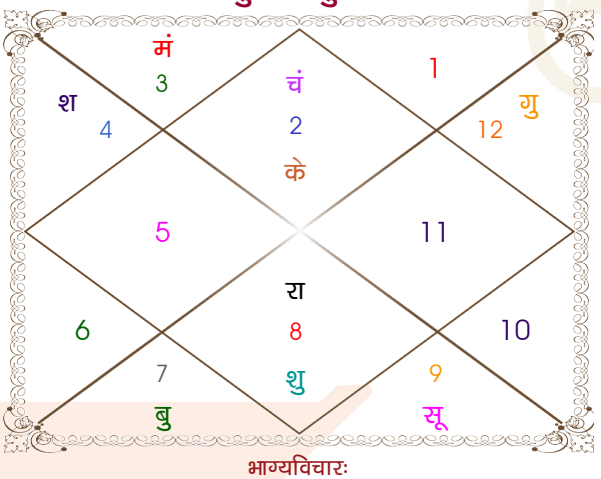

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

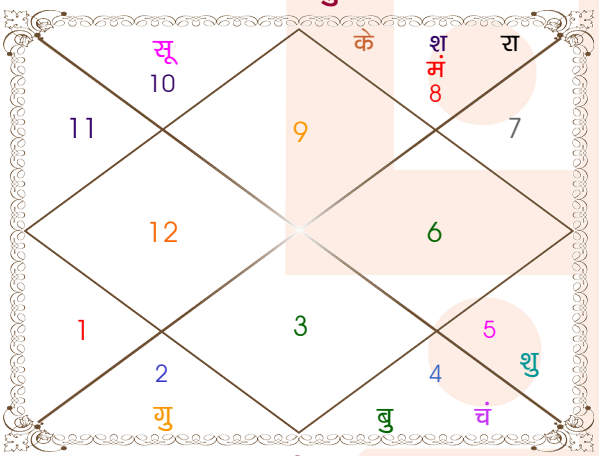

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

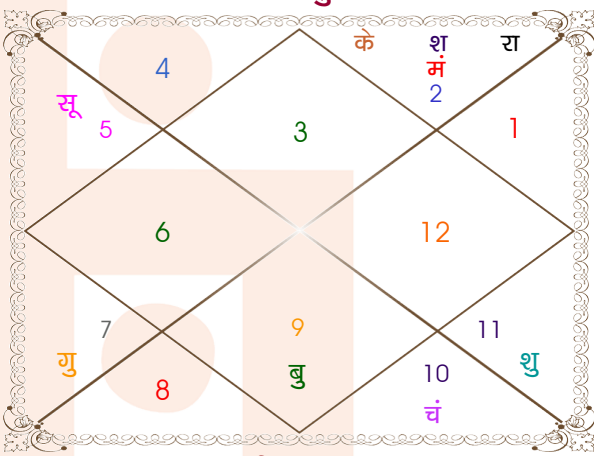

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

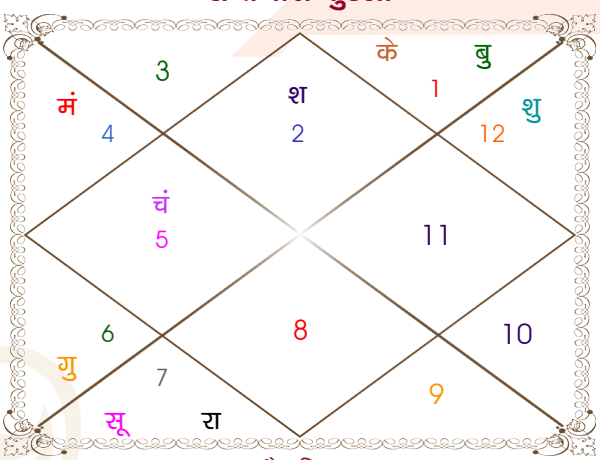

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

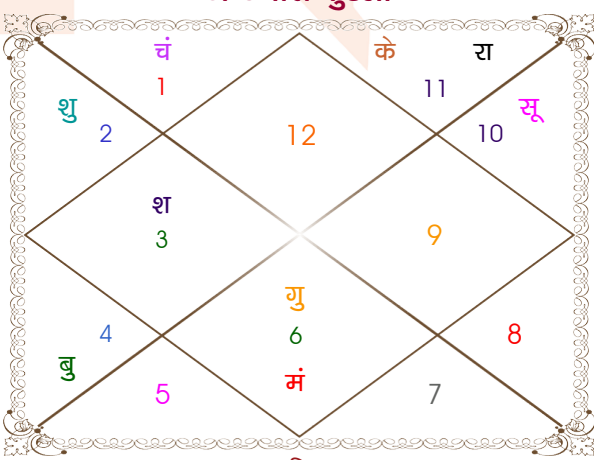

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

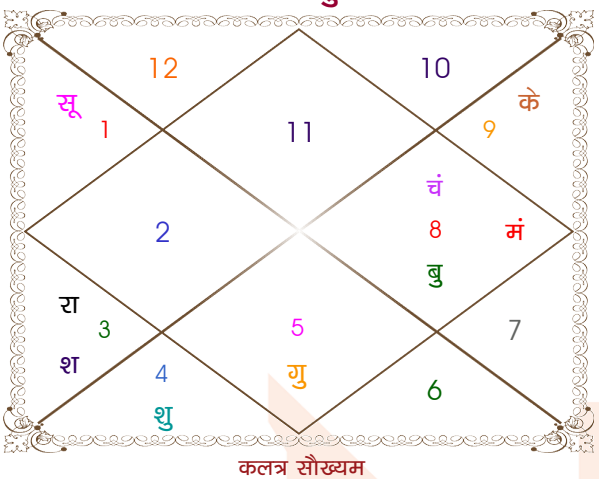

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

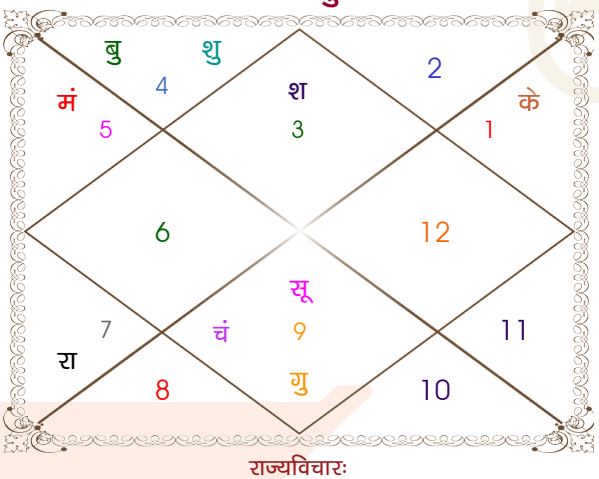

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

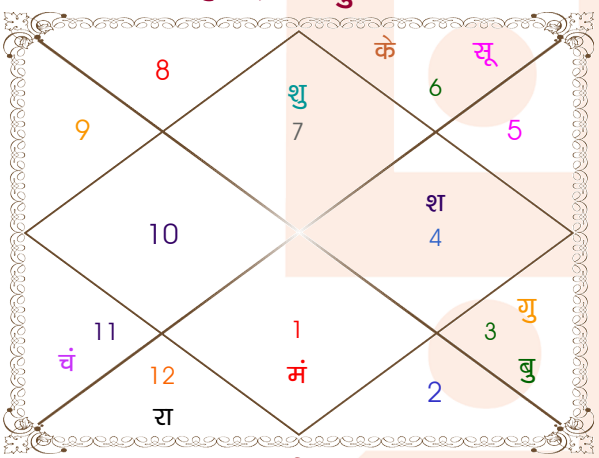

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

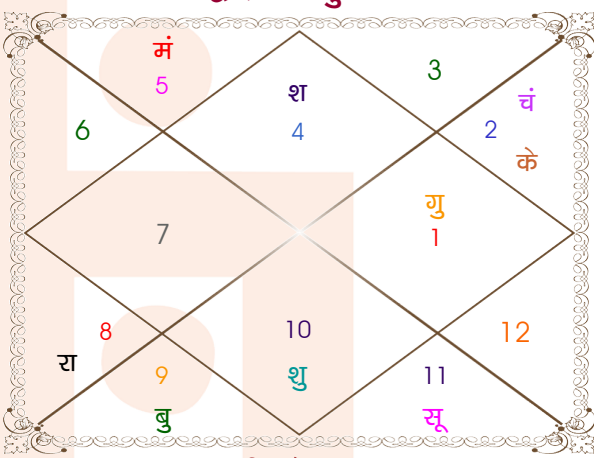

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

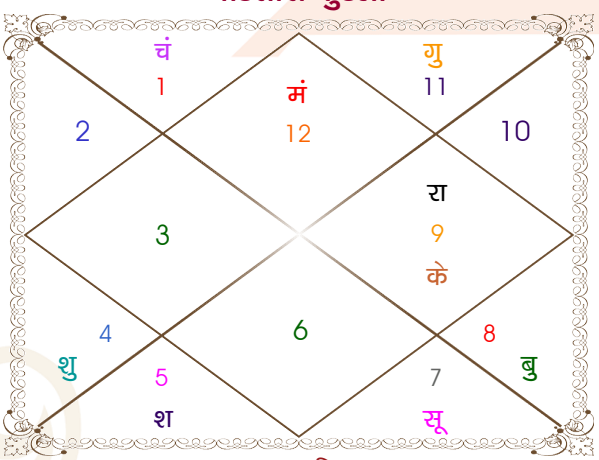

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

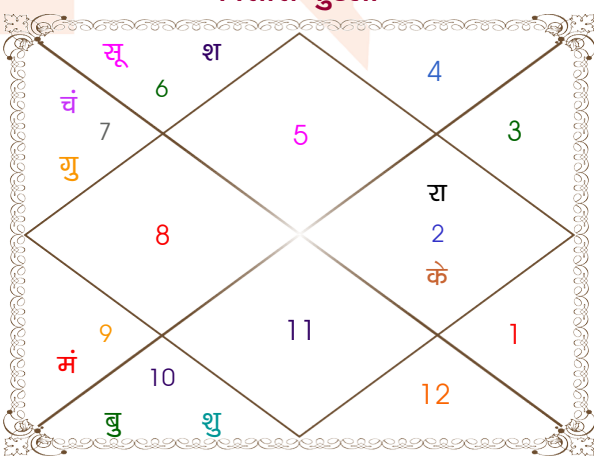

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

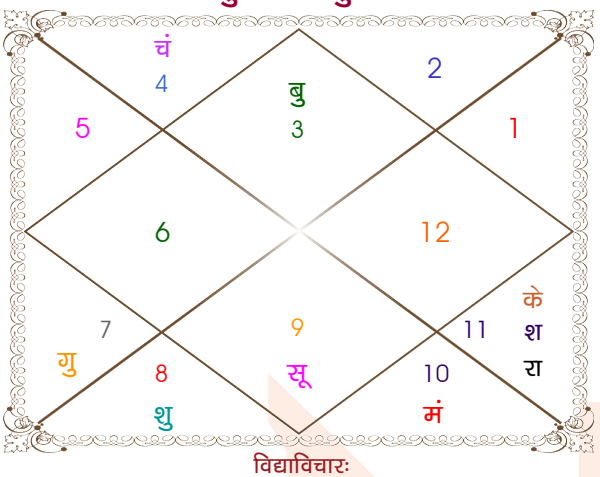

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

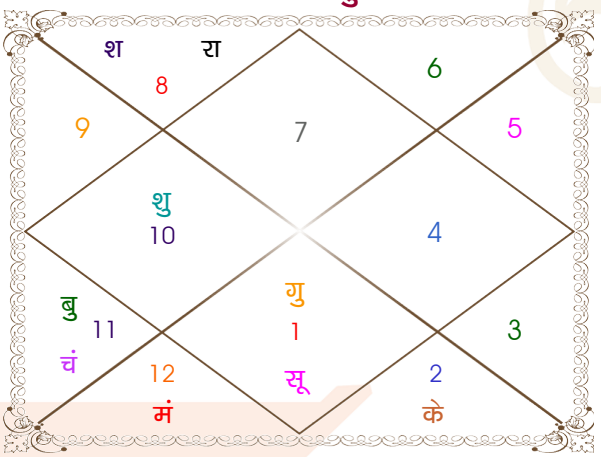

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

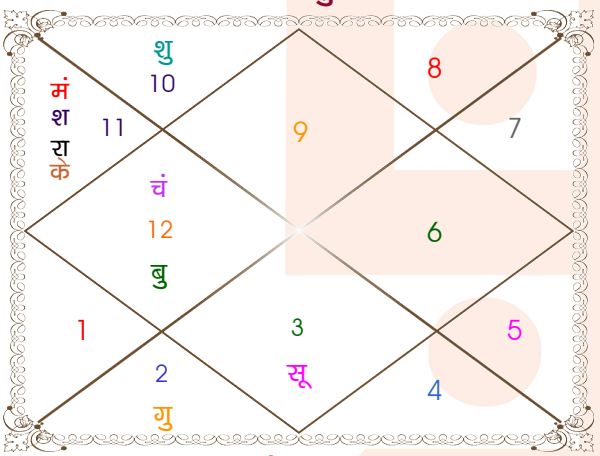

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

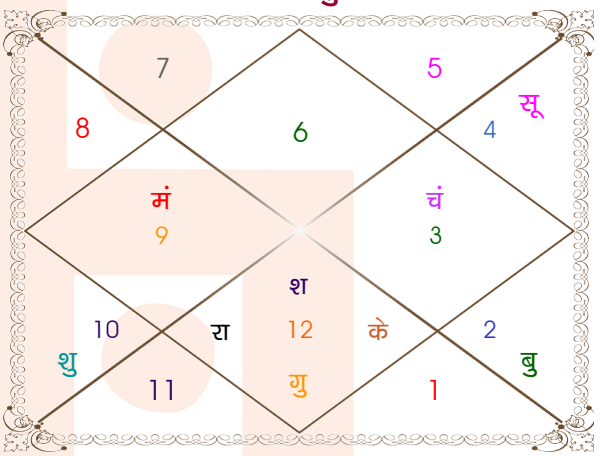

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

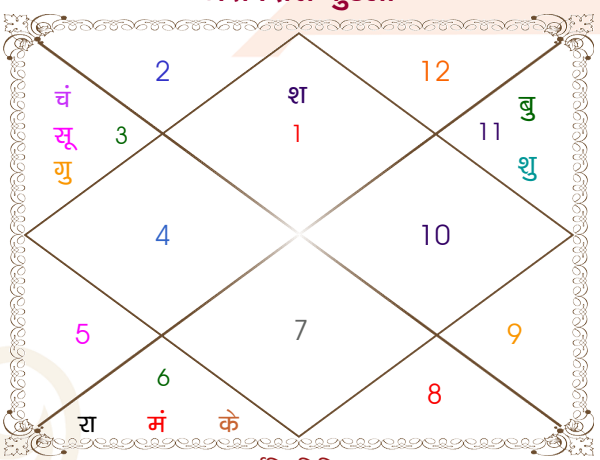

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

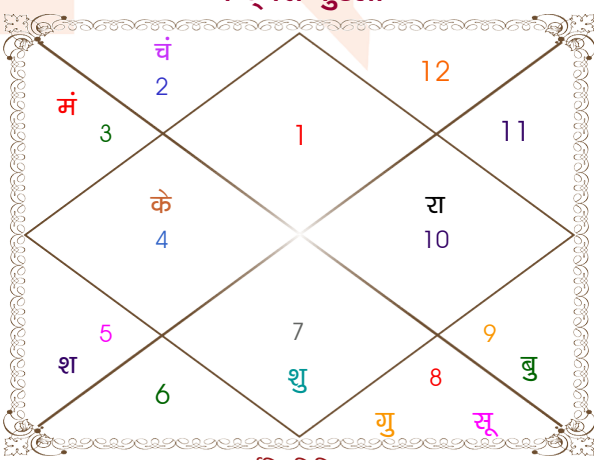

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कुंभ	मिथु	वृश्चि	मिथु	कर्क	मीन	वृष	मेष	सिंह	कुंभ
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मिथु	कुंभ	मीन	मिथु	वृश्चि	मीन	मक	मेष	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	वृष	धनु	वृष	मिथु	तुला	मीन	वृश्चि	कर्क	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	वृष	तुला	सिंह	कर्क	मेष	कन्या	मीन	वृष	तुला	मेष
नवमांश	कुंभ	मेष	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	सिंह	कर्क	मिथु	मिथु	धनु
दशमांश	मिथु	धनु	धनु	सिंह	कर्क	धनु	कर्क	मिथु	तुला	मेष
द्वादशांश	कर्क	कुंभ	वृष	सिंह	धनु	मेष	मक	कर्क	वृश्चि	वृष
षोडशांश	मीन	तुला	मेष	मीन	वृश्चि	कुंभ	कर्क	सिंह	धनु	धनु
विंशांश	सिंह	कन्या	तुला	धनु	मक	तुला	मक	कन्या	वृष	वृष
चतुर्विंशांश	मिथु	धनु	कर्क	मक	मिथु	तुला	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	तुला	मेष	कुंभ	मीन	कुंभ	मेष	मक	वृश्चि	वृश्चि	वृष
त्रिंशांश	धनु	मिथु	मीन	कुंभ	मीन	वृष	मक	कुंभ	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	कन्या	कर्क	मिथु	धनु	वृष	मीन	मक	मीन	मीन	मीन
अक्षवेदांश	मेष	मिथु	मिथु	कन्या	कुंभ	मिथु	कुंभ	मेष	कन्या	कन्या
षष्ट्यंश	मेष	वृश्चि	वृष	मिथु	धनु	वृश्चि	तुला	सिंह	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
शुक्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
शनि	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.75	7.30	12.75	9.80	17.80	14.55	12.00	11.25	11.55
सप्तवर्ग	11.50	7.68	12.50	10.30	15.98	14.40	12.80	12.13	11.43
दशवर्ग	11.73	7.45	11.73	8.80	16.20	15.05	12.18	11.35	10.98
षोडशवर्ग	11.98	7.70	13.28	10.58	16.45	14.55	12.43	11.10	11.85

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	सम	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	36	4	17	40	20	42	4
सप्तवर्गज बल	68	34	83	56	122	122	99
ओजयुग्मक बल	30	30	15	0	15	30	30
केन्द्र बल	30	60	30	15	30	60	15
द्रेष्काण बल	0	0	15	15	15	15	0
कुल स्थान बल	164	128	160	126	202	269	148
कुल दिग्बल	10	2	5	10	53	60	18
नतोन्नत बल	11	49	49	60	11	11	49
पक्ष बल	12	96	12	48	48	48	12
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	118	58	60	53	29	59	14
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	140	309	121	162	223	118	105
कुल चेष्टाबल	0	0	8	28	37	19	25
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	2	17	20	11	10	21	5
कुल षट्बल	376	507	331	362	558	529	310
रूप षट्बल	6.3	8.5	5.5	6.0	9.3	8.8	5.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.4	1.1	0.9	1.4	1.6	1.0
संबंधित पद	4	3	5	7	2	1	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	44.87	13.99	12.05	33.51	26.92	28.17	9.75
कष्ट फल	10.63	25.69	46.97	25.29	30.56	27.13	44.53

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	310	558	331	529	362	507	376	362	529	331	558	310
भावदिग्बल	60	40	10	0	20	40	30	10	20	30	50	20
भावदृष्टि बल	46	30	22	45	31	47	17	51	55	72	-6	32
कुल भाव बल	416	629	363	574	413	594	423	423	604	434	602	362
रूप भाव बल	6.9	10.5	6.1	9.6	6.9	9.9	7.1	7.1	10.1	7.2	10.0	6.0
संबंधित पद	9	1	11	5	10	4	7	8	2	6	3	12

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

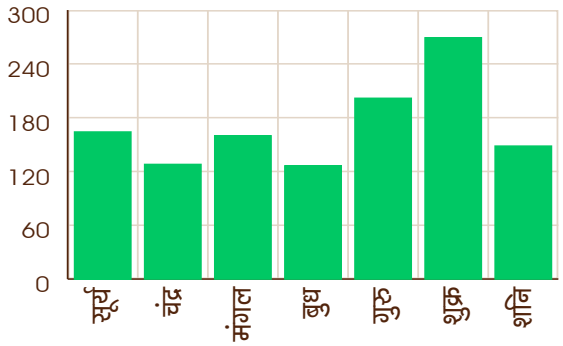

दिग्बल

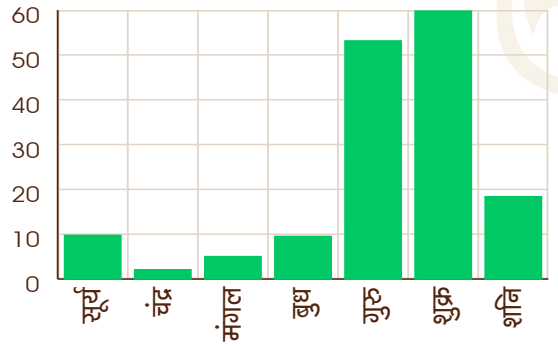

कालबल

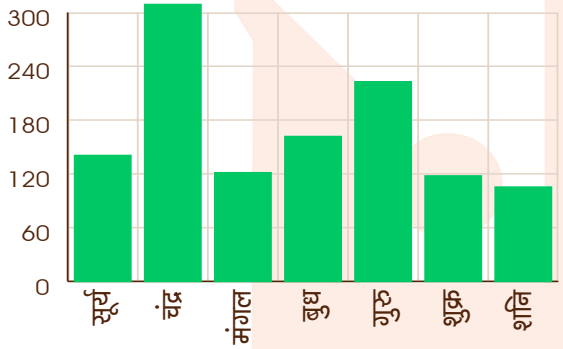

चेष्टाबल

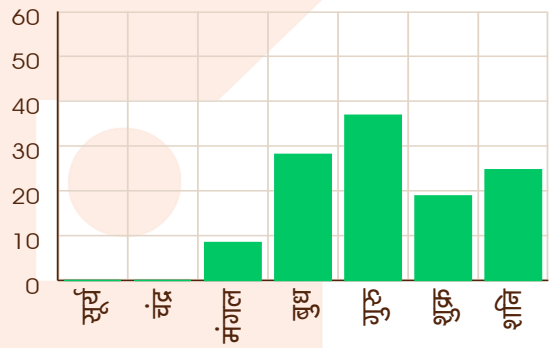

नैसर्गिक बल

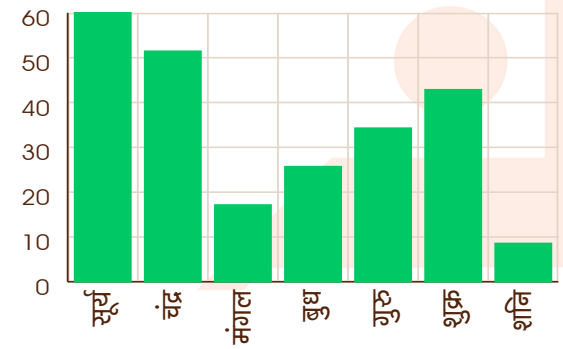

दृग्बल

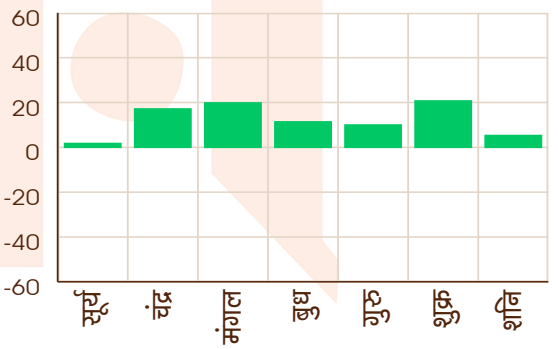

रूप षट्बल

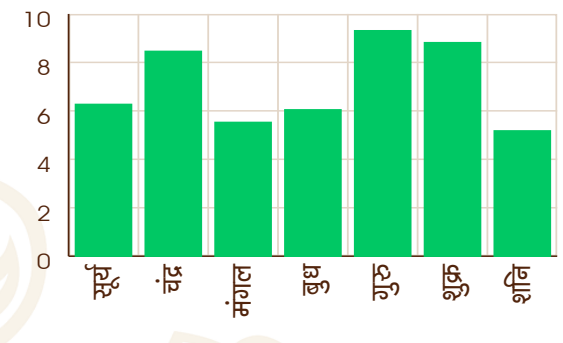

न्यूनतम षट्बल

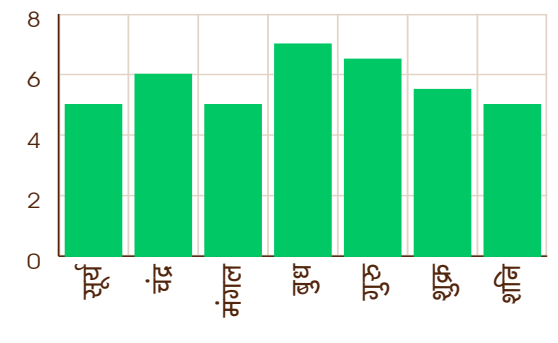

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

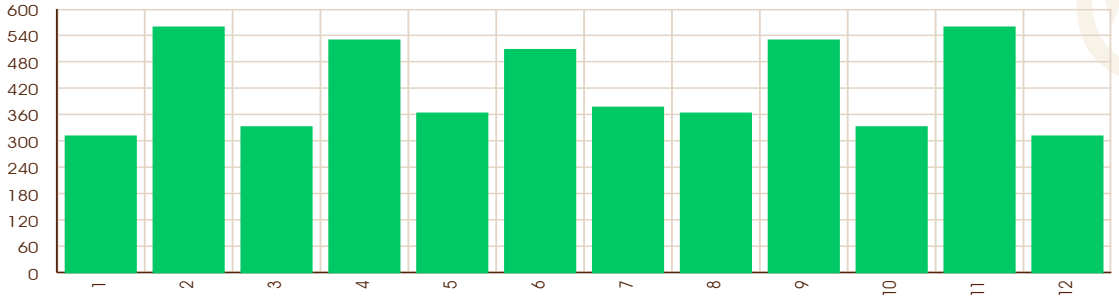

भावदिग्बल

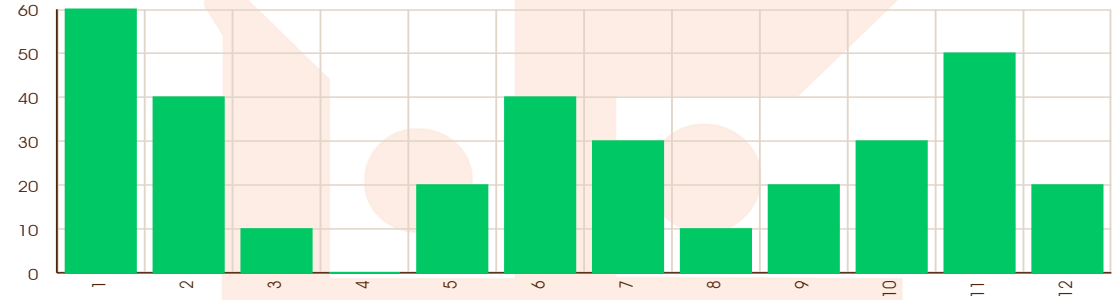

भावदृष्टि बल

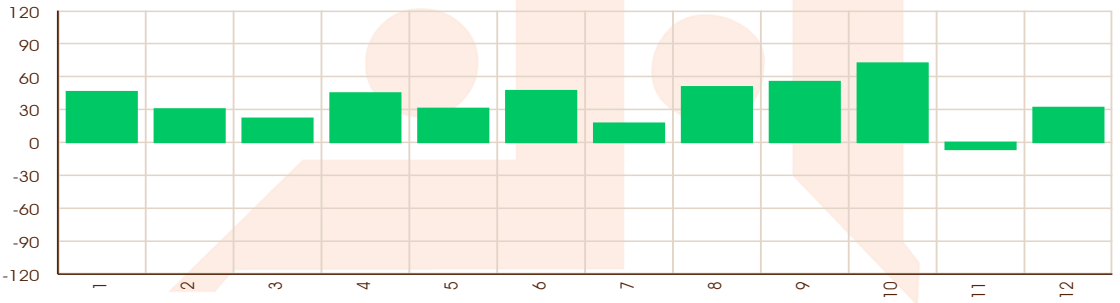

भाव बल

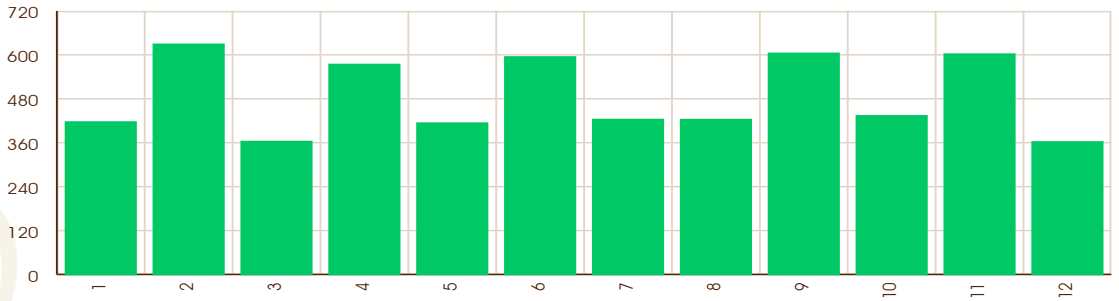

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

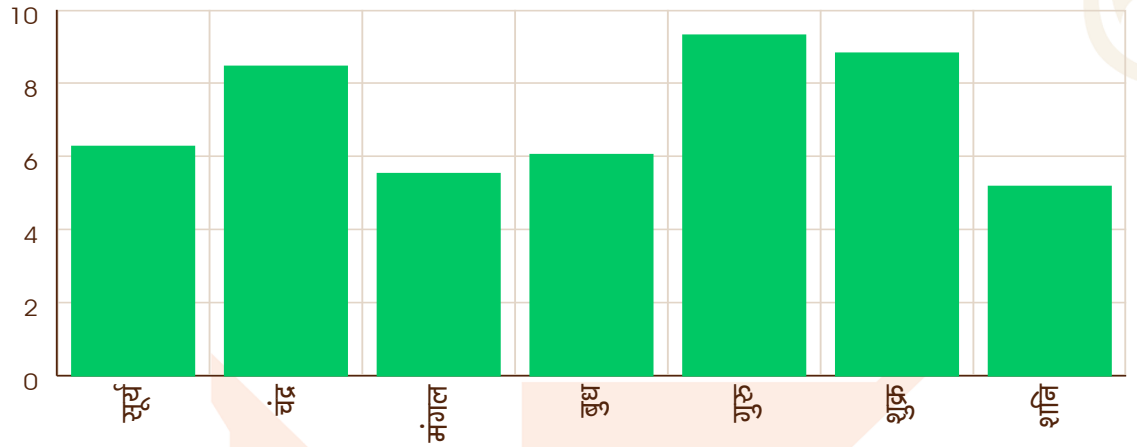

इष्ट - कष्ट फल

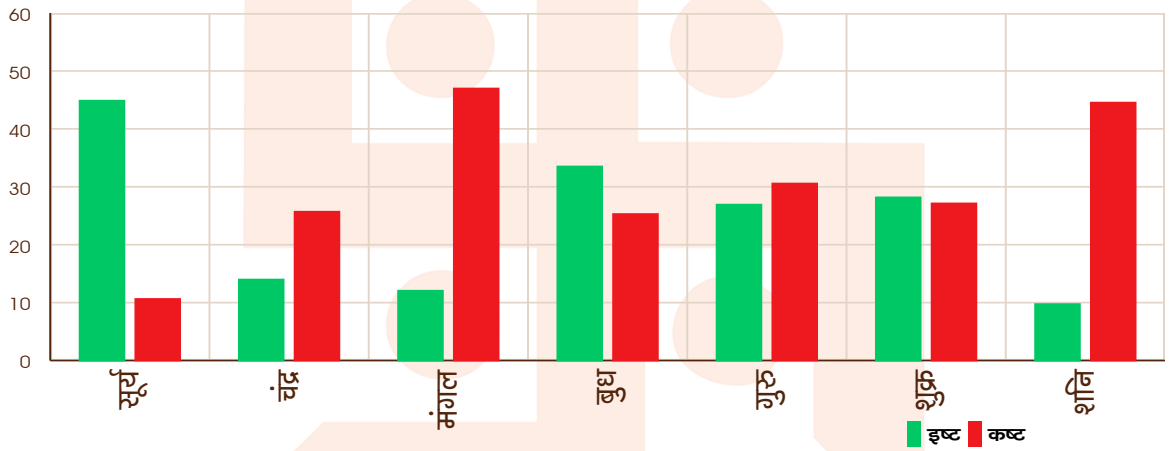

रूप भाव बल

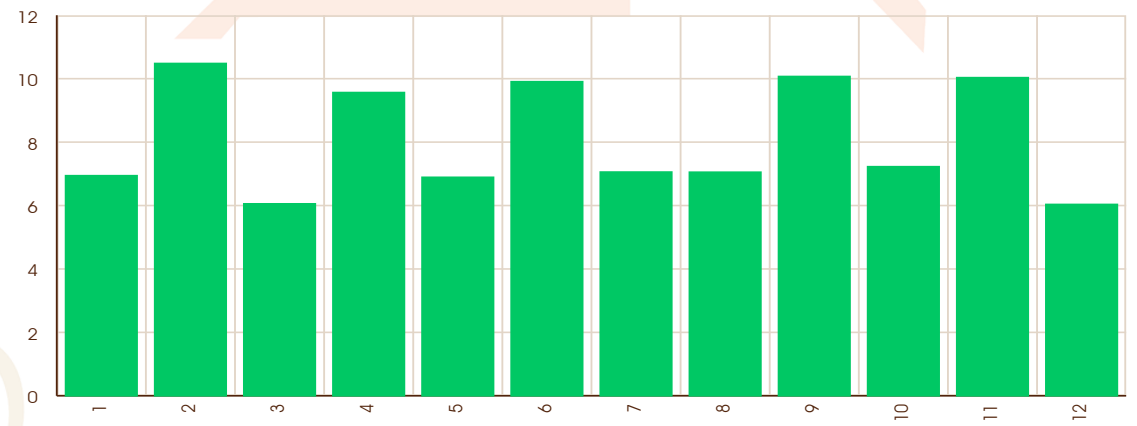

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कुंभ	13:20:16	--	--	शतभिषा	3	24
गुलिक	गु	कुंभ	05:11:26	--	मूल	धनिष्ठा	4	23
काल	का	मीन	01:33:57	--	--	पू०भाद्रपद	4	25
मृत्यु	मृ	मेष	23:03:14	--	--	भरणी	3	2
यमघंटक	यम	मिथु	03:09:00	--	--	मृगशिरा	3	5
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृष	14:19:13	--	--	रोहिणी	2	4
धूम	धू	वृश्चि	03:54:59	--	--	अनुराधा	1	17
व्यतिपात	व्य	सिंह	26:05:01	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
परिवेश	परि	कुंभ	26:05:01	--	--	पू०भाद्रपद	2	25
इन्द्रचाप	इ	वृष	03:54:59	--	--	कृतिका	3	3
उपकेतु	उप	वृष	20:34:59	--	--	रोहिणी	4	4

प्राणपद	:	वृश्चि	10:25:39	कारकाँश लग्न	:	कर्क	05:56:02
भाव लग्न	:	मीन	03:34:31	होरा लग्न	:	वृश्चि	16:34:03
घटी लग्न	:	धनु	25:32:39	वर्णद लग्न	:	तुला	00:05:41

उपग्रह कुंडली

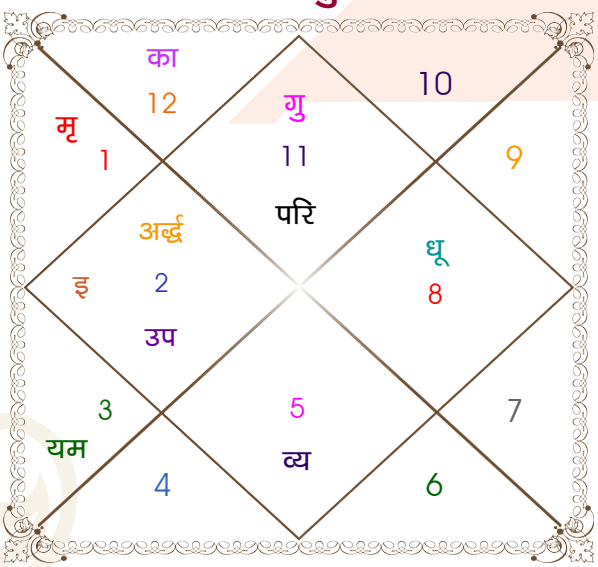

आरूढ़ कुंडली

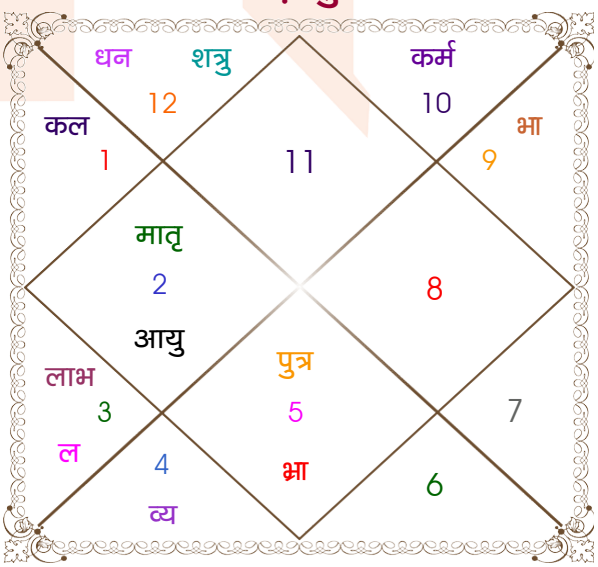

षन्नाडी चक्र

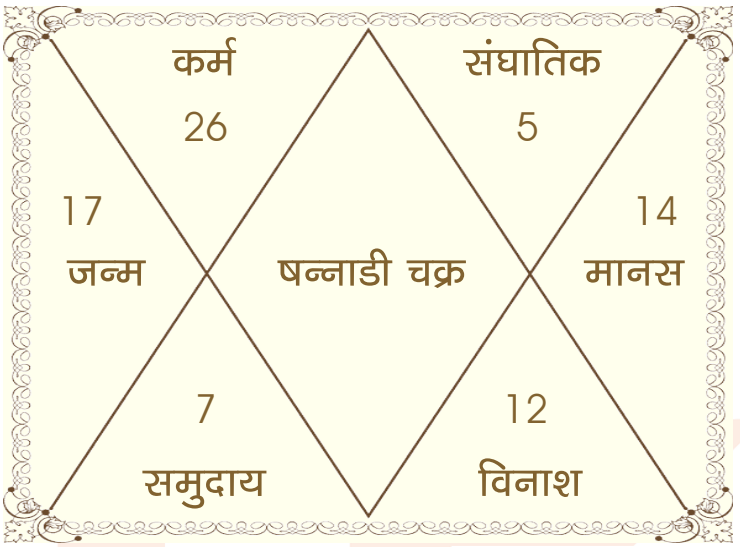

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	3	5	2	4	2	5	5	6	3	3	7	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	6	3	5	3	4	6	2	2	5	5	5	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
कुल	1	3	2	3	3	4	6	4	3	3	6	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
कुल	5	3	5	3	4	6	4	6	4	5	5	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
कुल	8	4	4	6	5	4	6	4	2	6	4	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	5	4	4	3	5	3	5	6	5	5	4	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	6	3	3	3	3	3	2	2	3	3	4	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	3	7	3	4	5	6	5	2	4	4	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	6	3	3	3	3	3	2	2	3	3	4	4	39
गुरु	4	4	6	5	4	6	4	2	6	4	3	8	56
मंगल	6	1	1	3	2	3	3	4	6	4	3	3	39
सूर्य	7	3	3	5	2	4	2	5	5	6	3	3	48
शुक्र	3	5	4	4	3	5	3	5	6	5	5	4	52
बुध	5	5	4	5	3	5	3	4	6	4	6	4	54
चंद्र	6	2	2	5	5	5	3	6	3	5	3	4	49
बिन्दु	37	23	23	30	22	31	20	28	35	31	27	30	337
रेखा	19	33	33	26	34	25	36	28	21	25	29	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	0	1	1	0	0	0	0	0	0	2	2	9
गुरु	0	0	3	3	0	2	1	0	2	0	0	6	17
मंगल	4	0	0	0	0	2	2	1	4	3	2	0	18
सूर्य	5	0	1	2	0	1	0	2	3	3	1	0	18
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	3	0	2	0	7
बुध	2	1	1	1	0	1	0	0	3	0	3	0	12
चंद्र	3	0	0	1	2	3	1	2	0	3	1	0	16
रेखा	17	1	7	8	2	9	4	6	15	9	11	8	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	0	1	1	0	0	0	0	0	0	2	2	9
गुरु	0	0	3	3	0	0	1	0	0	0	0	6	13
मंगल	4	0	0	0	0	2	2	1	4	1	2	0	16
सूर्य	5	0	1	2	0	0	0	2	3	2	1	0	16
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	3	0	2	0	7
बुध	2	1	1	1	0	0	0	0	3	0	3	0	11
चंद्र	3	0	0	1	2	3	1	2	0	2	1	0	15
रेखा	17	1	7	8	2	5	4	6	13	5	11	8	87

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	115	104	123	96	115	65	79
ग्रह पिंड	58	30	25	35	114	18	53
शोध्य पिंड	173	134	148	131	229	83	132

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

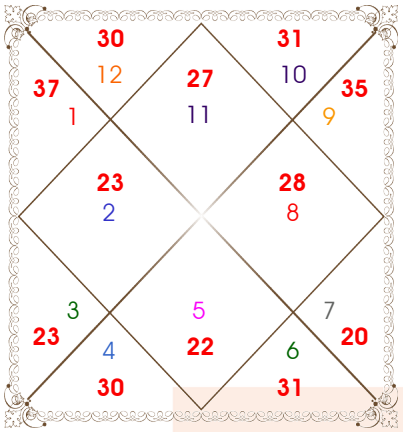

सूर्य का अष्टकवर्ग

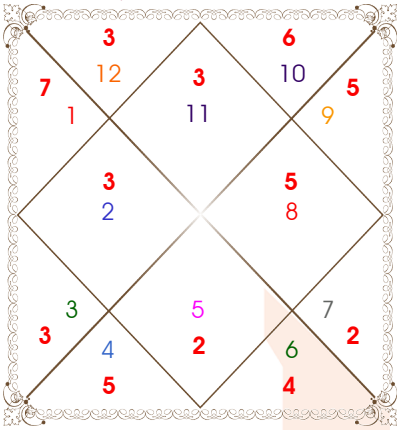

चंद्र का अष्टकवर्ग

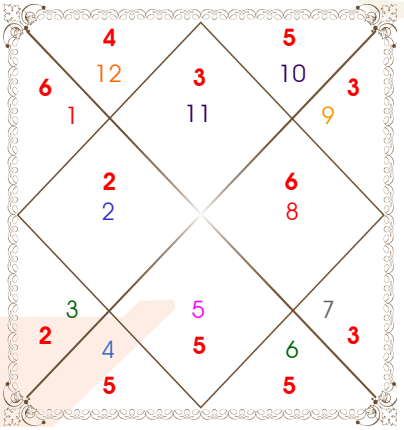

मंगल का अष्टकवर्ग

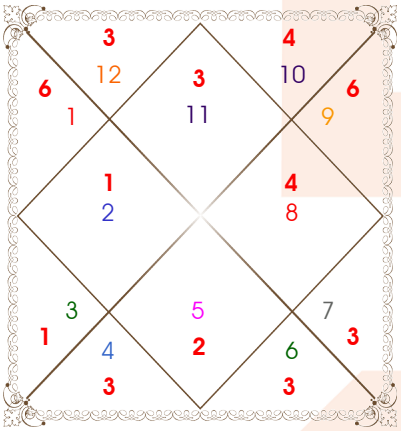

बुध का अष्टकवर्ग

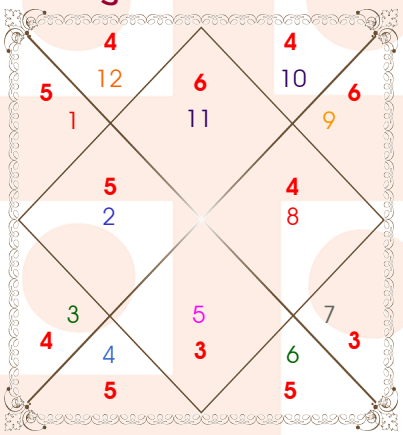

गुरू का अष्टकवर्ग

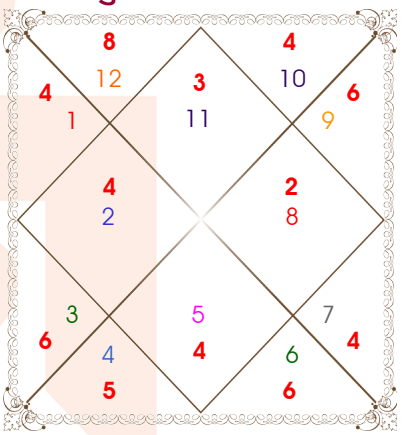

शुक्र का अष्टकवर्ग

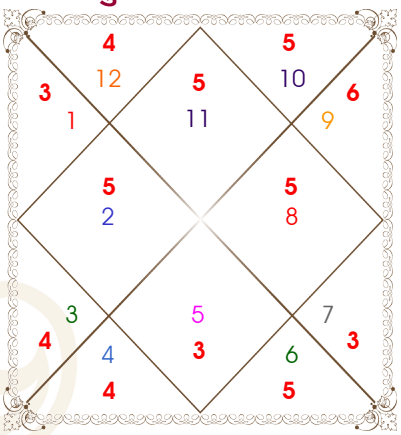

शनि का अष्टकवर्ग

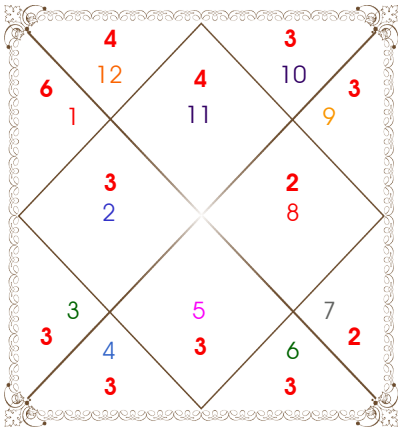

लग्न का अष्टकवर्ग

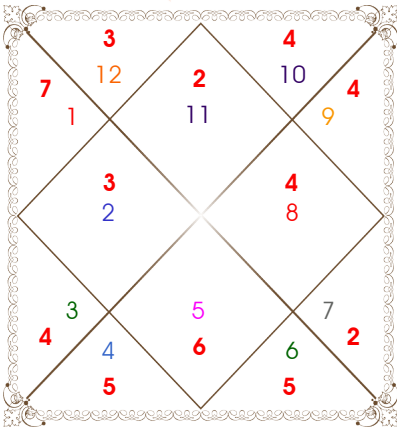

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

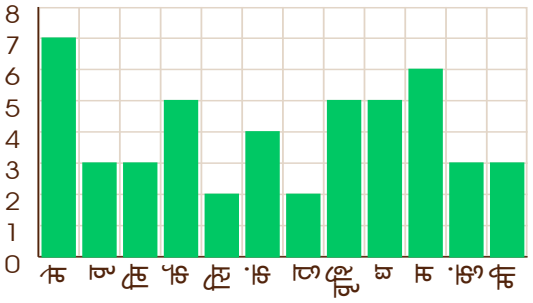

चन्द्र

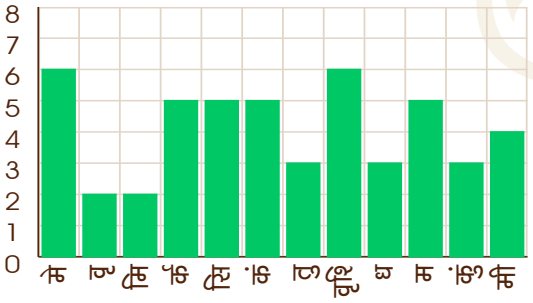

मंगल

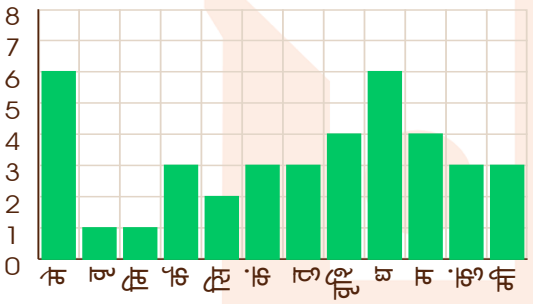

बुध

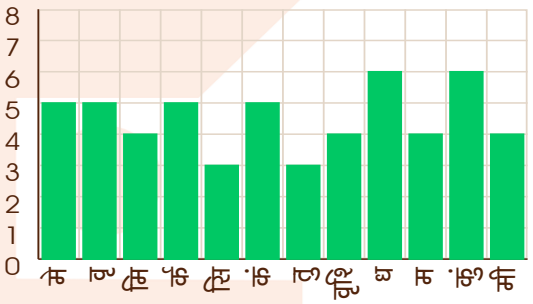

गुरु

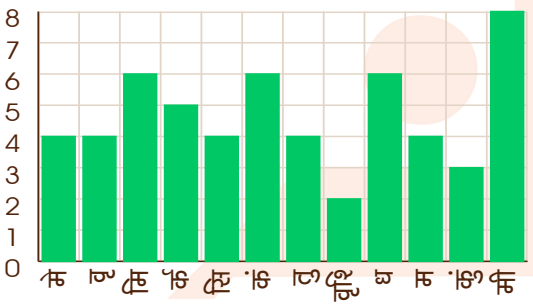

शुक्र

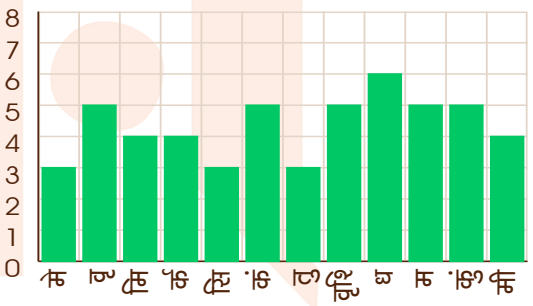

शनि

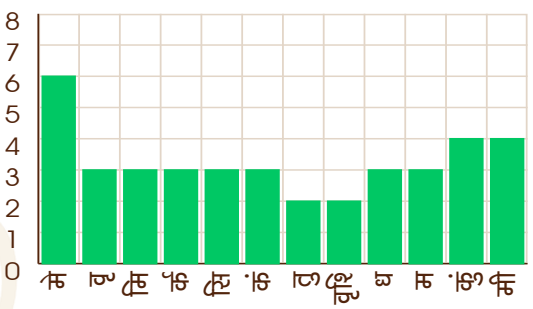

लग्न

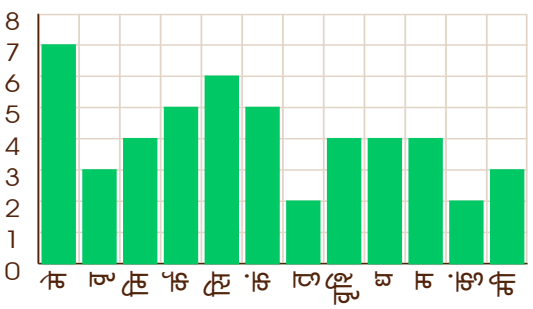

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

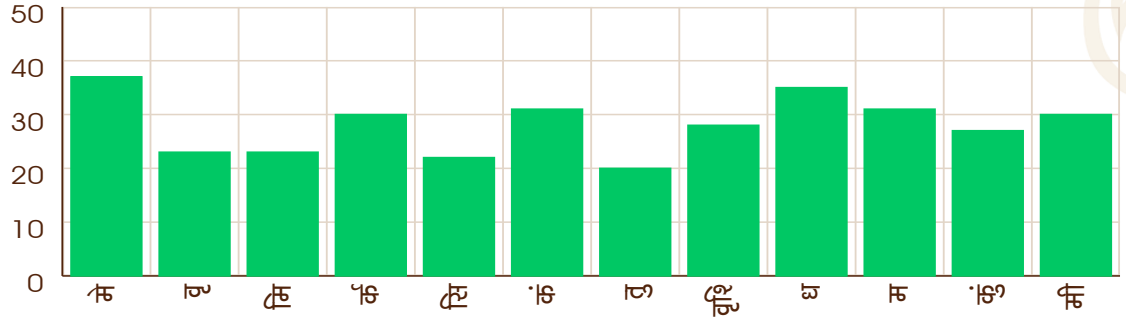

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

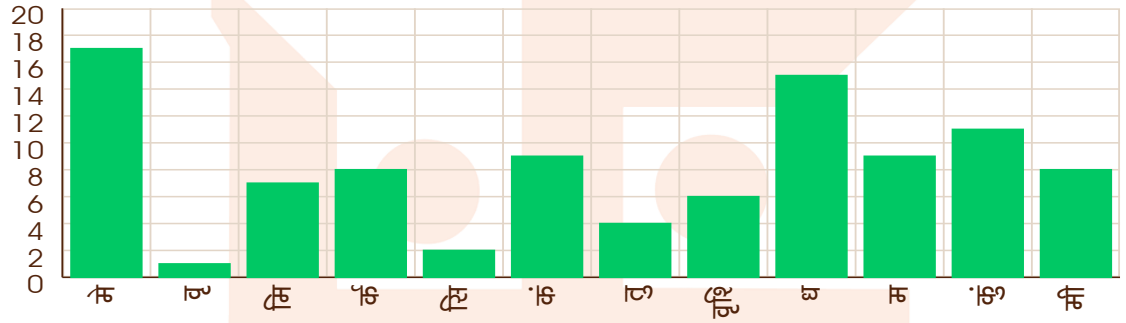

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

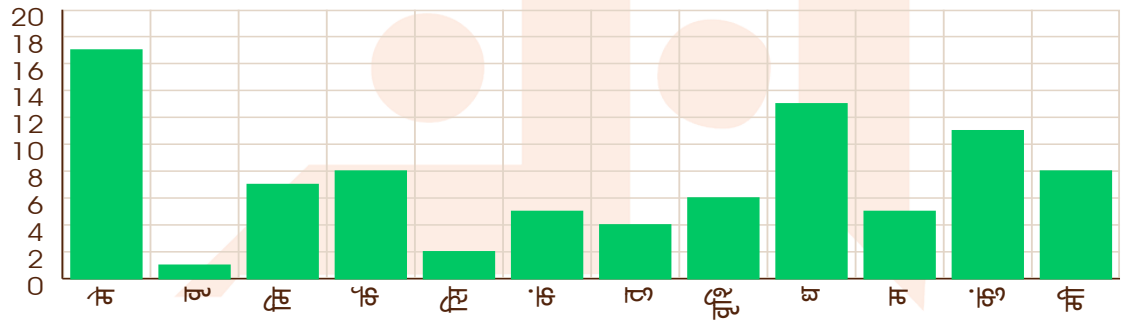

शोध्य पिंड

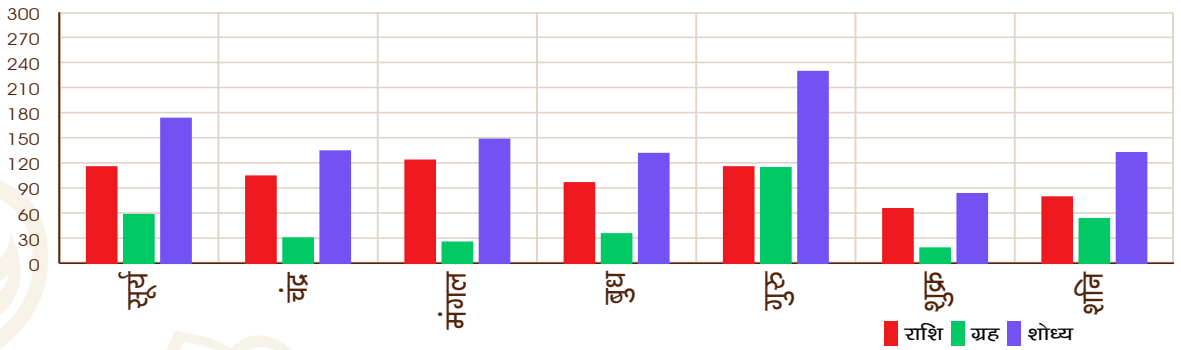

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 2 वर्ष 1 मास 14 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
06/07/1998		20/08/2000		20/08/2017		20/08/2024		20/08/2044	
20/08/2000		20/08/2017		20/08/2024		20/08/2044		20/08/2050	
	00/00/0000	बुध	17/01/2003	केतु	16/01/2018	शुक्र	20/12/2027	सूर्य	07/12/2044
	00/00/0000	केतु	14/01/2004	शुक्र	18/03/2019	सूर्य	20/12/2028	चंद्र	08/06/2045
	00/00/0000	शुक्र	14/11/2006	सूर्य	24/07/2019	चंद्र	20/08/2030	मंगल	14/10/2045
	00/00/0000	सूर्य	20/09/2007	चंद्र	22/02/2020	मंगल	21/10/2031	राहु	08/09/2046
	00/00/0000	चंद्र	19/02/2009	मंगल	20/07/2020	राहु	20/10/2034	गुरु	27/06/2047
	00/00/0000	मंगल	16/02/2010	राहु	08/08/2021	गुरु	20/06/2037	शनि	08/06/2048
	00/00/0000	राहु	04/09/2012	गुरु	15/07/2022	शनि	20/08/2040	बुध	14/04/2049
	06/07/1998	गुरु	11/12/2014	शनि	24/08/2023	बुध	21/06/2043	केतु	20/08/2049
गुरु	20/08/2000	शनि	20/08/2017	बुध	20/08/2024	केतु	20/08/2044	शुक्र	20/08/2050

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
20/08/2050		20/08/2060		21/08/2067		20/08/2085		21/08/2101	
20/08/2060		21/08/2067		20/08/2085		21/08/2101		07/07/2118	
चंद्र	21/06/2051	मंगल	16/01/2061	राहु	03/05/2070	गुरु	08/10/2087	शनि	24/08/2104
मंगल	20/01/2052	राहु	04/02/2062	गुरु	25/09/2072	शनि	21/04/2090	बुध	04/05/2107
राहु	21/07/2053	गुरु	10/01/2063	शनि	02/08/2075	बुध	27/07/2092	केतु	12/06/2108
गुरु	20/11/2054	शनि	19/02/2064	बुध	19/02/2078	केतु	02/07/2093	शुक्र	13/08/2111
शनि	20/06/2056	बुध	15/02/2065	केतु	09/03/2079	शुक्र	02/03/2096	सूर्य	25/07/2112
बुध	19/11/2057	केतु	15/07/2065	शुक्र	09/03/2082	सूर्य	20/12/2096	चंद्र	23/02/2114
केतु	21/06/2058	शुक्र	14/09/2066	सूर्य	01/02/2083	चंद्र	21/04/2098	मंगल	04/04/2115
शुक्र	19/02/2060	सूर्य	20/01/2067	चंद्र	02/08/2084	मंगल	28/03/2099	राहु	08/02/2118
सूर्य	20/08/2060	चंद्र	21/08/2067	मंगल	20/08/2085	राहु	21/08/2101	गुरु	07/07/2118

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 2 वर्ष 1 मा 7 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
06/07/1998		20/08/2000		17/01/2003		14/01/2004		14/11/2006	
20/08/2000		17/01/2003		14/01/2004		14/11/2006		20/09/2007	
	06/07/1998	बुध	23/12/2000	केतु	07/02/2003	शुक्र	04/07/2004	सूर्य	29/11/2006
शनि	03/11/1998	केतु	12/02/2001	शुक्र	08/04/2003	सूर्य	25/08/2004	चंद्र	25/12/2006
बुध	15/03/1999	शुक्र	08/07/2001	सूर्य	26/04/2003	चंद्र	19/11/2004	मंगल	12/01/2007
केतु	08/05/1999	सूर्य	21/08/2001	चंद्र	26/05/2003	मंगल	19/01/2005	राहु	28/02/2007
शुक्र	09/10/1999	चंद्र	03/11/2001	मंगल	16/06/2003	राहु	23/06/2005	गुरु	10/04/2007
सूर्य	24/11/1999	मंगल	24/12/2001	राहु	10/08/2003	गुरु	08/11/2005	शनि	29/05/2007
चंद्र	09/02/2000	राहु	05/05/2002	गुरु	27/09/2003	शनि	21/04/2006	बुध	12/07/2007
मंगल	03/04/2000	गुरु	30/08/2002	शनि	23/11/2003	बुध	14/09/2006	केतु	30/07/2007
राहु	20/08/2000	शनि	17/01/2003	बुध	14/01/2004	केतु	14/11/2006	शुक्र	20/09/2007

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
20/09/2007		19/02/2009		16/02/2010		04/09/2012		11/12/2014	
19/02/2009		16/02/2010		04/09/2012		11/12/2014		20/08/2017	
चंद्र	02/11/2007	मंगल	12/03/2009	राहु	05/07/2010	गुरु	24/12/2012	शनि	16/05/2015
मंगल	02/12/2007	राहु	05/05/2009	गुरु	07/11/2010	शनि	04/05/2013	बुध	02/10/2015
राहु	18/02/2008	गुरु	22/06/2009	शनि	03/04/2011	बुध	29/08/2013	केतु	28/11/2015
गुरु	27/04/2008	शनि	19/08/2009	बुध	13/08/2011	केतु	16/10/2013	शुक्र	10/05/2016
शनि	18/07/2008	बुध	09/10/2009	केतु	06/10/2011	शुक्र	03/03/2014	सूर्य	28/06/2016
बुध	29/09/2008	केतु	30/10/2009	शुक्र	10/03/2012	सूर्य	14/04/2014	चंद्र	18/09/2016
केतु	29/10/2008	शुक्र	29/12/2009	सूर्य	25/04/2012	चंद्र	22/06/2014	मंगल	15/11/2016
शुक्र	24/01/2009	सूर्य	17/01/2010	चंद्र	12/07/2012	मंगल	09/08/2014	राहु	11/04/2017
सूर्य	19/02/2009	चंद्र	16/02/2010	मंगल	04/09/2012	राहु	11/12/2014	गुरु	20/08/2017

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
20/08/2017		16/01/2018		18/03/2019		24/07/2019		22/02/2020	
16/01/2018		18/03/2019		24/07/2019		22/02/2020		20/07/2020	
केतु	29/08/2017	शुक्र	28/03/2018	सूर्य	25/03/2019	चंद्र	11/08/2019	मंगल	02/03/2020
शुक्र	23/09/2017	सूर्य	19/04/2018	चंद्र	04/04/2019	मंगल	23/08/2019	राहु	24/03/2020
सूर्य	30/09/2017	चंद्र	24/05/2018	मंगल	12/04/2019	राहु	24/09/2019	गुरु	13/04/2020
चंद्र	13/10/2017	मंगल	18/06/2018	राहु	01/05/2019	गुरु	23/10/2019	शनि	07/05/2020
मंगल	21/10/2017	राहु	21/08/2018	गुरु	18/05/2019	शनि	26/11/2019	बुध	28/05/2020
राहु	13/11/2017	गुरु	17/10/2018	शनि	07/06/2019	बुध	26/12/2019	केतु	06/06/2020
गुरु	03/12/2017	शनि	23/12/2018	बुध	25/06/2019	केतु	07/01/2020	शुक्र	01/07/2020
शनि	26/12/2017	बुध	22/02/2019	केतु	03/07/2019	शुक्र	12/02/2020	सूर्य	08/07/2020
बुध	16/01/2018	केतु	18/03/2019	शुक्र	24/07/2019	सूर्य	22/02/2020	चंद्र	20/07/2020

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
20/07/2020		08/08/2021		15/07/2022		24/08/2023		20/08/2024	
08/08/2021		15/07/2022		24/08/2023		20/08/2024		20/12/2027	
राहु	16/09/2020	गुरु	22/09/2021	शनि	17/09/2022	बुध	14/10/2023	शुक्र	11/03/2025
गुरु	06/11/2020	शनि	15/11/2021	बुध	13/11/2022	केतु	04/11/2023	सूर्य	11/05/2025
शनि	06/01/2021	बुध	03/01/2022	केतु	07/12/2022	शुक्र	04/01/2024	चंद्र	20/08/2025
बुध	01/03/2021	केतु	23/01/2022	शुक्र	12/02/2023	सूर्य	22/01/2024	मंगल	30/10/2025
केतु	24/03/2021	शुक्र	20/03/2022	सूर्य	05/03/2023	चंद्र	21/02/2024	राहु	01/05/2026
शुक्र	26/05/2021	सूर्य	06/04/2022	चंद्र	07/04/2023	मंगल	13/03/2024	गुरु	10/10/2026
सूर्य	15/06/2021	चंद्र	05/05/2022	मंगल	01/05/2023	राहु	06/05/2024	शनि	21/04/2027
चंद्र	17/07/2021	मंगल	25/05/2022	राहु	01/07/2023	गुरु	24/06/2024	बुध	10/10/2027
मंगल	08/08/2021	राहु	15/07/2022	गुरु	24/08/2023	शनि	20/08/2024	केतु	20/12/2027

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
20/12/2027		20/12/2028		20/08/2030		21/10/2031		20/10/2034	
20/12/2028		20/08/2030		21/10/2031		20/10/2034		20/06/2037	
सूर्य	08/01/2028	चंद्र	08/02/2029	मंगल	14/09/2030	राहु	02/04/2032	गुरु	27/02/2035
चंद्र	07/02/2028	मंगल	16/03/2029	राहु	17/11/2030	गुरु	26/08/2032	शनि	31/07/2035
मंगल	28/02/2028	राहु	15/06/2029	गुरु	13/01/2031	शनि	15/02/2033	बुध	16/12/2035
राहु	23/04/2028	गुरु	04/09/2029	शनि	21/03/2031	बुध	21/07/2033	केतु	11/02/2036
गुरु	11/06/2028	शनि	10/12/2029	बुध	21/05/2031	केतु	23/09/2033	शुक्र	22/07/2036
शनि	08/08/2028	बुध	06/03/2030	केतु	15/06/2031	शुक्र	24/03/2034	सूर्य	09/09/2036
बुध	28/09/2028	केतु	11/04/2030	शुक्र	25/08/2031	सूर्य	18/05/2034	चंद्र	29/11/2036
केतु	20/10/2028	शुक्र	21/07/2030	सूर्य	15/09/2031	चंद्र	17/08/2034	मंगल	25/01/2037
शुक्र	20/12/2028	सूर्य	20/08/2030	चंद्र	21/10/2031	मंगल	20/10/2034	राहु	20/06/2037

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
20/06/2037		20/08/2040		21/06/2043		20/08/2044		07/12/2044	
20/08/2040		21/06/2043		20/08/2044		07/12/2044		08/06/2045	
शनि	20/12/2037	बुध	14/01/2041	केतु	16/07/2043	सूर्य	25/08/2044	चंद्र	23/12/2044
बुध	02/06/2038	केतु	15/03/2041	शुक्र	25/09/2043	चंद्र	04/09/2044	मंगल	02/01/2045
केतु	09/08/2038	शुक्र	03/09/2041	सूर्य	16/10/2043	मंगल	10/09/2044	राहु	30/01/2045
शुक्र	18/02/2039	सूर्य	25/10/2041	चंद्र	20/11/2043	राहु	26/09/2044	गुरु	23/02/2045
सूर्य	16/04/2039	चंद्र	19/01/2042	मंगल	15/12/2043	गुरु	11/10/2044	शनि	24/03/2045
चंद्र	22/07/2039	मंगल	21/03/2042	राहु	17/02/2044	शनि	28/10/2044	बुध	19/04/2045
मंगल	27/09/2039	राहु	23/08/2042	गुरु	14/04/2044	बुध	13/11/2044	केतु	30/04/2045
राहु	19/03/2040	गुरु	08/01/2043	शनि	21/06/2044	केतु	19/11/2044	शुक्र	30/05/2045
गुरु	20/08/2040	शनि	21/06/2043	बुध	20/08/2044	शुक्र	07/12/2044	सूर्य	08/06/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
08/06/2045		14/10/2045		08/09/2046		27/06/2047		08/06/2048	
14/10/2045		08/09/2046		27/06/2047		08/06/2048		14/04/2049	
मंगल	16/06/2045	राहु	02/12/2045	गुरु	17/10/2046	शनि	21/08/2047	बुध	22/07/2048
राहु	05/07/2045	गुरु	15/01/2046	शनि	02/12/2046	बुध	09/10/2047	केतु	09/08/2048
गुरु	22/07/2045	शनि	08/03/2046	बुध	12/01/2047	केतु	29/10/2047	शुक्र	30/09/2048
शनि	11/08/2045	बुध	24/04/2046	केतु	29/01/2047	शुक्र	26/12/2047	सूर्य	15/10/2048
बुध	29/08/2045	केतु	13/05/2046	शुक्र	19/03/2047	सूर्य	12/01/2048	चंद्र	10/11/2048
केतु	06/09/2045	शुक्र	07/07/2046	सूर्य	03/04/2047	चंद्र	10/02/2048	मंगल	28/11/2048
शुक्र	27/09/2045	सूर्य	23/07/2046	चंद्र	27/04/2047	मंगल	02/03/2048	राहु	14/01/2049
सूर्य	03/10/2045	चंद्र	19/08/2046	मंगल	14/05/2047	राहु	23/04/2048	गुरु	24/02/2049
चंद्र	14/10/2045	मंगल	08/09/2046	राहु	27/06/2047	गुरु	08/06/2048	शनि	14/04/2049

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
14/04/2049		20/08/2049		20/08/2050		21/06/2051		20/01/2052	
20/08/2049		20/08/2050		21/06/2051		20/01/2052		21/07/2053	
केतु	22/04/2049	शुक्र	20/10/2049	चंद्र	15/09/2050	मंगल	03/07/2051	राहु	11/04/2052
शुक्र	13/05/2049	सूर्य	07/11/2049	मंगल	03/10/2050	राहु	04/08/2051	गुरु	23/06/2052
सूर्य	19/05/2049	चंद्र	08/12/2049	राहु	17/11/2050	गुरु	02/09/2051	शनि	18/09/2052
चंद्र	30/05/2049	मंगल	29/12/2049	गुरु	28/12/2050	शनि	05/10/2051	बुध	04/12/2052
मंगल	07/06/2049	राहु	22/02/2050	शनि	14/02/2051	बुध	04/11/2051	केतु	05/01/2053
राहु	26/06/2049	गुरु	12/04/2050	बुध	29/03/2051	केतु	17/11/2051	शुक्र	07/04/2053
गुरु	13/07/2049	शनि	08/06/2050	केतु	16/04/2051	शुक्र	22/12/2051	सूर्य	04/05/2053
शनि	02/08/2049	बुध	30/07/2050	शुक्र	06/06/2051	सूर्य	02/01/2052	चंद्र	19/06/2053
बुध	20/08/2049	केतु	20/08/2050	सूर्य	21/06/2051	चंद्र	20/01/2052	मंगल	21/07/2053

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
21/07/2053		20/11/2054		20/06/2056		19/11/2057		21/06/2058	
20/11/2054		20/06/2056		19/11/2057		21/06/2058		19/02/2060	
गुरु	24/09/2053	शनि	19/02/2055	बुध	01/09/2056	केतु	02/12/2057	शुक्र	30/09/2058
शनि	10/12/2053	बुध	12/05/2055	केतु	02/10/2056	शुक्र	06/01/2058	सूर्य	30/10/2058
बुध	17/02/2054	केतु	15/06/2055	शुक्र	27/12/2056	सूर्य	17/01/2058	चंद्र	20/12/2058
केतु	17/03/2054	शुक्र	19/09/2055	सूर्य	22/01/2057	चंद्र	04/02/2058	मंगल	25/01/2059
शुक्र	06/06/2054	सूर्य	18/10/2055	चंद्र	06/03/2057	मंगल	16/02/2058	राहु	26/04/2059
सूर्य	01/07/2054	चंद्र	05/12/2055	मंगल	05/04/2057	राहु	20/03/2058	गुरु	16/07/2059
चंद्र	10/08/2054	मंगल	08/01/2056	राहु	22/06/2057	गुरु	18/04/2058	शनि	21/10/2059
मंगल	08/09/2054	राहु	04/04/2056	गुरु	30/08/2057	शनि	21/05/2058	बुध	15/01/2060
राहु	20/11/2054	गुरु	20/06/2056	शनि	19/11/2057	बुध	21/06/2058	केतु	19/02/2060

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
19/02/2060		20/08/2060		16/01/2061		04/02/2062		10/01/2063	
20/08/2060		16/01/2061		04/02/2062		10/01/2063		19/02/2064	
सूर्य	28/02/2060	मंगल	29/08/2060	राहु	15/03/2061	गुरु	21/03/2062	शनि	16/03/2063
चंद्र	15/03/2060	राहु	20/09/2060	गुरु	05/05/2061	शनि	14/05/2062	बुध	12/05/2063
मंगल	25/03/2060	गुरु	10/10/2060	शनि	04/07/2061	बुध	01/07/2062	केतु	05/06/2063
राहु	22/04/2060	शनि	02/11/2060	बुध	28/08/2061	केतु	21/07/2062	शुक्र	11/08/2063
गुरु	16/05/2060	बुध	24/11/2060	केतु	19/09/2061	शुक्र	16/09/2062	सूर्य	31/08/2063
शनि	14/06/2060	केतु	02/12/2060	शुक्र	22/11/2061	सूर्य	03/10/2062	चंद्र	04/10/2063
बुध	10/07/2060	शुक्र	27/12/2060	सूर्य	11/12/2061	चंद्र	31/10/2062	मंगल	28/10/2063
केतु	20/07/2060	सूर्य	04/01/2061	चंद्र	12/01/2062	मंगल	20/11/2062	राहु	27/12/2063
शुक्र	20/08/2060	चंद्र	16/01/2061	मंगल	04/02/2062	राहु	10/01/2063	गुरु	19/02/2064

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
19/02/2064		15/02/2065		15/07/2065		14/09/2066		20/01/2067	
15/02/2065		15/07/2065		14/09/2066		20/01/2067		21/08/2067	
बुध	11/04/2064	केतु	24/02/2065	शुक्र	24/09/2065	सूर्य	20/09/2066	चंद्र	06/02/2067
केतु	02/05/2064	शुक्र	21/03/2065	सूर्य	15/10/2065	चंद्र	01/10/2066	मंगल	19/02/2067
शुक्र	01/07/2064	सूर्य	29/03/2065	चंद्र	19/11/2065	मंगल	08/10/2066	राहु	23/03/2067
सूर्य	19/07/2064	चंद्र	10/04/2065	मंगल	14/12/2065	राहु	27/10/2066	गुरु	20/04/2067
चंद्र	18/08/2064	मंगल	19/04/2065	राहु	16/02/2066	गुरु	13/11/2066	शनि	24/05/2067
मंगल	09/09/2064	राहु	11/05/2065	गुरु	14/04/2066	शनि	04/12/2066	बुध	23/06/2067
राहु	02/11/2064	गुरु	31/05/2065	शनि	21/06/2066	बुध	22/12/2066	केतु	05/07/2067
गुरु	20/12/2064	शनि	24/06/2065	बुध	20/08/2066	केतु	29/12/2066	शुक्र	10/08/2067
शनि	15/02/2065	बुध	15/07/2065	केतु	14/09/2066	शुक्र	20/01/2067	सूर्य	21/08/2067

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
21/08/2067		03/05/2070		25/09/2072		02/08/2075		19/02/2078	
03/05/2070		25/09/2072		02/08/2075		19/02/2078		09/03/2079	
राहु	16/01/2068	गुरु	28/08/2070	शनि	09/03/2073	बुध	12/12/2075	केतु	13/03/2078
गुरु	26/05/2068	शनि	14/01/2071	बुध	04/08/2073	केतु	05/02/2076	शुक्र	16/05/2078
शनि	29/10/2068	बुध	18/05/2071	केतु	03/10/2073	शुक्र	09/07/2076	सूर्य	04/06/2078
बुध	18/03/2069	केतु	08/07/2071	शुक्र	26/03/2074	सूर्य	24/08/2076	चंद्र	06/07/2078
केतु	14/05/2069	शुक्र	01/12/2071	सूर्य	17/05/2074	चंद्र	10/11/2076	मंगल	29/07/2078
शुक्र	26/10/2069	सूर्य	14/01/2072	चंद्र	12/08/2074	मंगल	03/01/2077	राहु	24/09/2078
सूर्य	14/12/2069	चंद्र	27/03/2072	मंगल	11/10/2074	राहु	23/05/2077	गुरु	14/11/2078
चंद्र	06/03/2070	मंगल	17/05/2072	राहु	17/03/2075	गुरु	24/09/2077	शनि	14/01/2079
मंगल	03/05/2070	राहु	25/09/2072	गुरु	02/08/2075	शनि	19/02/2078	बुध	09/03/2079

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
09/03/2079		09/03/2082		01/02/2083		02/08/2084		20/08/2085	
09/03/2082		01/02/2083		02/08/2084		20/08/2085		08/10/2087	
शुक्र	08/09/2079	सूर्य	25/03/2082	चंद्र	18/03/2083	मंगल	24/08/2084	गुरु	02/12/2085
सूर्य	02/11/2079	चंद्र	22/04/2082	मंगल	19/04/2083	राहु	21/10/2084	शनि	04/04/2086
चंद्र	01/02/2080	मंगल	11/05/2082	राहु	11/07/2083	गुरु	11/12/2084	बुध	24/07/2086
मंगल	05/04/2080	राहु	29/06/2082	गुरु	22/09/2083	शनि	09/02/2085	केतु	07/09/2086
राहु	16/09/2080	गुरु	12/08/2082	शनि	17/12/2083	बुध	05/04/2085	शुक्र	15/01/2087
गुरु	09/02/2081	शनि	03/10/2082	बुध	04/03/2084	केतु	27/04/2085	सूर्य	23/02/2087
शनि	02/08/2081	बुध	19/11/2082	केतु	05/04/2084	शुक्र	30/06/2085	चंद्र	29/04/2087
बुध	04/01/2082	केतु	08/12/2082	शुक्र	05/07/2084	सूर्य	19/07/2085	मंगल	13/06/2087
केतु	09/03/2082	शुक्र	01/02/2083	सूर्य	02/08/2084	चंद्र	20/08/2085	राहु	08/10/2087

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
08/10/2087		21/04/2090		27/07/2092		02/07/2093		02/03/2096	
21/04/2090		27/07/2092		02/07/2093		02/03/2096		20/12/2096	
शनि	03/03/2088	बुध	16/08/2090	केतु	15/08/2092	शुक्र	12/12/2093	सूर्य	17/03/2096
बुध	12/07/2088	केतु	03/10/2090	शुक्र	11/10/2092	सूर्य	29/01/2094	चंद्र	10/04/2096
केतु	04/09/2088	शुक्र	18/02/2091	सूर्य	28/10/2092	चंद्र	21/04/2094	मंगल	27/04/2096
शुक्र	05/02/2089	सूर्य	01/04/2091	चंद्र	26/11/2092	मंगल	16/06/2094	राहु	10/06/2096
सूर्य	23/03/2089	चंद्र	09/06/2091	मंगल	16/12/2092	राहु	10/11/2094	गुरु	19/07/2096
चंद्र	09/06/2089	मंगल	27/07/2091	राहु	05/02/2093	गुरु	19/03/2095	शनि	04/09/2096
मंगल	01/08/2089	राहु	28/11/2091	गुरु	22/03/2093	शनि	21/08/2095	बुध	15/10/2096
राहु	18/12/2089	गुरु	17/03/2092	शनि	15/05/2093	बुध	06/01/2096	केतु	01/11/2096
गुरु	21/04/2090	शनि	27/07/2092	बुध	02/07/2093	केतु	02/03/2096	शुक्र	20/12/2096

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
20/12/2096		21/04/2098		28/03/2099		21/08/2101		24/08/2104	
21/04/2098		28/03/2099		21/08/2101		24/08/2104		04/05/2107	
चंद्र	29/01/2097	मंगल	11/05/2098	राहु	06/08/2099	शनि	11/02/2102	बुध	10/01/2105
मंगल	27/02/2097	राहु	01/07/2098	गुरु	01/12/2099	बुध	17/07/2102	केतु	09/03/2105
राहु	11/05/2097	गुरु	15/08/2098	शनि	19/04/2100	केतु	19/09/2102	शुक्र	19/08/2105
गुरु	15/07/2097	शनि	08/10/2098	बुध	21/08/2100	शुक्र	21/03/2103	सूर्य	08/10/2105
शनि	30/09/2097	बुध	25/11/2098	केतु	11/10/2100	सूर्य	15/05/2103	चंद्र	29/12/2105
बुध	08/12/2097	केतु	15/12/2098	शुक्र	06/03/2101	चंद्र	15/08/2103	मंगल	24/02/2106
केतु	05/01/2098	शुक्र	10/02/2099	सूर्य	19/04/2101	मंगल	18/10/2103	राहु	21/07/2106
शुक्र	27/03/2098	सूर्य	27/02/2099	चंद्र	01/07/2101	राहु	30/03/2104	गुरु	29/11/2106
सूर्य	21/04/2098	चंद्र	28/03/2099	मंगल	21/08/2101	गुरु	24/08/2104	शनि	04/05/2107

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शुक्र - राहु	
30/10/2025 16:12	
01/05/2026 07:12	
राहु	27/11/2025 01:39
गुरु	21/12/2025 10:03
शनि	19/01/2026 08:02
बुध	14/02/2026 04:57
केतु	24/02/2026 20:38
शुक्र	27/03/2026 07:08
सूर्य	05/04/2026 10:17
चंद्र	20/04/2026 15:32
मंगल	01/05/2026 07:12

शुक्र - शुक्र - गुरु	
01/05/2026 07:12	
10/10/2026 15:12	
गुरु	22/05/2026 22:40
शनि	17/06/2026 15:32
बुध	10/07/2026 15:28
केतु	20/07/2026 02:44
शुक्र	16/08/2026 04:04
सूर्य	24/08/2026 06:52
चंद्र	06/09/2026 19:32
मंगल	16/09/2026 06:48
राहु	10/10/2026 15:12

शुक्र - शुक्र - शनि	
10/10/2026 15:12	
21/04/2027 09:42	
शनि	10/11/2026 03:44
बुध	07/12/2026 11:09
केतु	18/12/2026 17:02
शुक्र	19/01/2027 20:07
सूर्य	29/01/2027 11:27
चंद्र	14/02/2027 12:59
मंगल	25/02/2027 18:52
राहु	26/03/2027 16:50
गुरु	21/04/2027 09:42

शुक्र - शुक्र - बुध	
21/04/2027 09:42	
10/10/2027 21:12	
बुध	15/05/2027 20:08
केतु	25/05/2027 21:36
शुक्र	23/06/2027 15:31
सूर्य	02/07/2027 06:30
चंद्र	16/07/2027 15:27
मंगल	26/07/2027 16:56
राहु	21/08/2027 13:51
गुरु	13/09/2027 13:47
शनि	10/10/2027 21:12

शुक्र - शुक्र - केतु	
10/10/2027 21:12	
20/12/2027 21:42	
केतु	15/10/2027 00:38
शुक्र	26/10/2027 20:43
सूर्य	30/10/2027 09:57
चंद्र	05/11/2027 07:59
मंगल	09/11/2027 11:25
राहु	20/11/2027 03:05
गुरु	29/11/2027 14:21
शनि	10/12/2027 20:14
बुध	20/12/2027 21:42

शुक्र - सूर्य - सूर्य	
20/12/2027 21:42	
08/01/2028 04:00	
सूर्य	21/12/2027 19:37
चंद्र	23/12/2027 08:09
मंगल	24/12/2027 09:43
राहु	27/12/2027 03:28
गुरु	29/12/2027 13:54
शनि	01/01/2028 11:18
बुध	04/01/2028 01:23
केतु	05/01/2028 02:57
शुक्र	08/01/2028 04:00

शुक्र - सूर्य - चंद्र	
08/01/2028 04:00	
07/02/2028 14:30	
चंद्र	10/01/2028 16:53
मंगल	12/01/2028 11:30
राहु	17/01/2028 01:04
गुरु	21/01/2028 02:28
शनि	25/01/2028 22:08
बुध	30/01/2028 05:37
केतु	01/02/2028 00:14
शुक्र	06/02/2028 01:59
सूर्य	07/02/2028 14:30

शुक्र - सूर्य - मंगल	
07/02/2028 14:30	
28/02/2028 21:51	
मंगल	08/02/2028 20:20
राहु	12/02/2028 01:02
गुरु	14/02/2028 21:13
शनि	18/02/2028 06:11
बुध	21/02/2028 06:37
केतु	22/02/2028 12:27
शुक्र	26/02/2028 01:41
सूर्य	27/02/2028 03:15
चंद्र	28/02/2028 21:51

शुक्र - सूर्य - राहु	
28/02/2028 21:51	
23/04/2028 16:45	
राहु	08/03/2028 03:06
गुरु	15/03/2028 10:25
शनि	24/03/2028 02:36
बुध	31/03/2028 20:53
केतु	04/04/2028 01:35
शुक्र	13/04/2028 04:44
सूर्य	15/04/2028 22:29
चंद्र	20/04/2028 12:03
मंगल	23/04/2028 16:45

शुक्र - सूर्य - गुरु	
23/04/2028 16:45	
11/06/2028 09:33	
गुरु	30/04/2028 04:36
शनि	07/05/2028 21:39
बुध	14/05/2028 19:14
केतु	17/05/2028 15:25
शुक्र	25/05/2028 18:13
सूर्य	28/05/2028 04:39
चंद्र	01/06/2028 06:03
मंगल	04/06/2028 02:14
राहु	11/06/2028 09:33

शुक्र - सूर्य - शनि	
11/06/2028 09:33	
08/08/2028 05:30	
शनि	20/06/2028 13:19
बुध	28/06/2028 17:57
केतु	02/07/2028 02:54
शुक्र	11/07/2028 18:14
सूर्य	14/07/2028 15:38
चंद्र	19/07/2028 11:18
मंगल	22/07/2028 20:15
राहु	31/07/2028 12:27
गुरु	08/08/2028 05:30

शुक्र - सूर्य - बुध	
08/08/2028 05:30	
28/09/2028 23:21	
बुध	15/08/2028 13:26
केतु	18/08/2028 13:53
शुक्र	27/08/2028 04:51
सूर्य	29/08/2028 18:57
चंद्र	03/09/2028 02:26
मंगल	06/09/2028 02:52
राहु	13/09/2028 21:09
गुरु	20/09/2028 18:44
शनि	28/09/2028 23:21

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - सूर्य - केतु	
28/09/2028 23:21	
20/10/2028 06:42	
केतु	30/09/2028 05:11
शुक्र	03/10/2028 18:25
सूर्य	04/10/2028 19:59
चंद्र	06/10/2028 14:36
मंगल	07/10/2028 20:25
राहु	11/10/2028 01:07
गुरु	13/10/2028 21:18
शनि	17/10/2028 06:16
बुध	20/10/2028 06:42

शुक्र - सूर्य - शुक्र	
20/10/2028 06:42	
20/12/2028 03:42	
शुक्र	30/10/2028 10:12
सूर्य	02/11/2028 11:15
चंद्र	07/11/2028 13:00
मंगल	11/11/2028 02:14
राहु	20/11/2028 05:23
गुरु	28/11/2028 08:11
शनि	07/12/2028 23:30
बुध	16/12/2028 14:29
केतु	20/12/2028 03:42

शुक्र - चंद्र - चंद्र	
20/12/2028 03:42	
08/02/2029 21:12	
चंद्र	24/12/2028 09:10
मंगल	27/12/2028 08:11
राहु	03/01/2029 22:49
गुरु	10/01/2029 17:09
शनि	18/01/2029 17:55
बुध	25/01/2029 22:24
केतु	28/01/2029 21:25
शुक्र	06/02/2029 08:20
सूर्य	08/02/2029 21:12

शुक्र - चंद्र - मंगल	
08/02/2029 21:12	
16/03/2029 09:27	
मंगल	10/02/2029 22:55
राहु	16/02/2029 06:46
गुरु	21/02/2029 00:24
शनि	26/02/2029 15:20
बुध	03/03/2029 16:04
केतु	05/03/2029 17:47
शुक्र	11/03/2029 15:49
सूर्य	13/03/2029 10:26
चंद्र	16/03/2029 09:27

शुक्र - चंद्र - राहु	
16/03/2029 09:27	
15/06/2029 16:57	
राहु	30/03/2029 02:11
गुरु	11/04/2029 06:23
शनि	25/04/2029 17:22
बुध	08/05/2029 15:50
केतु	13/05/2029 23:40
शुक्र	29/05/2029 04:55
सूर्य	02/06/2029 18:30
चंद्र	10/06/2029 09:07
मंगल	15/06/2029 16:57

शुक्र - चंद्र - गुरु	
15/06/2029 16:57	
04/09/2029 20:57	
गुरु	26/06/2029 12:41
शनि	09/07/2029 09:07
बुध	20/07/2029 21:05
केतु	25/07/2029 14:43
शुक्र	08/08/2029 03:23
सूर्य	12/08/2029 04:47
चंद्र	18/08/2029 23:07
मंगल	23/08/2029 16:45
राहु	04/09/2029 20:57

शुक्र - चंद्र - शनि	
04/09/2029 20:57	
10/12/2029 06:12	
शनि	20/09/2029 03:13
बुध	03/10/2029 18:56
केतु	09/10/2029 09:52
शुक्र	25/10/2029 11:25
सूर्य	30/10/2029 07:05
चंद्र	07/11/2029 07:51
मंगल	12/11/2029 22:47
राहु	27/11/2029 09:46
गुरु	10/12/2029 06:12

शुक्र - चंद्र - बुध	
10/12/2029 06:12	
06/03/2030 11:57	
बुध	22/12/2029 11:25
केतु	27/12/2029 12:09
शुक्र	10/01/2030 21:07
सूर्य	15/01/2030 04:36
चंद्र	22/01/2030 09:05
मंगल	27/01/2030 09:49
राहु	09/02/2030 08:17
गुरु	20/02/2030 20:15
शनि	06/03/2030 11:57

शुक्र - चंद्र - केतु	
06/03/2030 11:57	
11/04/2030 00:12	
केतु	08/03/2030 13:40
शुक्र	14/03/2030 11:43
सूर्य	16/03/2030 06:20
चंद्र	19/03/2030 05:21
मंगल	21/03/2030 07:04
राहु	26/03/2030 14:54
गुरु	31/03/2030 08:32
शनि	05/04/2030 23:28
बुध	11/04/2030 00:12

शुक्र - चंद्र - शुक्र	
11/04/2030 00:12	
21/07/2030 11:12	
शुक्र	27/04/2030 22:02
सूर्य	02/05/2030 23:47
चंद्र	11/05/2030 10:42
मंगल	17/05/2030 08:45
राहु	01/06/2030 14:00
गुरु	15/06/2030 02:40
शनि	01/07/2030 04:12
बुध	15/07/2030 13:10
केतु	21/07/2030 11:12

शुक्र - चंद्र - सूर्य	
21/07/2030 11:12	
20/08/2030 21:42	
सूर्य	22/07/2030 23:44
चंद्र	25/07/2030 12:36
मंगल	27/07/2030 07:13
राहु	31/07/2030 20:48
गुरु	04/08/2030 22:12
शनि	09/08/2030 17:51
बुध	14/08/2030 01:21
केतु	15/08/2030 19:57
शुक्र	20/08/2030 21:42

शुक्र - मंगल - मंगल	
20/08/2030 21:42	
14/09/2030 18:17	
मंगल	22/08/2030 08:31
राहु	26/08/2030 02:00
गुरु	29/08/2030 09:32
शनि	02/09/2030 08:00
बुध	05/09/2030 20:31
केतु	07/09/2030 07:19
शुक्र	11/09/2030 10:44
सूर्य	12/09/2030 16:34
चंद्र	14/09/2030 18:17

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - मंगल - राहु		शुक्र - मंगल - गुरु		शुक्र - मंगल - शनि		शुक्र - मंगल - बुध	
14/09/2030 18:17		17/11/2030 16:20		13/01/2031 11:56		21/03/2031 23:12	
17/11/2030 16:20		13/01/2031 11:56		21/03/2031 23:12		21/05/2031 08:02	
राहु	24/09/2030 08:23	गुरु	25/11/2030 06:09	शनि	24/01/2031 04:19	बुध	30/03/2031 12:28
गुरु	02/10/2030 20:56	शनि	04/12/2030 06:03	बुध	02/02/2031 17:43	केतु	03/04/2031 00:58
शनि	12/10/2030 23:49	बुध	12/12/2030 07:14	केतु	06/02/2031 16:10	शुक्र	13/04/2031 02:27
बुध	22/10/2030 01:09	केतु	15/12/2030 14:46	शुक्र	17/02/2031 22:03	सूर्य	16/04/2031 02:53
केतु	25/10/2030 18:38	शुक्र	25/12/2030 02:02	सूर्य	21/02/2031 07:01	चंद्र	21/04/2031 03:37
शुक्र	05/11/2030 10:18	सूर्य	27/12/2030 22:13	चंद्र	26/02/2031 21:57	मंगल	24/04/2031 16:08
सूर्य	08/11/2030 15:01	चंद्र	01/01/2031 15:51	मंगल	02/03/2031 20:25	राहु	03/05/2031 17:28
चंद्र	13/11/2030 22:51	मंगल	04/01/2031 23:24	राहु	12/03/2031 23:18	गुरु	11/05/2031 18:38
मंगल	17/11/2030 16:20	राहु	13/01/2031 11:56	गुरु	21/03/2031 23:12	शनि	21/05/2031 08:02

शुक्र - मंगल - केतु		शुक्र - मंगल - शुक्र		शुक्र - मंगल - सूर्य		शुक्र - मंगल - चंद्र	
21/05/2031 08:02		15/06/2031 04:36		25/08/2031 05:06		15/09/2031 12:27	
15/06/2031 04:36		25/08/2031 05:06		15/09/2031 12:27		21/10/2031 00:42	
केतु	22/05/2031 18:50	शुक्र	27/06/2031 00:41	सूर्य	26/08/2031 06:41	चंद्र	18/09/2031 11:29
शुक्र	26/05/2031 22:16	सूर्य	30/06/2031 13:55	चंद्र	28/08/2031 01:17	मंगल	20/09/2031 13:12
सूर्य	28/05/2031 04:05	चंद्र	06/07/2031 11:57	मंगल	29/08/2031 07:07	राहु	25/09/2031 21:02
चंद्र	30/05/2031 05:48	मंगल	10/07/2031 15:23	राहु	01/09/2031 11:49	गुरु	30/09/2031 14:40
मंगल	31/05/2031 16:36	राहु	21/07/2031 07:04	गुरु	04/09/2031 08:00	शनि	06/10/2031 05:36
राहु	04/06/2031 10:06	गुरु	30/07/2031 18:20	शनि	07/09/2031 16:58	बुध	11/10/2031 06:20
गुरु	07/06/2031 17:38	शनि	11/08/2031 00:12	बुध	10/09/2031 17:24	केतु	13/10/2031 08:03
शनि	11/06/2031 16:06	बुध	21/08/2031 01:41	केतु	11/09/2031 23:14	शुक्र	19/10/2031 06:06
बुध	15/06/2031 04:36	केतु	25/08/2031 05:06	शुक्र	15/09/2031 12:27	सूर्य	21/10/2031 00:42

शुक्र - राहु - राहु		शुक्र - राहु - गुरु		शुक्र - राहु - शनि		शुक्र - राहु - बुध	
21/10/2031 00:42		02/04/2032 09:24		26/08/2032 11:48		15/02/2033 23:39	
02/04/2032 09:24		26/08/2032 11:48		15/02/2033 23:39		21/07/2033 05:12	
राहु	14/11/2031 16:25	गुरु	21/04/2032 20:56	शनि	22/09/2032 23:05	बुध	09/03/2033 23:27
गुरु	06/12/2031 14:22	शनि	15/05/2032 00:06	बुध	17/10/2032 12:58	केतु	19/03/2033 00:46
शनि	01/01/2032 14:57	बुध	04/06/2032 16:51	केतु	27/10/2032 15:51	शुक्र	13/04/2033 21:42
बुध	24/01/2032 21:47	केतु	13/06/2032 05:23	शुक्र	25/11/2032 13:50	सूर्य	21/04/2033 15:58
केतु	03/02/2032 11:53	शुक्र	07/07/2032 13:47	सूर्य	04/12/2032 06:01	चंद्र	04/05/2033 14:26
शुक्र	01/03/2032 21:20	सूर्य	14/07/2032 21:06	चंद्र	18/12/2032 17:01	मंगल	13/05/2033 15:45
सूर्य	10/03/2032 02:35	चंद्र	27/07/2032 01:18	मंगल	28/12/2032 19:54	राहु	05/06/2033 22:35
चंद्र	23/03/2032 19:18	मंगल	04/08/2032 13:51	राहु	23/01/2033 20:29	गुरु	26/06/2033 15:20
मंगल	02/04/2032 09:24	राहु	26/08/2032 11:48	गुरु	15/02/2033 23:39	शनि	21/07/2033 05:12

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - राहु - केतु	
21/07/2033 05:12	
23/09/2033 03:15	
केतु	24/07/2033 22:42
शुक्र	04/08/2033 14:22
सूर्य	07/08/2033 19:04
चंद्र	13/08/2033 02:55
मंगल	16/08/2033 20:24
राहु	26/08/2033 10:30
गुरु	03/09/2033 23:03
शनि	14/09/2033 01:56
बुध	23/09/2033 03:15

शुक्र - राहु - शुक्र	
23/09/2033 03:15	
24/03/2034 18:15	
शुक्र	23/10/2033 13:45
सूर्य	01/11/2033 16:54
चंद्र	16/11/2033 22:09
मंगल	27/11/2033 13:50
राहु	24/12/2033 23:17
गुरु	18/01/2034 07:41
शनि	16/02/2034 05:39
बुध	14/03/2034 02:35
केतु	24/03/2034 18:15

शुक्र - राहु - सूर्य	
24/03/2034 18:15	
18/05/2034 13:09	
सूर्य	27/03/2034 12:00
चंद्र	01/04/2034 01:35
मंगल	04/04/2034 06:17
राहु	12/04/2034 11:31
गुरु	19/04/2034 18:50
शनि	28/04/2034 11:02
बुध	06/05/2034 05:18
केतु	09/05/2034 10:00
शुक्र	18/05/2034 13:09

शुक्र - राहु - चंद्र	
18/05/2034 13:09	
17/08/2034 20:39	
चंद्र	26/05/2034 03:47
मंगल	31/05/2034 11:37
राहु	14/06/2034 04:21
गुरु	26/06/2034 08:33
शनि	10/07/2034 19:32
बुध	23/07/2034 18:00
केतु	29/07/2034 01:50
शुक्र	13/08/2034 07:05
सूर्य	17/08/2034 20:39

शुक्र - राहु - मंगल	
17/08/2034 20:39	
20/10/2034 18:42	
मंगल	21/08/2034 14:09
राहु	31/08/2034 04:15
गुरु	08/09/2034 16:48
शनि	18/09/2034 19:41
बुध	27/09/2034 21:00
केतु	01/10/2034 14:30
शुक्र	12/10/2034 06:10
सूर्य	15/10/2034 10:52
चंद्र	20/10/2034 18:42

शुक्र - गुरु - गुरु	
20/10/2034 18:42	
27/02/2035 15:30	
गुरु	07/11/2034 02:17
शनि	27/11/2034 15:46
बुध	16/12/2034 01:19
केतु	23/12/2034 15:08
शुक्र	14/01/2035 06:36
सूर्य	20/01/2035 18:26
चंद्र	31/01/2035 14:10
मंगल	08/02/2035 03:59
राहु	27/02/2035 15:30

शुक्र - गुरु - शनि	
27/02/2035 15:30	
31/07/2035 20:42	
शनि	24/03/2035 01:32
बुध	14/04/2035 21:52
केतु	23/04/2035 21:46
शुक्र	19/05/2035 14:38
सूर्य	27/05/2035 07:42
चंद्र	09/06/2035 04:08
मंगल	18/06/2035 04:02
राहु	11/07/2035 07:13
गुरु	31/07/2035 20:42

शुक्र - गुरु - बुध	
31/07/2035 20:42	
16/12/2035 20:18	
बुध	20/08/2035 09:51
केतु	28/08/2035 11:02
शुक्र	20/09/2035 10:58
सूर्य	27/09/2035 08:32
चंद्र	08/10/2035 20:30
मंगल	16/10/2035 21:41
राहु	06/11/2035 14:25
गुरु	24/11/2035 23:58
शनि	16/12/2035 20:18

शुक्र - गुरु - केतु	
16/12/2035 20:18	
11/02/2036 15:54	
केतु	20/12/2035 03:51
शुक्र	29/12/2035 15:07
सूर्य	01/01/2036 11:18
चंद्र	06/01/2036 04:56
मंगल	09/01/2036 12:28
राहु	18/01/2036 01:01
गुरु	25/01/2036 14:50
शनि	03/02/2036 14:44
बुध	11/02/2036 15:54

शुक्र - गुरु - शुक्र	
11/02/2036 15:54	
22/07/2036 23:54	
शुक्र	09/03/2036 17:14
सूर्य	17/03/2036 20:02
चंद्र	31/03/2036 08:42
मंगल	09/04/2036 19:58
राहु	04/05/2036 04:22
गुरु	25/05/2036 19:50
शनि	20/06/2036 12:42
बुध	13/07/2036 12:38
केतु	22/07/2036 23:54

शुक्र - गुरु - सूर्य	
22/07/2036 23:54	
09/09/2036 16:42	
सूर्य	25/07/2036 10:21
चंद्र	29/07/2036 11:45
मंगल	01/08/2036 07:56
राहु	08/08/2036 15:15
गुरु	15/08/2036 03:05
शनि	22/08/2036 20:09
बुध	29/08/2036 17:44
केतु	01/09/2036 13:54
शुक्र	09/09/2036 16:42

शुक्र - गुरु - चंद्र	
09/09/2036 16:42	
29/11/2036 20:42	
चंद्र	16/09/2036 11:02
मंगल	21/09/2036 04:40
राहु	03/10/2036 08:52
गुरु	14/10/2036 04:36
शनि	27/10/2036 01:02
बुध	07/11/2036 13:00
केतु	12/11/2036 06:38
शुक्र	25/11/2036 19:18
सूर्य	29/11/2036 20:42

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शुक्र - राहु - केतु	
14/02/2026 04:57	
24/02/2026 20:38	
केतु	14/02/2026 19:52
शुक्र	16/02/2026 14:29
सूर्य	17/02/2026 03:16
चंद्र	18/02/2026 00:35
मंगल	18/02/2026 15:29
राहु	20/02/2026 05:50
गुरु	21/02/2026 15:56
शनि	23/02/2026 08:25
बुध	24/02/2026 20:38

शुक्र - शुक्र - राहु - शुक्र	
24/02/2026 20:38	
27/03/2026 07:08	
शुक्र	01/03/2026 22:23
सूर्य	03/03/2026 10:54
चंद्र	05/03/2026 23:47
मंगल	07/03/2026 18:24
राहु	12/03/2026 07:58
गुरु	16/03/2026 09:22
शनि	21/03/2026 05:02
बुध	25/03/2026 12:31
केतु	27/03/2026 07:08

शुक्र - शुक्र - राहु - सूर्य	
27/03/2026 07:08	
05/04/2026 10:17	
सूर्य	27/03/2026 18:05
चंद्र	28/03/2026 12:21
मंगल	29/03/2026 01:08
राहु	30/03/2026 10:01
गुरु	31/03/2026 15:14
शनि	02/04/2026 01:56
बुध	03/04/2026 08:58
केतु	03/04/2026 21:45
शुक्र	05/04/2026 10:17

शुक्र - शुक्र - राहु - चंद्र	
05/04/2026 10:17	
20/04/2026 15:32	
चंद्र	06/04/2026 16:43
मंगल	07/04/2026 14:02
राहु	09/04/2026 20:49
गुरु	11/04/2026 21:31
शनि	14/04/2026 07:21
बुध	16/04/2026 11:05
केतु	17/04/2026 08:24
शुक्र	19/04/2026 21:16
सूर्य	20/04/2026 15:32

शुक्र - शुक्र - राहु - मंगल	
20/04/2026 15:32	
01/05/2026 07:12	
मंगल	21/04/2026 06:27
राहु	22/04/2026 20:48
गुरु	24/04/2026 06:53
शनि	25/04/2026 23:22
बुध	27/04/2026 11:35
केतु	28/04/2026 02:30
शुक्र	29/04/2026 21:07
सूर्य	30/04/2026 09:54
चंद्र	01/05/2026 07:12

शुक्र - शुक्र - गुरु - गुरु	
01/05/2026 07:12	
22/05/2026 22:40	
गुरु	04/05/2026 04:28
शनि	07/05/2026 14:43
बुध	10/05/2026 16:19
केतु	11/05/2026 22:37
शुक्र	15/05/2026 13:11
सूर्य	16/05/2026 15:10
चंद्र	18/05/2026 10:27
मंगल	19/05/2026 16:45
राहु	22/05/2026 22:40

शुक्र - शुक्र - गुरु - शनि	
22/05/2026 22:40	
17/06/2026 15:32	
शनि	27/05/2026 00:21
बुध	30/05/2026 15:44
केतु	01/06/2026 03:43
शुक्र	05/06/2026 10:32
सूर्य	06/06/2026 17:22
चंद्र	08/06/2026 20:47
मंगल	10/06/2026 08:46
राहु	14/06/2026 05:18
गुरु	17/06/2026 15:32

शुक्र - शुक्र - गुरु - बुध	
17/06/2026 15:32	
10/07/2026 15:28	
बुध	20/06/2026 21:44
केतु	22/06/2026 05:56
शुक्र	26/06/2026 01:55
सूर्य	27/06/2026 05:31
चंद्र	29/06/2026 03:30
मंगल	30/06/2026 11:42
राहु	03/07/2026 22:30
गुरु	07/07/2026 00:05
शनि	10/07/2026 15:28

शुक्र - शुक्र - गुरु - केतु	
10/07/2026 15:28	
20/07/2026 02:44	
केतु	11/07/2026 04:44
शुक्र	12/07/2026 18:37
सूर्य	13/07/2026 05:58
चंद्र	14/07/2026 00:55
मंगल	14/07/2026 14:10
राहु	16/07/2026 00:16
गुरु	17/07/2026 06:34
शनि	18/07/2026 18:33
बुध	20/07/2026 02:44

शुक्र - शुक्र - गुरु - शुक्र	
20/07/2026 02:44	
16/08/2026 04:04	
शुक्र	24/07/2026 14:58
सूर्य	25/07/2026 23:26
चंद्र	28/07/2026 05:32
मंगल	29/07/2026 19:25
राहु	02/08/2026 20:49
गुरु	06/08/2026 11:24
शनि	10/08/2026 18:12
बुध	14/08/2026 14:12
केतु	16/08/2026 04:04

शुक्र - शुक्र - गुरु - सूर्य	
16/08/2026 04:04	
24/08/2026 06:52	
सूर्य	16/08/2026 13:49
चंद्र	17/08/2026 06:03
मंगल	17/08/2026 17:25
राहु	18/08/2026 22:38
गुरु	20/08/2026 00:36
शनि	21/08/2026 07:27
बुध	22/08/2026 11:03
केतु	22/08/2026 22:24
शुक्र	24/08/2026 06:52

शुक्र - शुक्र - गुरु - चंद्र	
24/08/2026 06:52	
06/09/2026 19:32	
चंद्र	25/08/2026 09:56
मंगल	26/08/2026 04:52
राहु	28/08/2026 05:34
गुरु	30/08/2026 00:51
शनि	01/09/2026 04:16
बुध	03/09/2026 02:15
केतु	03/09/2026 21:12
शुक्र	06/09/2026 03:18
सूर्य	06/09/2026 19:32

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शुक्र - गुरु - मंगल	
06/09/2026 19:32	
16/09/2026 06:48	
मंगल	07/09/2026 08:48
राहु	08/09/2026 18:53
गुरु	10/09/2026 01:11
शनि	11/09/2026 13:10
बुध	12/09/2026 21:22
केतु	13/09/2026 10:38
शुक्र	15/09/2026 00:30
सूर्य	15/09/2026 11:52
चंद्र	16/09/2026 06:48

शुक्र - शुक्र - गुरु - राहु	
16/09/2026 06:48	
10/10/2026 15:12	
राहु	19/09/2026 22:28
गुरु	23/09/2026 04:23
शनि	27/09/2026 00:55
बुध	30/09/2026 11:42
केतु	01/10/2026 21:48
शुक्र	05/10/2026 23:12
सूर्य	07/10/2026 04:25
चंद्र	09/10/2026 05:07
मंगल	10/10/2026 15:12

शुक्र - शुक्र - शनि - शनि	
10/10/2026 15:12	
10/11/2026 03:44	
शनि	15/10/2026 11:12
बुध	19/10/2026 18:58
केतु	21/10/2026 13:42
शुक्र	26/10/2026 15:47
सूर्य	28/10/2026 04:25
चंद्र	30/10/2026 17:27
मंगल	01/11/2026 12:11
राहु	06/11/2026 02:04
गुरु	10/11/2026 03:44

शुक्र - शुक्र - शनि - बुध	
10/11/2026 03:44	
07/12/2026 11:09	
बुध	14/11/2026 00:35
केतु	15/11/2026 14:49
शुक्र	20/11/2026 04:03
सूर्य	21/11/2026 12:50
चंद्र	23/11/2026 19:27
मंगल	25/11/2026 09:41
राहु	29/11/2026 12:00
गुरु	03/12/2026 03:23
शनि	07/12/2026 11:09

शुक्र - शुक्र - शनि - केतु	
07/12/2026 11:09	
18/12/2026 17:02	
केतु	08/12/2026 02:54
शुक्र	09/12/2026 23:53
सूर्य	10/12/2026 13:22
चंद्र	11/12/2026 11:52
मंगल	12/12/2026 03:36
राहु	13/12/2026 20:05
गुरु	15/12/2026 08:04
शनि	17/12/2026 02:48
बुध	18/12/2026 17:02

शुक्र - शुक्र - शनि - शुक्र	
18/12/2026 17:02	
19/01/2027 20:07	
शुक्र	24/12/2026 01:33
सूर्य	25/12/2026 16:06
चंद्र	28/12/2026 08:22
मंगल	30/12/2026 05:21
राहु	04/01/2027 01:00
गुरु	08/01/2027 07:49
शनि	13/01/2027 09:54
बुध	17/01/2027 23:08
केतु	19/01/2027 20:07

शुक्र - शुक्र - शनि - सूर्य	
19/01/2027 20:07	
29/01/2027 11:27	
सूर्य	20/01/2027 07:41
चंद्र	21/01/2027 02:58
मंगल	21/01/2027 16:27
राहु	23/01/2027 03:09
गुरु	24/01/2027 10:00
शनि	25/01/2027 22:38
बुध	27/01/2027 07:24
केतु	27/01/2027 20:53
शुक्र	29/01/2027 11:27

शुक्र - शुक्र - शनि - चंद्र	
29/01/2027 11:27	
14/02/2027 12:59	
चंद्र	30/01/2027 19:34
मंगल	31/01/2027 18:04
राहु	03/02/2027 03:54
गुरु	05/02/2027 07:18
शनि	07/02/2027 20:21
बुध	10/02/2027 02:58
केतु	11/02/2027 01:27
शुक्र	13/02/2027 17:43
सूर्य	14/02/2027 12:59

शुक्र - शुक्र - शनि - मंगल	
14/02/2027 12:59	
25/02/2027 18:52	
मंगल	15/02/2027 04:44
राहु	16/02/2027 21:13
गुरु	18/02/2027 09:12
शनि	20/02/2027 03:56
बुध	21/02/2027 18:10
केतु	22/02/2027 09:54
शुक्र	24/02/2027 06:53
सूर्य	24/02/2027 20:23
चंद्र	25/02/2027 18:52

शुक्र - शुक्र - शनि - राहु	
25/02/2027 18:52	
26/03/2027 16:50	
राहु	02/03/2027 02:58
गुरु	05/03/2027 23:30
शनि	10/03/2027 13:22
बुध	14/03/2027 15:41
केतु	16/03/2027 08:10
शुक्र	21/03/2027 03:50
सूर्य	22/03/2027 14:32
चंद्र	25/03/2027 00:22
मंगल	26/03/2027 16:50

शुक्र - शुक्र - शनि - गुरु	
26/03/2027 16:50	
21/04/2027 09:42	
गुरु	30/03/2027 03:05
शनि	03/04/2027 04:46
बुध	06/04/2027 20:09
केतु	08/04/2027 08:08
शुक्र	12/04/2027 14:57
सूर्य	13/04/2027 21:47
चंद्र	16/04/2027 01:12
मंगल	17/04/2027 13:11
राहु	21/04/2027 09:42

शुक्र - शुक्र - बुध - बुध	
21/04/2027 09:42	
15/05/2027 20:08	
बुध	24/04/2027 20:47
केतु	26/04/2027 07:00
शुक्र	30/04/2027 08:44
सूर्य	01/05/2027 14:03
चंद्र	03/05/2027 14:55
मंगल	05/05/2027 01:08
राहु	08/05/2027 17:06
गुरु	11/05/2027 23:17
शनि	15/05/2027 20:08

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 4 मास 2 दिन

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
06/07/1998		08/11/1999		07/11/2012		08/11/2026		08/11/2041	
08/11/1999		07/11/2012		08/11/2026		08/11/2041		08/11/2057	
	00/00/0000	गुरु	23/04/2001	शनि	18/07/2014	केतु	16/10/2028	चंद्र	23/01/2044
	00/00/0000	शनि	17/11/2002	केतु	09/05/2016	चंद्र	11/11/2030	बुध	28/05/2046
	00/00/0000	केतु	23/07/2004	चंद्र	14/04/2018	बुध	22/01/2033	शुक्र	20/11/2048
	00/00/0000	चंद्र	09/05/2006	बुध	03/05/2020	शुक्र	22/05/2035	सूर्य	28/05/2050
	00/00/0000	बुध	04/04/2008	शुक्र	05/07/2022	सूर्य	23/10/2036	मंगल	23/01/2052
	06/07/1998	शुक्र	11/04/2010	सूर्य	02/11/2023	मंगल	12/05/2038	गुरु	08/11/2053
शुक्र	19/09/1998	सूर्य	05/07/2011	मंगल	14/04/2025	गुरु	16/01/2040	शनि	14/10/2055
सूर्य	08/11/1999	मंगल	07/11/2012	गुरु	08/11/2026	शनि	08/11/2041	केतु	08/11/2057

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
08/11/2057		08/11/2074		07/11/2092		09/11/2103	
08/11/2074		07/11/2092		09/11/2103		00/00/0000	
बुध	06/05/2060	शुक्र	24/08/2077	सूर्य	23/11/2093	मंगल	05/02/2105
शुक्र	25/12/2062	सूर्य	10/05/2079	मंगल	13/01/2095	गुरु	11/06/2106
सूर्य	05/08/2064	मंगल	20/03/2081	गुरु	07/04/2096	शनि	22/11/2107
मंगल	09/05/2066	गुरु	26/03/2083	शनि	05/08/2097	केतु	11/06/2109
गुरु	04/04/2068	शनि	28/05/2085	केतु	07/01/2099	चंद्र	05/02/2111
शनि	24/04/2070	केतु	25/09/2087	चंद्र	15/07/2100	बुध	08/11/2112
केतु	05/07/2072	चंद्र	20/03/2090	बुध	24/02/2102	शुक्र	07/07/2114
चंद्र	08/11/2074	बुध	07/11/2092	शुक्र	09/11/2103		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
06/07/1998		19/09/1998		08/11/1999		23/04/2001		17/11/2002	
19/09/1998		08/11/1999		23/04/2001		17/11/2002		23/07/2004	
	00/00/0000	सूर्य	28/10/1998	गुरु	07/01/2000	शनि	01/07/2001	केतु	05/02/2003
	00/00/0000	मंगल	10/12/1998	शनि	11/03/2000	केतु	14/09/2001	चंद्र	30/04/2003
	00/00/0000	गुरु	26/01/1999	केतु	19/05/2000	चंद्र	02/12/2001	बुध	29/07/2003
	00/00/0000	शनि	17/03/1999	चंद्र	31/07/2000	बुध	24/02/2002	शुक्र	02/11/2003
	00/00/0000	केतु	09/05/1999	बुध	17/10/2000	शुक्र	24/05/2002	सूर्य	30/12/2003
	00/00/0000	चंद्र	06/07/1999	शुक्र	08/01/2001	सूर्य	17/07/2002	मंगल	02/03/2004
	06/07/1998	बुध	05/09/1999	सूर्य	27/02/2001	मंगल	14/09/2002	गुरु	10/05/2004
बुध	19/09/1998	शुक्र	08/11/1999	मंगल	23/04/2001	गुरु	17/11/2002	शनि	23/07/2004

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
23/07/2004		09/05/2006		04/04/2008		11/04/2010		05/07/2011	
09/05/2006		04/04/2008		11/04/2010		05/07/2011		07/11/2012	
चंद्र	22/10/2004	बुध	19/08/2006	शुक्र	28/07/2008	सूर्य	24/05/2010	मंगल	25/08/2011
बुध	26/01/2005	शुक्र	05/12/2006	सूर्य	05/10/2008	मंगल	09/07/2010	गुरु	19/10/2011
शुक्र	07/05/2005	सूर्य	09/02/2007	मंगल	21/12/2008	गुरु	29/08/2010	शनि	17/12/2011
सूर्य	08/07/2005	मंगल	22/04/2007	गुरु	13/03/2009	शनि	22/10/2010	केतु	19/02/2012
मंगल	14/09/2005	गुरु	09/07/2007	शनि	10/06/2009	केतु	19/12/2010	चंद्र	27/04/2012
गुरु	27/11/2005	शनि	01/10/2007	केतु	13/09/2009	चंद्र	19/02/2011	बुध	08/07/2012
शनि	14/02/2006	केतु	30/12/2007	चंद्र	24/12/2009	बुध	26/04/2011	शुक्र	22/09/2012
केतु	09/05/2006	चंद्र	04/04/2008	बुध	11/04/2010	शुक्र	05/07/2011	सूर्य	07/11/2012

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
07/11/2012		18/07/2014		09/05/2016		14/04/2018		03/05/2020	
18/07/2014		09/05/2016		14/04/2018		03/05/2020		05/07/2022	
शनि	21/01/2013	केतु	11/10/2014	चंद्र	14/08/2016	बुध	02/08/2018	शुक्र	03/09/2020
केतु	11/04/2013	चंद्र	10/01/2015	बुध	25/11/2016	शुक्र	26/11/2018	सूर्य	17/11/2020
चंद्र	05/07/2013	बुध	17/04/2015	शुक्र	15/03/2017	सूर्य	05/02/2019	मंगल	07/02/2021
बुध	03/10/2013	शुक्र	29/07/2015	सूर्य	21/05/2017	मंगल	24/04/2019	गुरु	07/05/2021
शुक्र	07/01/2014	सूर्य	30/09/2015	मंगल	02/08/2017	गुरु	17/07/2019	शनि	11/08/2021
सूर्य	07/03/2014	मंगल	07/12/2015	गुरु	20/10/2017	शनि	15/10/2019	केतु	21/11/2021
मंगल	09/05/2014	गुरु	19/02/2016	शनि	13/01/2018	केतु	20/01/2020	चंद्र	11/03/2022
गुरु	18/07/2014	शनि	09/05/2016	केतु	14/04/2018	चंद्र	03/05/2020	बुध	05/07/2022

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र	
05/07/2022		02/11/2023		14/04/2025		08/11/2026		16/10/2028	
02/11/2023		14/04/2025		08/11/2026		16/10/2028		11/11/2030	
सूर्य	20/08/2022	मंगल	27/12/2023	गुरु	17/06/2025	केतु	08/02/2027	चंद्र	29/01/2029
मंगल	09/10/2022	गुरु	24/02/2024	शनि	25/08/2025	चंद्र	16/05/2027	बुध	19/05/2029
गुरु	02/12/2022	शनि	28/04/2024	केतु	07/11/2025	बुध	28/08/2027	शुक्र	14/09/2029
शनि	30/01/2023	केतु	05/07/2024	चंद्र	25/01/2026	शुक्र	16/12/2027	सूर्य	24/11/2029
केतु	03/04/2023	चंद्र	16/09/2024	बुध	19/04/2026	सूर्य	21/02/2028	मंगल	10/02/2030
चंद्र	09/06/2023	बुध	03/12/2024	शुक्र	17/07/2026	मंगल	05/05/2028	गुरु	06/05/2030
बुध	19/08/2023	शुक्र	23/02/2025	सूर्य	10/09/2026	गुरु	23/07/2028	शनि	05/08/2030
शुक्र	02/11/2023	सूर्य	14/04/2025	मंगल	08/11/2026	शनि	16/10/2028	केतु	11/11/2030

केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु	
11/11/2030		22/01/2033		22/05/2035		23/10/2036		12/05/2038	
22/01/2033		22/05/2035		23/10/2036		12/05/2038		16/01/2040	
बुध	09/03/2031	शुक्र	03/06/2033	सूर्य	10/07/2035	मंगल	20/12/2036	गुरु	20/07/2038
शुक्र	11/07/2031	सूर्य	23/08/2033	मंगल	02/09/2035	गुरु	22/02/2037	शनि	02/10/2038
सूर्य	26/09/2031	मंगल	19/11/2033	गुरु	30/10/2035	शनि	01/05/2037	केतु	21/12/2038
मंगल	18/12/2031	गुरु	22/02/2034	शनि	01/01/2036	केतु	14/07/2037	चंद्र	15/03/2039
गुरु	17/03/2032	शनि	04/06/2034	केतु	08/03/2036	चंद्र	30/09/2037	बुध	13/06/2039
शनि	21/06/2032	केतु	22/09/2034	चंद्र	19/05/2036	बुध	22/12/2037	शुक्र	17/09/2039
केतु	03/10/2032	चंद्र	18/01/2035	बुध	03/08/2036	शुक्र	20/03/2038	सूर्य	14/11/2039
चंद्र	22/01/2033	बुध	22/05/2035	शुक्र	23/10/2036	सूर्य	12/05/2038	मंगल	16/01/2040

केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
16/01/2040		08/11/2041		23/01/2044		28/05/2046		20/11/2048	
08/11/2041		23/01/2044		28/05/2046		20/11/2048		28/05/2050	
शनि	05/04/2040	चंद्र	27/02/2042	बुध	27/05/2044	शुक्र	16/10/2046	सूर्य	12/01/2049
केतु	30/06/2040	बुध	25/06/2042	शुक्र	07/10/2044	सूर्य	10/01/2047	मंगल	10/03/2049
चंद्र	29/09/2040	शुक्र	28/10/2042	सूर्य	27/12/2044	मंगल	14/04/2047	गुरु	11/05/2049
बुध	04/01/2041	सूर्य	13/01/2043	मंगल	26/03/2045	गुरु	24/07/2047	शनि	17/07/2049
शुक्र	16/04/2041	मंगल	06/04/2043	गुरु	30/06/2045	शनि	11/11/2047	केतु	27/09/2049
सूर्य	18/06/2041	गुरु	05/07/2043	शनि	11/10/2045	केतु	07/03/2048	चंद्र	12/12/2049
मंगल	26/08/2041	शनि	11/10/2043	केतु	30/01/2046	चंद्र	10/07/2048	बुध	03/03/2050
गुरु	08/11/2041	केतु	23/01/2044	चंद्र	28/05/2046	बुध	20/11/2048	शुक्र	28/05/2050

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध	
28/05/2050		23/01/2052		08/11/2053		14/10/2055		08/11/2057	
23/01/2052		08/11/2053		14/10/2055		08/11/2057		06/05/2060	
मंगल	30/07/2050	गुरु	05/04/2052	शनि	01/02/2054	केतु	20/01/2056	बुध	21/03/2058
गुरु	06/10/2050	शनि	23/06/2052	केतु	03/05/2054	चंद्र	03/05/2056	शुक्र	09/08/2058
शनि	17/12/2050	केतु	16/09/2052	चंद्र	08/08/2054	बुध	22/08/2056	सूर्य	04/11/2058
केतु	06/03/2051	चंद्र	15/12/2052	बुध	20/11/2054	शुक्र	17/12/2056	मंगल	06/02/2059
चंद्र	28/05/2051	बुध	21/03/2053	शुक्र	09/03/2055	सूर्य	27/02/2057	गुरु	19/05/2059
बुध	25/08/2051	शुक्र	01/07/2053	सूर्य	15/05/2055	मंगल	16/05/2057	शनि	05/09/2059
शुक्र	26/11/2051	सूर्य	01/09/2053	मंगल	27/07/2055	गुरु	08/08/2057	केतु	01/01/2060
सूर्य	23/01/2052	मंगल	08/11/2053	गुरु	14/10/2055	शनि	08/11/2057	चंद्र	06/05/2060

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि	
06/05/2060		25/12/2062		05/08/2064		09/05/2066		04/04/2068	
25/12/2062		05/08/2064		09/05/2066		04/04/2068		24/04/2070	
शुक्र	02/10/2060	सूर्य	19/02/2063	मंगल	10/10/2064	गुरु	26/07/2066	शनि	04/07/2068
सूर्य	02/01/2061	मंगल	21/04/2063	गुरु	21/12/2064	शनि	18/10/2066	केतु	09/10/2068
मंगल	11/04/2061	गुरु	26/06/2063	शनि	09/03/2065	केतु	16/01/2067	चंद्र	20/01/2069
गुरु	28/07/2061	शनि	05/09/2063	केतु	31/05/2065	चंद्र	22/04/2067	बुध	10/05/2069
शनि	21/11/2061	केतु	20/11/2063	चंद्र	28/08/2065	बुध	02/08/2067	शुक्र	03/09/2069
केतु	26/03/2062	चंद्र	09/02/2064	बुध	30/11/2065	शुक्र	18/11/2067	सूर्य	13/11/2069
चंद्र	06/08/2062	बुध	06/05/2064	शुक्र	09/03/2066	सूर्य	23/01/2068	मंगल	30/01/2070
बुध	25/12/2062	शुक्र	05/08/2064	सूर्य	09/05/2066	मंगल	04/04/2068	गुरु	24/04/2070

बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल	
24/04/2070		05/07/2072		08/11/2074		24/08/2077		10/05/2079	
05/07/2072		08/11/2074		24/08/2077		10/05/2079		20/03/2081	
केतु	05/08/2070	चंद्र	31/10/2072	शुक्र	15/04/2075	सूर्य	22/10/2077	मंगल	19/07/2079
चंद्र	24/11/2070	बुध	05/03/2073	सूर्य	21/07/2075	मंगल	26/12/2077	गुरु	03/10/2079
बुध	22/03/2071	शुक्र	16/07/2073	मंगल	04/11/2075	गुरु	06/03/2078	शनि	24/12/2079
शुक्र	24/07/2071	सूर्य	05/10/2073	गुरु	26/02/2076	शनि	20/05/2078	केतु	21/03/2080
सूर्य	09/10/2071	मंगल	02/01/2074	शनि	28/06/2076	केतु	08/08/2078	चंद्र	23/06/2080
मंगल	31/12/2071	गुरु	08/04/2074	केतु	07/11/2076	चंद्र	02/11/2078	बुध	01/10/2080
गुरु	30/03/2072	शनि	20/07/2074	चंद्र	28/03/2077	बुध	02/02/2079	शुक्र	14/01/2081
शनि	05/07/2072	केतु	08/11/2074	बुध	24/08/2077	शुक्र	10/05/2079	सूर्य	20/03/2081

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध	
20/03/2081		26/03/2083		28/05/2085		25/09/2087		20/03/2090	
26/03/2083		28/05/2085		25/09/2087		20/03/2090		07/11/2092	
गुरु	10/06/2081	शनि	30/06/2083	केतु	15/09/2085	चंद्र	28/01/2088	बुध	08/08/2090
शनि	07/09/2081	केतु	11/10/2083	चंद्र	10/01/2086	बुध	09/06/2088	शुक्र	05/01/2091
केतु	11/12/2081	चंद्र	28/01/2084	बुध	15/05/2086	शुक्र	28/10/2088	सूर्य	06/04/2091
चंद्र	23/03/2082	बुध	24/05/2084	शुक्र	24/09/2086	सूर्य	22/01/2089	मंगल	15/07/2091
बुध	09/07/2082	शुक्र	24/09/2084	सूर्य	13/12/2086	मंगल	26/04/2089	गुरु	31/10/2091
शुक्र	31/10/2082	सूर्य	08/12/2084	मंगल	11/03/2087	गुरु	05/08/2089	शनि	24/02/2092
सूर्य	09/01/2083	मंगल	28/02/2085	गुरु	15/06/2087	शनि	23/11/2089	केतु	28/06/2092
मंगल	26/03/2083	गुरु	28/05/2085	शनि	25/09/2087	केतु	20/03/2090	चंद्र	07/11/2092

सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु	
07/11/2092		23/11/2093		13/01/2095		07/04/2096		05/08/2097	
23/11/2093		13/01/2095		07/04/2096		05/08/2097		07/01/2099	
सूर्य	14/12/2092	मंगल	05/01/2094	गुरु	05/03/2095	शनि	05/06/2096	केतु	11/10/2097
मंगल	22/01/2093	गुरु	21/02/2094	शनि	28/04/2095	केतु	07/08/2096	चंद्र	22/12/2097
गुरु	06/03/2093	शनि	12/04/2094	केतु	25/06/2095	चंद्र	12/10/2096	बुध	08/03/2098
शनि	21/04/2093	केतु	05/06/2094	चंद्र	26/08/2095	बुध	23/12/2096	शुक्र	28/05/2098
केतु	09/06/2093	चंद्र	01/08/2094	बुध	31/10/2095	शुक्र	08/03/2097	सूर्य	16/07/2098
चंद्र	31/07/2093	बुध	01/10/2094	शुक्र	09/01/2096	सूर्य	23/04/2097	मंगल	08/09/2098
बुध	25/09/2093	शुक्र	05/12/2094	सूर्य	21/02/2096	मंगल	12/06/2097	गुरु	05/11/2098
शुक्र	23/11/2093	सूर्य	13/01/2095	मंगल	07/04/2096	गुरु	05/08/2097	शनि	07/01/2099

सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु	
07/01/2099		15/07/2100		24/02/2102		09/11/2103		05/02/2105	
15/07/2100		24/02/2102		09/11/2103		05/02/2105		11/06/2106	
चंद्र	24/03/2099	बुध	09/10/2100	शुक्र	01/06/2102	मंगल	26/12/2103	गुरु	01/04/2105
बुध	13/06/2099	शुक्र	09/01/2101	सूर्य	30/07/2102	गुरु	15/02/2104	शनि	30/05/2105
शुक्र	07/09/2099	सूर्य	05/03/2101	मंगल	02/10/2102	शनि	10/04/2104	केतु	01/08/2105
सूर्य	30/10/2099	मंगल	05/05/2101	गुरु	11/12/2102	केतु	07/06/2104	चंद्र	08/10/2105
मंगल	26/12/2099	गुरु	10/07/2101	शनि	24/02/2103	चंद्र	09/08/2104	बुध	19/12/2105
गुरु	26/02/2100	शनि	19/09/2101	केतु	16/05/2103	बुध	14/10/2104	शुक्र	05/03/2106
शनि	04/05/2100	केतु	05/12/2101	चंद्र	10/08/2103	शुक्र	24/12/2104	सूर्य	21/04/2106
केतु	15/07/2100	चंद्र	24/02/2102	बुध	09/11/2103	सूर्य	05/02/2105	मंगल	11/06/2106

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 4 मास 29 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
06/07/1998		05/12/1999		06/04/2011		05/12/2015		05/04/2029	
05/12/1999		06/04/2011		05/12/2015		05/04/2029		05/04/2033	
	00/00/0000	बुध	14/07/2001	केतु	14/07/2011	शुक्र	24/02/2018	सूर्य	17/06/2029
	00/00/0000	केतु	12/03/2002	शुक्र	23/04/2012	सूर्य	26/10/2018	चंद्र	17/10/2029
	00/00/0000	शुक्र	31/01/2004	सूर्य	18/07/2012	चंद्र	05/12/2019	मंगल	10/01/2030
	00/00/0000	सूर्य	25/08/2004	चंद्र	07/12/2012	मंगल	14/09/2020	राहु	18/08/2030
	00/00/0000	चंद्र	05/08/2005	मंगल	16/03/2013	राहु	15/09/2022	गुरु	28/02/2031
	00/00/0000	मंगल	04/04/2006	राहु	27/11/2013	गुरु	25/06/2024	शनि	18/10/2031
	00/00/0000	राहु	16/12/2007	गुरु	12/07/2014	शनि	05/08/2026	बुध	12/05/2032
	06/07/1998	गुरु	19/06/2009	शनि	08/04/2015	बुध	25/06/2028	केतु	05/08/2032
गुरु	05/12/1999	शनि	06/04/2011	बुध	05/12/2015	केतु	05/04/2029	शुक्र	05/04/2033

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
05/04/2033		05/12/2039		05/08/2044		05/08/2056		06/04/2067	
05/12/2039		05/08/2044		05/08/2056		06/04/2067		06/07/2078	
चंद्र	25/10/2033	मंगल	14/03/2040	राहु	24/05/2046	गुरु	06/01/2058	शनि	07/04/2069
मंगल	16/03/2034	राहु	25/11/2040	गुरु	30/12/2047	शनि	15/09/2059	बुध	23/01/2071
राहु	17/03/2035	गुरु	10/07/2041	शनि	23/11/2049	बुध	20/03/2061	केतु	20/10/2071
गुरु	04/02/2036	शनि	06/04/2042	बुध	06/08/2051	केतु	02/11/2061	शुक्र	29/11/2073
शनि	24/02/2037	बुध	03/12/2042	केतु	17/04/2052	शुक्र	14/08/2063	सूर्य	18/07/2074
बुध	04/02/2038	केतु	13/03/2043	शुक्र	18/04/2054	सूर्य	25/02/2064	चंद्र	08/08/2075
केतु	26/06/2038	शुक्र	22/12/2043	सूर्य	23/11/2054	चंद्र	14/01/2065	मंगल	04/05/2076
शुक्र	06/08/2039	सूर्य	16/03/2044	चंद्र	23/11/2055	मंगल	30/08/2065	राहु	29/03/2078
सूर्य	05/12/2039	चंद्र	05/08/2044	मंगल	05/08/2056	राहु	06/04/2067	गुरु	06/07/2078

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
06/07/1998		05/12/1999		14/07/2001		12/03/2002		31/01/2004	
05/12/1999		14/07/2001		12/03/2002		31/01/2004		25/08/2004	
	06/07/1998	बुध	26/02/2000	केतु	28/07/2001	शुक्र	05/07/2002	सूर्य	11/02/2004
शनि	24/09/1998	केतु	01/04/2000	शुक्र	06/09/2001	सूर्य	09/08/2002	चंद्र	28/02/2004
बुध	21/12/1998	शुक्र	07/07/2000	सूर्य	18/09/2001	चंद्र	05/10/2002	मंगल	11/03/2004
केतु	26/01/1999	सूर्य	06/08/2000	चंद्र	08/10/2001	मंगल	15/11/2002	राहु	11/04/2004
शुक्र	09/05/1999	चंद्र	24/09/2000	मंगल	22/10/2001	राहु	26/02/2003	गुरु	09/05/2004
सूर्य	08/06/1999	मंगल	28/10/2000	राहु	28/11/2001	गुरु	29/05/2003	शनि	10/06/2004
चंद्र	30/07/1999	राहु	24/01/2001	गुरु	30/12/2001	शनि	15/09/2003	बुध	10/07/2004
मंगल	04/09/1999	गुरु	12/04/2001	शनि	06/02/2002	बुध	22/12/2003	केतु	22/07/2004
राहु	05/12/1999	शनि	14/07/2001	बुध	12/03/2002	केतु	31/01/2004	शुक्र	25/08/2004

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
25/08/2004		05/08/2005		04/04/2006		16/12/2007		19/06/2009	
05/08/2005		04/04/2006		16/12/2007		19/06/2009		06/04/2011	
चंद्र	23/09/2004	मंगल	19/08/2005	राहु	06/07/2006	गुरु	27/02/2008	शनि	01/10/2009
मंगल	13/10/2004	राहु	24/09/2005	गुरु	27/09/2006	शनि	25/05/2008	बुध	02/01/2010
राहु	04/12/2004	गुरु	27/10/2005	शनि	03/01/2007	बुध	11/08/2008	केतु	09/02/2010
गुरु	19/01/2005	शनि	04/12/2005	बुध	01/04/2007	केतु	12/09/2008	शुक्र	30/05/2010
शनि	14/03/2005	बुध	07/01/2006	केतु	07/05/2007	शुक्र	13/12/2008	सूर्य	01/07/2010
बुध	02/05/2005	केतु	21/01/2006	शुक्र	19/08/2007	सूर्य	10/01/2009	चंद्र	25/08/2010
केतु	22/05/2005	शुक्र	02/03/2006	सूर्य	19/09/2007	चंद्र	25/02/2009	मंगल	02/10/2010
शुक्र	19/07/2005	सूर्य	15/03/2006	चंद्र	09/11/2007	मंगल	29/03/2009	राहु	09/01/2011
सूर्य	05/08/2005	चंद्र	04/04/2006	मंगल	16/12/2007	राहु	19/06/2009	गुरु	06/04/2011

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
06/04/2011		14/07/2011		23/04/2012		18/07/2012		07/12/2012	
14/07/2011		23/04/2012		18/07/2012		07/12/2012		16/03/2013	
केतु	12/04/2011	शुक्र	31/08/2011	सूर्य	28/04/2012	चंद्र	29/07/2012	मंगल	12/12/2012
शुक्र	28/04/2011	सूर्य	14/09/2011	चंद्र	05/05/2012	मंगल	07/08/2012	राहु	27/12/2012
सूर्य	03/05/2011	चंद्र	08/10/2011	मंगल	10/05/2012	राहु	28/08/2012	गुरु	10/01/2013
चंद्र	12/05/2011	मंगल	24/10/2011	राहु	23/05/2012	गुरु	16/09/2012	शनि	25/01/2013
मंगल	17/05/2011	राहु	06/12/2011	गुरु	03/06/2012	शनि	09/10/2012	बुध	08/02/2013
राहु	01/06/2011	गुरु	13/01/2012	शनि	16/06/2012	बुध	29/10/2012	केतु	14/02/2013
गुरु	15/06/2011	शनि	27/02/2012	बुध	28/06/2012	केतु	06/11/2012	शुक्र	03/03/2013
शनि	30/06/2011	बुध	07/04/2012	केतु	03/07/2012	शुक्र	30/11/2012	सूर्य	08/03/2013
बुध	14/07/2011	केतु	23/04/2012	शुक्र	18/07/2012	सूर्य	07/12/2012	चंद्र	16/03/2013

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
16/03/2013		27/11/2013		12/07/2014		08/04/2015		05/12/2015	
27/11/2013		12/07/2014		08/04/2015		05/12/2015		24/02/2018	
राहु	23/04/2013	गुरु	27/12/2013	शनि	24/08/2014	बुध	12/05/2015	शुक्र	19/04/2016
गुरु	28/05/2013	शनि	01/02/2014	बुध	01/10/2014	केतु	26/05/2015	सूर्य	29/05/2016
शनि	07/07/2013	बुध	05/03/2014	केतु	17/10/2014	शुक्र	05/07/2015	चंद्र	05/08/2016
बुध	12/08/2013	केतु	19/03/2014	शुक्र	01/12/2014	सूर्य	18/07/2015	मंगल	21/09/2016
केतु	27/08/2013	शुक्र	25/04/2014	सूर्य	14/12/2014	चंद्र	07/08/2015	राहु	21/01/2017
शुक्र	09/10/2013	सूर्य	07/05/2014	चंद्र	06/01/2015	मंगल	21/08/2015	गुरु	09/05/2017
सूर्य	22/10/2013	चंद्र	26/05/2014	मंगल	21/01/2015	राहु	26/09/2015	शनि	15/09/2017
चंद्र	12/11/2013	मंगल	08/06/2014	राहु	03/03/2015	गुरु	28/10/2015	बुध	08/01/2018
मंगल	27/11/2013	राहु	12/07/2014	गुरु	08/04/2015	शनि	05/12/2015	केतु	24/02/2018

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
24/02/2018		26/10/2018		05/12/2019		14/09/2020		15/09/2022	
26/10/2018		05/12/2019		14/09/2020		15/09/2022		25/06/2024	
सूर्य	08/03/2018	चंद्र	28/11/2018	मंगल	22/12/2019	राहु	02/01/2021	गुरु	11/12/2022
चंद्र	29/03/2018	मंगल	22/12/2018	राहु	03/02/2020	गुरु	09/04/2021	शनि	23/03/2023
मंगल	12/04/2018	राहु	21/02/2019	गुरु	11/03/2020	शनि	03/08/2021	बुध	23/06/2023
राहु	18/05/2018	गुरु	16/04/2019	शनि	25/04/2020	बुध	15/11/2021	केतु	31/07/2023
गुरु	20/06/2018	शनि	19/06/2019	बुध	05/06/2020	केतु	27/12/2021	शुक्र	16/11/2023
शनि	28/07/2018	बुध	16/08/2019	केतु	21/06/2020	शुक्र	28/04/2022	सूर्य	19/12/2023
बुध	01/09/2018	केतु	08/09/2019	शुक्र	08/08/2020	सूर्य	04/06/2022	चंद्र	11/02/2024
केतु	15/09/2018	शुक्र	15/11/2019	सूर्य	22/08/2020	चंद्र	03/08/2022	मंगल	20/03/2024
शुक्र	26/10/2018	सूर्य	05/12/2019	चंद्र	14/09/2020	मंगल	15/09/2022	राहु	25/06/2024

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
25/06/2024		05/08/2026		25/06/2028		05/04/2029		17/06/2029	
05/08/2026		25/06/2028		05/04/2029		17/06/2029		17/10/2029	
शनि	25/10/2024	बुध	11/11/2026	केतु	12/07/2028	सूर्य	09/04/2029	चंद्र	28/06/2029
बुध	12/02/2025	केतु	21/12/2026	शुक्र	28/08/2028	चंद्र	15/04/2029	मंगल	05/07/2029
केतु	29/03/2025	शुक्र	15/04/2027	सूर्य	11/09/2028	मंगल	19/04/2029	राहु	23/07/2029
शुक्र	04/08/2025	सूर्य	20/05/2027	चंद्र	05/10/2028	राहु	30/04/2029	गुरु	08/08/2029
सूर्य	12/09/2025	चंद्र	16/07/2027	मंगल	22/10/2028	गुरु	10/05/2029	शनि	27/08/2029
चंद्र	15/11/2025	मंगल	26/08/2027	राहु	03/12/2028	शनि	22/05/2029	बुध	14/09/2029
मंगल	30/12/2025	राहु	07/12/2027	गुरु	10/01/2029	बुध	01/06/2029	केतु	21/09/2029
राहु	25/04/2026	गुरु	08/03/2028	शनि	24/02/2029	केतु	05/06/2029	शुक्र	11/10/2029
गुरु	05/08/2026	शनि	25/06/2028	बुध	05/04/2029	शुक्र	17/06/2029	सूर्य	17/10/2029

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
17/10/2029		10/01/2030		18/08/2030		28/02/2031		18/10/2031	
10/01/2030		18/08/2030		28/02/2031		18/10/2031		12/05/2032	
मंगल	22/10/2029	राहु	12/02/2030	गुरु	13/09/2030	शनि	06/04/2031	बुध	16/11/2031
राहु	04/11/2029	गुरु	14/03/2030	शनि	13/10/2030	बुध	09/05/2031	केतु	28/11/2031
गुरु	15/11/2029	शनि	17/04/2030	बुध	10/11/2030	केतु	22/05/2031	शुक्र	02/01/2032
शनि	29/11/2029	बुध	18/05/2030	केतु	21/11/2030	शुक्र	30/06/2031	सूर्य	12/01/2032
बुध	11/12/2029	केतु	31/05/2030	शुक्र	24/12/2030	सूर्य	11/07/2031	चंद्र	29/01/2032
केतु	16/12/2029	शुक्र	07/07/2030	सूर्य	03/01/2031	चंद्र	31/07/2031	मंगल	10/02/2032
शुक्र	30/12/2029	सूर्य	18/07/2030	चंद्र	19/01/2031	मंगल	13/08/2031	राहु	12/03/2032
सूर्य	03/01/2030	चंद्र	05/08/2030	मंगल	30/01/2031	राहु	17/09/2031	गुरु	09/04/2032
चंद्र	10/01/2030	मंगल	18/08/2030	राहु	28/02/2031	गुरु	18/10/2031	शनि	12/05/2032

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
12/05/2032		05/08/2032		05/04/2033		25/10/2033		16/03/2034	
05/08/2032		05/04/2033		25/10/2033		16/03/2034		17/03/2035	
केतु	17/05/2032	शुक्र	14/09/2032	चंद्र	22/04/2033	मंगल	03/11/2033	राहु	10/05/2034
शुक्र	31/05/2032	सूर्य	27/09/2032	मंगल	04/05/2033	राहु	24/11/2033	गुरु	28/06/2034
सूर्य	04/06/2032	चंद्र	17/10/2032	राहु	04/06/2033	गुरु	13/12/2033	शनि	25/08/2034
चंद्र	11/06/2032	मंगल	31/10/2032	गुरु	01/07/2033	शनि	04/01/2034	बुध	15/10/2034
मंगल	16/06/2032	राहु	07/12/2032	शनि	02/08/2033	बुध	24/01/2034	केतु	06/11/2034
राहु	29/06/2032	गुरु	08/01/2033	बुध	31/08/2033	केतु	02/02/2034	शुक्र	06/01/2035
गुरु	10/07/2032	शनि	16/02/2033	केतु	11/09/2033	शुक्र	25/02/2034	सूर्य	24/01/2035
शनि	24/07/2032	बुध	22/03/2033	शुक्र	15/10/2033	सूर्य	05/03/2034	चंद्र	23/02/2035
बुध	05/08/2032	केतु	05/04/2033	सूर्य	25/10/2033	चंद्र	16/03/2034	मंगल	17/03/2035

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
17/03/2035		04/02/2036		24/02/2037		04/02/2038		26/06/2038	
04/02/2036		24/02/2037		04/02/2038		26/06/2038		06/08/2039	
गुरु	29/04/2035	शनि	05/04/2036	बुध	14/04/2037	केतु	12/02/2038	शुक्र	01/09/2038
शनि	19/06/2035	बुध	30/05/2036	केतु	04/05/2037	शुक्र	08/03/2038	सूर्य	22/09/2038
बुध	04/08/2035	केतु	21/06/2036	शुक्र	30/06/2037	सूर्य	15/03/2038	चंद्र	26/10/2038
केतु	23/08/2035	शुक्र	25/08/2036	सूर्य	18/07/2037	चंद्र	27/03/2038	मंगल	18/11/2038
शुक्र	16/10/2035	सूर्य	13/09/2036	चंद्र	15/08/2037	मंगल	04/04/2038	राहु	18/01/2039
सूर्य	02/11/2035	चंद्र	15/10/2036	मंगल	04/09/2037	राहु	25/04/2038	गुरु	13/03/2039
चंद्र	29/11/2035	मंगल	07/11/2036	राहु	26/10/2037	गुरु	14/05/2038	शनि	16/05/2039
मंगल	18/12/2035	राहु	03/01/2037	गुरु	11/12/2037	शनि	06/06/2038	बुध	13/07/2039
राहु	04/02/2036	गुरु	24/02/2037	शनि	04/02/2038	बुध	26/06/2038	केतु	06/08/2039

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
06/08/2039		05/12/2039		14/03/2040		25/11/2040		10/07/2041	
05/12/2039		14/03/2040		25/11/2040		10/07/2041		06/04/2042	
सूर्य	12/08/2039	मंगल	11/12/2039	राहु	21/04/2040	गुरु	25/12/2040	शनि	22/08/2041
चंद्र	22/08/2039	राहु	26/12/2039	गुरु	25/05/2040	शनि	30/01/2041	बुध	29/09/2041
मंगल	29/08/2039	गुरु	08/01/2040	शनि	05/07/2040	बुध	03/03/2041	केतु	14/10/2041
राहु	16/09/2039	शनि	24/01/2040	बुध	10/08/2040	केतु	16/03/2041	शुक्र	28/11/2041
गुरु	02/10/2039	बुध	07/02/2040	केतु	25/08/2040	शुक्र	23/04/2041	सूर्य	12/12/2041
शनि	22/10/2039	केतु	13/02/2040	शुक्र	07/10/2040	सूर्य	04/05/2041	चंद्र	03/01/2042
बुध	08/11/2039	शुक्र	01/03/2040	सूर्य	19/10/2040	चंद्र	23/05/2041	मंगल	19/01/2042
केतु	15/11/2039	सूर्य	06/03/2040	चंद्र	10/11/2040	मंगल	06/06/2041	राहु	01/03/2042
शुक्र	05/12/2039	चंद्र	14/03/2040	मंगल	25/11/2040	राहु	10/07/2041	गुरु	06/04/2042

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
06/04/2042		03/12/2042		13/03/2043		22/12/2043		16/03/2044	
03/12/2042		13/03/2043		22/12/2043		16/03/2044		05/08/2044	
बुध	10/05/2042	केतु	09/12/2042	शुक्र	29/04/2043	सूर्य	26/12/2043	चंद्र	28/03/2044
केतु	24/05/2042	शुक्र	26/12/2042	सूर्य	13/05/2043	चंद्र	02/01/2044	मंगल	05/04/2044
शुक्र	03/07/2042	सूर्य	30/12/2042	चंद्र	06/06/2043	मंगल	07/01/2044	राहु	26/04/2044
सूर्य	15/07/2042	चंद्र	08/01/2043	मंगल	22/06/2043	राहु	20/01/2044	गुरु	15/05/2044
चंद्र	04/08/2042	मंगल	14/01/2043	राहु	04/08/2043	गुरु	31/01/2044	शनि	07/06/2044
मंगल	18/08/2042	राहु	28/01/2043	गुरु	11/09/2043	शनि	14/02/2044	बुध	27/06/2044
राहु	24/09/2042	गुरु	11/02/2043	शनि	26/10/2043	बुध	26/02/2044	केतु	05/07/2044
गुरु	26/10/2042	शनि	26/02/2043	बुध	05/12/2043	केतु	02/03/2044	शुक्र	29/07/2044
शनि	03/12/2042	बुध	13/03/2043	केतु	22/12/2043	शुक्र	16/03/2044	सूर्य	05/08/2044

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
05/08/2044		24/05/2046		30/12/2047		23/11/2049		06/08/2051	
24/05/2046		30/12/2047		23/11/2049		06/08/2051		17/04/2052	
राहु	12/11/2044	गुरु	10/08/2046	शनि	18/04/2048	बुध	19/02/2050	केतु	21/08/2051
गुरु	07/02/2045	शनि	11/11/2046	बुध	25/07/2048	केतु	27/03/2050	शुक्र	02/10/2051
शनि	22/05/2045	बुध	02/02/2047	केतु	03/09/2048	शुक्र	08/07/2050	सूर्य	15/10/2051
बुध	23/08/2045	केतु	08/03/2047	शुक्र	28/12/2048	सूर्य	08/08/2050	चंद्र	05/11/2051
केतु	01/10/2045	शुक्र	13/06/2047	सूर्य	01/02/2049	चंद्र	29/09/2050	मंगल	20/11/2051
शुक्र	18/01/2046	सूर्य	12/07/2047	चंद्र	31/03/2049	मंगल	04/11/2050	राहु	29/12/2051
सूर्य	20/02/2046	चंद्र	30/08/2047	मंगल	10/05/2049	राहु	06/02/2051	गुरु	01/02/2052
चंद्र	16/04/2046	मंगल	03/10/2047	राहु	22/08/2049	गुरु	29/04/2051	शनि	12/03/2052
मंगल	24/05/2046	राहु	30/12/2047	गुरु	23/11/2049	शनि	06/08/2051	बुध	17/04/2052

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
17/04/2052		18/04/2054		23/11/2054		23/11/2055		05/08/2056	
18/04/2054		23/11/2054		23/11/2055		05/08/2056		06/01/2058	
शुक्र	17/08/2052	सूर्य	29/04/2054	चंद्र	23/12/2054	मंगल	08/12/2055	गुरु	13/10/2056
सूर्य	23/09/2052	चंद्र	17/05/2054	मंगल	14/01/2055	राहु	16/01/2056	शनि	03/01/2057
चंद्र	22/11/2052	मंगल	30/05/2054	राहु	10/03/2055	गुरु	19/02/2056	बुध	18/03/2057
मंगल	04/01/2053	राहु	02/07/2054	गुरु	27/04/2055	शनि	30/03/2056	केतु	17/04/2057
राहु	24/04/2053	गुरु	31/07/2054	शनि	24/06/2055	बुध	05/05/2056	शुक्र	13/07/2057
गुरु	30/07/2053	शनि	04/09/2054	बुध	15/08/2055	केतु	20/05/2056	सूर्य	08/08/2057
शनि	23/11/2053	बुध	05/10/2054	केतु	05/09/2055	शुक्र	02/07/2056	चंद्र	20/09/2057
बुध	06/03/2054	केतु	17/10/2054	शुक्र	05/11/2055	सूर्य	15/07/2056	मंगल	20/10/2057
केतु	18/04/2054	शुक्र	23/11/2054	सूर्य	23/11/2055	चंद्र	05/08/2056	राहु	06/01/2058

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
06/01/2058		15/09/2059		20/03/2061		02/11/2061		14/08/2063	
15/09/2059		20/03/2061		02/11/2061		14/08/2063		25/02/2064	
शनि	14/04/2058	बुध	02/12/2059	केतु	02/04/2061	शुक्र	19/02/2062	सूर्य	24/08/2063
बुध	10/07/2058	केतु	04/01/2060	शुक्र	10/05/2061	सूर्य	23/03/2062	चंद्र	09/09/2063
केतु	15/08/2058	शुक्र	05/04/2060	सूर्य	22/05/2061	चंद्र	16/05/2062	मंगल	20/09/2063
शुक्र	26/11/2058	सूर्य	02/05/2060	चंद्र	10/06/2061	मंगल	23/06/2062	राहु	19/10/2063
सूर्य	27/12/2058	चंद्र	17/06/2060	मंगल	23/06/2061	राहु	29/09/2062	गुरु	14/11/2063
चंद्र	16/02/2059	मंगल	19/07/2060	राहु	27/07/2061	गुरु	24/12/2062	शनि	15/12/2063
मंगल	24/03/2059	राहु	10/10/2060	गुरु	26/08/2061	शनि	06/04/2063	बुध	12/01/2064
राहु	25/06/2059	गुरु	23/12/2060	शनि	01/10/2061	बुध	07/07/2063	केतु	23/01/2064
गुरु	15/09/2059	शनि	20/03/2061	बुध	02/11/2061	केतु	14/08/2063	शुक्र	25/02/2064

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
25/02/2064		14/01/2065		30/08/2065		06/04/2067		07/04/2069	
14/01/2065		30/08/2065		06/04/2067		07/04/2069		23/01/2071	
चंद्र	23/03/2064	मंगल	28/01/2065	राहु	25/11/2065	शनि	31/07/2067	बुध	09/07/2069
मंगल	11/04/2064	राहु	03/03/2065	गुरु	11/02/2066	बुध	12/11/2067	केतु	17/08/2069
राहु	29/05/2064	गुरु	02/04/2065	शनि	15/05/2066	केतु	24/12/2067	शुक्र	04/12/2069
गुरु	12/07/2064	शनि	08/05/2065	बुध	05/08/2066	शुक्र	24/04/2068	सूर्य	06/01/2070
शनि	01/09/2064	बुध	09/06/2065	केतु	09/09/2066	सूर्य	31/05/2068	चंद्र	01/03/2070
बुध	17/10/2064	केतु	22/06/2065	शुक्र	15/12/2066	चंद्र	31/07/2068	मंगल	08/04/2070
केतु	05/11/2064	शुक्र	30/07/2065	सूर्य	13/01/2067	मंगल	12/09/2068	राहु	16/07/2070
शुक्र	29/12/2064	सूर्य	11/08/2065	चंद्र	03/03/2067	राहु	31/12/2068	गुरु	11/10/2070
सूर्य	14/01/2065	चंद्र	30/08/2065	मंगल	06/04/2067	गुरु	07/04/2069	शनि	23/01/2071

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 8 वर्ष 11 मास 21 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
06/07/1998		28/06/2007		27/06/2017		27/06/2036		27/06/2048	
28/06/2007		27/06/2017		27/06/2036		27/06/2048		27/06/2069	
	00/00/0000	शनि	31/05/2008	गुरु	30/10/2020	राहु	27/10/2037	शुक्र	27/07/2052
	00/00/0000	गुरु	04/03/2010	राहु	10/12/2022	शुक्र	26/02/2040	सूर्य	26/09/2053
	06/07/1998	राहु	14/04/2011	शुक्र	20/08/2026	सूर्य	27/10/2040	चंद्र	27/08/2056
राहु	14/08/1999	शुक्र	24/03/2013	सूर्य	10/09/2027	चंद्र	27/06/2042	मंगल	18/03/2058
शुक्र	03/12/2002	सूर्य	13/10/2013	चंद्र	01/05/2030	मंगल	18/05/2043	बुध	07/07/2061
सूर्य	13/11/2003	चंद्र	05/03/2015	मंगल	27/09/2031	बुध	07/04/2045	शनि	17/06/2063
चंद्र	25/03/2006	मंगल	30/11/2015	बुध	23/09/2034	शनि	18/05/2046	गुरु	26/02/2067
मंगल	28/06/2007	बुध	27/06/2017	शनि	27/06/2036	गुरु	27/06/2048	राहु	27/06/2069

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
27/06/2069		28/06/2075		27/06/2090		27/06/2098	
28/06/2075		27/06/2090		27/06/2098		00/00/0000	
सूर्य	27/10/2069	चंद्र	27/07/2077	मंगल	30/01/2091	बुध	02/03/2101
चंद्र	27/08/2070	मंगल	06/09/2078	बुध	04/05/2092	शनि	28/09/2102
मंगल	05/02/2071	बुध	16/01/2081	शनि	29/01/2093	गुरु	24/09/2105
बुध	16/01/2072	शनि	07/06/2082	गुरु	27/06/2094	राहु	07/07/2106
शनि	06/08/2072	गुरु	26/01/2085	राहु	18/05/2095		00/00/0000
गुरु	27/08/2073	राहु	27/09/2086	शुक्र	06/12/2096		00/00/0000
राहु	27/04/2074	शुक्र	27/08/2089	सूर्य	17/05/2097		00/00/0000
शुक्र	28/06/2075	सूर्य	27/06/2090	चंद्र	27/06/2098		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
06/07/1998		14/08/1999		03/12/2002		13/11/2003		25/03/2006	
14/08/1999		03/12/2002		13/11/2003		25/03/2006		28/06/2007	
	00/00/0000	शुक्र	05/04/2000	सूर्य	22/12/2002	चंद्र	12/03/2004	मंगल	28/04/2006
	00/00/0000	सूर्य	11/06/2000	चंद्र	08/02/2003	मंगल	15/05/2004	बुध	09/07/2006
	06/07/1998	चंद्र	25/11/2000	मंगल	06/03/2003	बुध	28/09/2004	शनि	21/08/2006
चंद्र	03/09/1998	मंगल	23/02/2001	बुध	29/04/2003	शनि	16/12/2004	गुरु	10/11/2006
मंगल	24/10/1998	बुध	01/09/2001	शनि	31/05/2003	गुरु	17/05/2005	राहु	31/12/2006
बुध	10/02/1999	शनि	22/12/2001	गुरु	31/07/2003	राहु	21/08/2005	शुक्र	30/03/2007
शनि	14/04/1999	गुरु	22/07/2002	राहु	07/09/2003	शुक्र	05/02/2006	सूर्य	25/04/2007
गुरु	14/08/1999	राहु	03/12/2002	शुक्र	13/11/2003	सूर्य	25/03/2006	चंद्र	28/06/2007

शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
28/06/2007		31/05/2008		04/03/2010		14/04/2011		24/03/2013	
31/05/2008		04/03/2010		14/04/2011		24/03/2013		13/10/2013	
शनि	29/07/2007	गुरु	21/09/2008	राहु	18/04/2010	शुक्र	30/08/2011	सूर्य	05/04/2013
गुरु	26/09/2007	राहु	01/12/2008	शुक्र	06/07/2010	सूर्य	09/10/2011	चंद्र	03/05/2013
राहु	03/11/2007	शुक्र	05/04/2009	सूर्य	29/07/2010	चंद्र	15/01/2012	मंगल	18/05/2013
शुक्र	08/01/2008	सूर्य	11/05/2009	चंद्र	23/09/2010	मंगल	08/03/2012	बुध	19/06/2013
सूर्य	26/01/2008	चंद्र	08/08/2009	मंगल	23/10/2010	बुध	28/06/2012	शनि	08/07/2013
चंद्र	13/03/2008	मंगल	25/09/2009	बुध	26/12/2010	शनि	01/09/2012	गुरु	12/08/2013
मंगल	07/04/2008	बुध	04/01/2010	शनि	02/02/2011	गुरु	04/01/2013	राहु	04/09/2013
बुध	31/05/2008	शनि	04/03/2010	गुरु	14/04/2011	राहु	24/03/2013	शुक्र	13/10/2013

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु	
13/10/2013		05/03/2015		30/11/2015		27/06/2017		30/10/2020	
05/03/2015		30/11/2015		27/06/2017		30/10/2020		10/12/2022	
चंद्र	23/12/2013	मंगल	25/03/2015	बुध	29/02/2016	गुरु	28/01/2018	राहु	24/01/2021
मंगल	29/01/2014	बुध	06/05/2015	शनि	22/04/2016	राहु	12/06/2018	शुक्र	23/06/2021
बुध	19/04/2014	शनि	31/05/2015	गुरु	01/08/2016	शुक्र	05/02/2019	सूर्य	04/08/2021
शनि	05/06/2014	गुरु	18/07/2015	राहु	04/10/2016	सूर्य	14/04/2019	चंद्र	19/11/2021
गुरु	02/09/2014	राहु	17/08/2015	शुक्र	24/01/2017	चंद्र	30/09/2019	मंगल	16/01/2022
राहु	29/10/2014	शुक्र	08/10/2015	सूर्य	25/02/2017	मंगल	30/12/2019	बुध	17/05/2022
शुक्र	04/02/2015	सूर्य	24/10/2015	चंद्र	15/05/2017	बुध	09/07/2020	शनि	27/07/2022
सूर्य	05/03/2015	चंद्र	30/11/2015	मंगल	27/06/2017	शनि	30/10/2020	गुरु	10/12/2022

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
10/12/2022		20/08/2026		10/09/2027		01/05/2030		27/09/2031	
20/08/2026		10/09/2027		01/05/2030		27/09/2031		23/09/2034	
शुक्र	29/08/2023	सूर्य	11/09/2026	चंद्र	22/01/2028	मंगल	08/06/2030	बुध	17/03/2032
सूर्य	12/11/2023	चंद्र	03/11/2026	मंगल	02/04/2028	बुध	28/08/2030	शनि	26/06/2032
चंद्र	18/05/2024	मंगल	02/12/2026	बुध	01/09/2028	शनि	14/10/2030	गुरु	04/01/2033
मंगल	26/08/2024	बुध	01/02/2027	शनि	29/11/2028	गुरु	13/01/2031	राहु	05/05/2033
बुध	26/03/2025	शनि	08/03/2027	गुरु	18/05/2029	राहु	11/03/2031	शुक्र	04/12/2033
शनि	29/07/2025	गुरु	15/05/2027	राहु	02/09/2029	शुक्र	19/06/2031	सूर्य	03/02/2034
गुरु	23/03/2026	राहु	27/06/2027	शुक्र	08/03/2030	सूर्य	17/07/2031	चंद्र	04/07/2034
राहु	20/08/2026	शुक्र	10/09/2027	सूर्य	01/05/2030	चंद्र	27/09/2031	मंगल	23/09/2034

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
23/09/2034		27/06/2036		27/10/2037		26/02/2040		27/10/2040	
27/06/2036		27/10/2037		26/02/2040		27/10/2040		27/06/2042	
शनि	22/11/2034	राहु	20/08/2036	शुक्र	10/04/2038	सूर्य	11/03/2040	चंद्र	19/01/2041
गुरु	15/03/2035	शुक्र	23/11/2036	सूर्य	28/05/2038	चंद्र	13/04/2040	मंगल	05/03/2041
राहु	25/05/2035	सूर्य	20/12/2036	चंद्र	23/09/2038	मंगल	01/05/2040	बुध	09/06/2041
शुक्र	27/09/2035	चंद्र	25/02/2037	मंगल	25/11/2038	बुध	09/06/2040	शनि	04/08/2041
सूर्य	02/11/2035	मंगल	02/04/2037	बुध	08/04/2039	शनि	01/07/2040	गुरु	19/11/2041
चंद्र	30/01/2036	बुध	18/06/2037	शनि	26/06/2039	गुरु	13/08/2040	राहु	26/01/2042
मंगल	18/03/2036	शनि	02/08/2037	गुरु	23/11/2039	राहु	09/09/2040	शुक्र	24/05/2042
बुध	27/06/2036	गुरु	27/10/2037	राहु	26/02/2040	शुक्र	27/10/2040	सूर्य	27/06/2042

राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र	
27/06/2042		18/05/2043		07/04/2045		18/05/2046		27/06/2048	
18/05/2043		07/04/2045		18/05/2046		27/06/2048		27/07/2052	
मंगल	21/07/2042	बुध	04/09/2043	शनि	14/05/2045	गुरु	30/09/2046	शुक्र	13/04/2049
बुध	10/09/2042	शनि	06/11/2043	गुरु	25/07/2045	राहु	25/12/2046	सूर्य	05/07/2049
शनि	10/10/2042	गुरु	07/03/2044	राहु	08/09/2045	शुक्र	24/05/2047	चंद्र	28/01/2050
गुरु	07/12/2042	राहु	22/05/2044	शुक्र	26/11/2045	सूर्य	06/07/2047	मंगल	18/05/2050
राहु	12/01/2043	शुक्र	04/10/2044	सूर्य	18/12/2045	चंद्र	21/10/2047	बुध	08/01/2051
शुक्र	16/03/2043	सूर्य	11/11/2044	चंद्र	13/02/2046	मंगल	17/12/2047	शनि	26/05/2051
सूर्य	03/04/2043	चंद्र	15/02/2045	मंगल	15/03/2046	बुध	16/04/2048	गुरु	12/02/2052
चंद्र	18/05/2043	मंगल	07/04/2045	बुध	18/05/2046	शनि	27/06/2048	राहु	27/07/2052

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि	
27/07/2052		26/09/2053		27/08/2056		18/03/2058		07/07/2061	
26/09/2053		27/08/2056		18/03/2058		07/07/2061		17/06/2063	
सूर्य	20/08/2052	चंद्र	21/02/2054	मंगल	08/10/2056	बुध	24/09/2058	शनि	11/09/2061
चंद्र	18/10/2052	मंगल	11/05/2054	बुध	05/01/2057	शनि	14/01/2059	गुरु	14/01/2062
मंगल	19/11/2052	बुध	26/10/2054	शनि	27/02/2057	गुरु	14/08/2059	राहु	03/04/2062
बुध	25/01/2053	शनि	02/02/2055	गुरु	07/06/2057	राहु	26/12/2059	शुक्र	19/08/2062
शनि	05/03/2053	गुरु	08/08/2055	राहु	09/08/2057	शुक्र	17/08/2060	सूर्य	27/09/2062
गुरु	19/05/2053	राहु	04/12/2055	शुक्र	27/11/2057	सूर्य	23/10/2060	चंद्र	04/01/2063
राहु	05/07/2053	शुक्र	28/06/2056	सूर्य	29/12/2057	चंद्र	09/04/2061	मंगल	26/02/2063
शुक्र	26/09/2053	सूर्य	27/08/2056	चंद्र	18/03/2058	मंगल	07/07/2061	बुध	17/06/2063

शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
17/06/2063		26/02/2067		27/06/2069		27/10/2069		27/08/2070	
26/02/2067		27/06/2069		27/10/2069		27/08/2070		05/02/2071	
गुरु	10/02/2064	राहु	31/05/2067	सूर्य	04/07/2069	चंद्र	08/12/2069	मंगल	08/09/2070
राहु	09/07/2064	शुक्र	13/11/2067	चंद्र	21/07/2069	मंगल	31/12/2069	बुध	04/10/2070
शुक्र	28/03/2065	सूर्य	31/12/2067	मंगल	30/07/2069	बुध	16/02/2070	शनि	19/10/2070
सूर्य	11/06/2065	चंद्र	27/04/2068	बुध	18/08/2069	शनि	17/03/2070	गुरु	16/11/2070
चंद्र	15/12/2065	मंगल	29/06/2068	शनि	29/08/2069	गुरु	09/05/2070	राहु	04/12/2070
मंगल	25/03/2066	बुध	10/11/2068	गुरु	20/09/2069	राहु	12/06/2070	शुक्र	05/01/2071
बुध	24/10/2066	शनि	28/01/2069	राहु	03/10/2069	शुक्र	10/08/2070	सूर्य	14/01/2071
शनि	26/02/2067	गुरु	27/06/2069	शुक्र	27/10/2069	सूर्य	27/08/2070	चंद्र	05/02/2071

सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र	
05/02/2071		16/01/2072		06/08/2072		27/08/2073		27/04/2074	
16/01/2072		06/08/2072		27/08/2073		27/04/2074		28/06/2075	
बुध	01/04/2071	शनि	04/02/2072	गुरु	13/10/2072	राहु	23/09/2073	शुक्र	19/07/2074
शनि	03/05/2071	गुरु	11/03/2072	राहु	25/11/2072	शुक्र	09/11/2073	सूर्य	12/08/2074
गुरु	02/07/2071	राहु	02/04/2072	शुक्र	08/02/2073	सूर्य	23/11/2073	चंद्र	10/10/2074
राहु	10/08/2071	शुक्र	12/05/2072	सूर्य	01/03/2073	चंद्र	27/12/2073	मंगल	11/11/2074
शुक्र	16/10/2071	सूर्य	23/05/2072	चंद्र	24/04/2073	मंगल	14/01/2074	बुध	17/01/2075
सूर्य	04/11/2071	चंद्र	20/06/2072	मंगल	23/05/2073	बुध	21/02/2074	शनि	25/02/2075
चंद्र	22/12/2071	मंगल	05/07/2072	बुध	22/07/2073	शनि	16/03/2074	गुरु	11/05/2075
मंगल	16/01/2072	बुध	06/08/2072	शनि	27/08/2073	गुरु	27/04/2074	राहु	28/06/2075

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु	
28/06/2075		27/07/2077		06/09/2078		16/01/2081		07/06/2082	
27/07/2077		06/09/2078		16/01/2081		07/06/2082		26/01/2085	
चंद्र	11/10/2075	मंगल	27/08/2077	बुध	20/01/2079	शनि	04/03/2081	गुरु	24/11/2082
मंगल	07/12/2075	बुध	29/10/2077	शनि	10/04/2079	गुरु	01/06/2081	राहु	11/03/2083
बुध	04/04/2076	शनि	06/12/2077	गुरु	09/09/2079	राहु	27/07/2081	शुक्र	14/09/2083
शनि	14/06/2076	गुरु	15/02/2078	राहु	13/12/2079	शुक्र	03/11/2081	सूर्य	07/11/2083
गुरु	26/10/2076	राहु	01/04/2078	शुक्र	29/05/2080	सूर्य	01/12/2081	चंद्र	19/03/2084
राहु	18/01/2077	शुक्र	19/06/2078	सूर्य	16/07/2080	चंद्र	10/02/2082	मंगल	30/05/2084
शुक्र	15/06/2077	सूर्य	12/07/2078	चंद्र	13/11/2080	मंगल	19/03/2082	बुध	29/10/2084
सूर्य	27/07/2077	चंद्र	06/09/2078	मंगल	16/01/2081	बुध	07/06/2082	शनि	26/01/2085

चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध	
26/01/2085		27/09/2086		27/08/2089		27/06/2090		30/01/2091	
27/09/2086		27/08/2089		27/06/2090		30/01/2091		04/05/2092	
राहु	03/04/2085	शुक्र	22/04/2087	सूर्य	13/09/2089	मंगल	13/07/2090	बुध	12/04/2091
शुक्र	31/07/2085	सूर्य	20/06/2087	चंद्र	25/10/2089	बुध	16/08/2090	शनि	25/05/2091
सूर्य	03/09/2085	चंद्र	15/11/2087	मंगल	17/11/2089	शनि	05/09/2090	गुरु	14/08/2091
चंद्र	26/11/2085	मंगल	02/02/2088	बुध	04/01/2090	गुरु	13/10/2090	राहु	04/10/2091
मंगल	10/01/2086	बुध	18/07/2088	शनि	01/02/2090	राहु	07/11/2090	शुक्र	01/01/2092
बुध	16/04/2086	शनि	25/10/2088	गुरु	26/03/2090	शुक्र	19/12/2090	सूर्य	27/01/2092
शनि	11/06/2086	गुरु	01/05/2089	राहु	29/04/2090	सूर्य	31/12/2090	चंद्र	31/03/2092
गुरु	27/09/2086	राहु	27/08/2089	शुक्र	27/06/2090	चंद्र	30/01/2091	मंगल	04/05/2092

मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
04/05/2092		29/01/2093		27/06/2094		18/05/2095		06/12/2096	
29/01/2093		27/06/2094		18/05/2095		06/12/2096		17/05/2097	
शनि	29/05/2092	गुरु	30/04/2093	राहु	02/08/2094	शुक्र	05/09/2095	सूर्य	15/12/2096
गुरु	15/07/2092	राहु	26/06/2093	शुक्र	04/10/2094	सूर्य	07/10/2095	चंद्र	07/01/2097
राहु	14/08/2092	शुक्र	04/10/2093	सूर्य	23/10/2094	चंद्र	25/12/2095	मंगल	19/01/2097
शुक्र	06/10/2092	सूर्य	01/11/2093	चंद्र	07/12/2094	मंगल	05/02/2096	बुध	13/02/2097
सूर्य	21/10/2092	चंद्र	12/01/2094	मंगल	31/12/2094	बुध	04/05/2096	शनि	28/02/2097
चंद्र	28/11/2092	मंगल	19/02/2094	बुध	20/02/2095	शनि	26/06/2096	गुरु	29/03/2097
मंगल	18/12/2092	बुध	11/05/2094	शनि	22/03/2095	गुरु	04/10/2096	राहु	16/04/2097
बुध	29/01/2093	शनि	27/06/2094	गुरु	18/05/2095	राहु	06/12/2096	शुक्र	17/05/2097

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 0 वर्ष 5 मास 11 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
06/07/1998		17/12/1998		17/12/2003		16/12/2009		16/12/2016	
17/12/1998		17/12/2003		16/12/2009		16/12/2016		16/12/2024	
	00/00/0000	भद्रि	27/08/1999	उल्क	16/12/2004	सिद्ध	28/04/2011	संक	27/09/2018
	00/00/0000	उल्क	27/06/2000	सिद्ध	15/02/2006	संक	16/11/2012	मंग	17/12/2018
	00/00/0000	सिद्ध	17/06/2001	संक	17/06/2007	मंग	26/01/2013	पिंग	28/05/2019
	00/00/0000	संक	28/07/2002	मंग	17/08/2007	पिंग	17/06/2013	धांय	27/01/2020
	00/00/0000	मंग	16/09/2002	पिंग	17/12/2007	धांय	16/01/2014	भ्राम	16/12/2020
	06/07/1998	पिंग	27/12/2002	धांय	17/06/2008	भ्राम	27/10/2014	भद्रि	26/01/2022
पिंग	17/08/1998	धांय	28/05/2003	भ्राम	15/02/2009	भद्रि	17/10/2015	उल्क	28/05/2023
धांय	17/12/1998	भ्राम	17/12/2003	भद्रि	16/12/2009	उल्क	16/12/2016	सिद्ध	16/12/2024

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
16/12/2024		16/12/2025		17/12/2027		17/12/2030		17/12/2034	
16/12/2025		17/12/2027		17/12/2030		17/12/2034		17/12/2039	
मंग	26/12/2024	पिंग	26/01/2026	धांय	17/03/2028	भ्राम	28/05/2031	भद्रि	27/08/2035
पिंग	16/01/2025	धांय	28/03/2026	भ्राम	17/07/2028	भद्रि	17/12/2031	उल्क	27/06/2036
धांय	15/02/2025	भ्राम	17/06/2026	भद्रि	16/12/2028	उल्क	16/08/2032	सिद्ध	17/06/2037
भ्राम	28/03/2025	भद्रि	27/09/2026	उल्क	17/06/2029	सिद्ध	28/05/2033	संक	28/07/2038
भद्रि	17/05/2025	उल्क	26/01/2027	सिद्ध	16/01/2030	संक	17/04/2034	मंग	16/09/2038
उल्क	17/07/2025	सिद्ध	17/06/2027	संक	16/09/2030	मंग	28/05/2034	पिंग	27/12/2038
सिद्ध	26/09/2025	संक	27/11/2027	मंग	17/10/2030	पिंग	17/08/2034	धांय	28/05/2039
संक	16/12/2025	मंग	17/12/2027	पिंग	17/12/2030	धांय	17/12/2034	भ्राम	17/12/2039

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
17/12/2039		16/12/2045		16/12/2052		16/12/2060		16/12/2061	
16/12/2045		16/12/2052		16/12/2060		16/12/2061		17/12/2063	
उल्क	16/12/2040	सिद्ध	28/04/2047	संक	27/09/2054	मंग	26/12/2060	पिंग	26/01/2062
सिद्ध	15/02/2042	संक	16/11/2048	मंग	17/12/2054	पिंग	16/01/2061	धांय	28/03/2062
संक	17/06/2043	मंग	26/01/2049	पिंग	28/05/2055	धांय	15/02/2061	भ्राम	17/06/2062
मंग	17/08/2043	पिंग	17/06/2049	धांय	27/01/2056	भ्राम	28/03/2061	भद्रि	27/09/2062
पिंग	17/12/2043	धांय	16/01/2050	भ्राम	16/12/2056	भद्रि	17/05/2061	उल्क	26/01/2063
धांय	17/06/2044	भ्राम	27/10/2050	भद्रि	26/01/2058	उल्क	17/07/2061	सिद्ध	17/06/2063
भ्राम	15/02/2045	भद्रि	17/10/2051	उल्क	28/05/2059	सिद्ध	26/09/2061	संक	27/11/2063
भद्रि	16/12/2045	उल्क	16/12/2052	सिद्ध	16/12/2060	संक	16/12/2061	मंग	17/12/2063

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
17/12/2063		17/12/2066		17/12/2070		17/12/2075		16/12/2081	
17/12/2066		17/12/2070		17/12/2075		16/12/2081		16/12/2088	
धांय	17/03/2064	भ्राम	28/05/2067	भद्रि	27/08/2071	उल्क	16/12/2076	सिद्ध	28/04/2083
भ्राम	17/07/2064	भद्रि	17/12/2067	उल्क	27/06/2072	सिद्ध	15/02/2078	संक	16/11/2084
भद्रि	16/12/2064	उल्क	16/08/2068	सिद्ध	17/06/2073	संक	17/06/2079	मंग	26/01/2085
उल्क	17/06/2065	सिद्ध	28/05/2069	संक	28/07/2074	मंग	17/08/2079	पिंग	17/06/2085
सिद्ध	16/01/2066	संक	17/04/2070	मंग	16/09/2074	पिंग	17/12/2079	धांय	16/01/2086
संक	16/09/2066	मंग	28/05/2070	पिंग	27/12/2074	धांय	17/06/2080	भ्राम	27/10/2086
मंग	17/10/2066	पिंग	17/08/2070	धांय	28/05/2075	भ्राम	15/02/2081	भद्रि	17/10/2087
पिंग	17/12/2066	धांय	17/12/2070	भ्राम	17/12/2075	भद्रि	16/12/2081	उल्क	16/12/2088

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
16/12/2088		16/12/2096		16/12/2097		17/12/2099		18/12/2102	
16/12/2096		16/12/2097		17/12/2099		18/12/2102		00/00/0000	
संक	27/09/2090	मंग	26/12/2096	पिंग	26/01/2098	धांय	18/03/2100	भ्राम	29/05/2103
मंग	17/12/2090	पिंग	16/01/2097	धांय	28/03/2098	भ्राम	18/07/2100	भद्रि	18/12/2103
पिंग	28/05/2091	धांय	15/02/2097	भ्राम	17/06/2098	भद्रि	17/12/2100	उल्क	17/08/2104
धांय	27/01/2092	भ्राम	28/03/2097	भद्रि	27/09/2098	उल्क	18/06/2101	सिद्ध	29/05/2105
भ्राम	16/12/2092	भद्रि	17/05/2097	उल्क	26/01/2099	सिद्ध	17/01/2102	संक	18/04/2106
भद्रि	26/01/2094	उल्क	17/07/2097	सिद्ध	17/06/2099	संक	17/09/2102	मंग	29/05/2106
उल्क	28/05/2095	सिद्ध	26/09/2097	संक	27/11/2099	मंग	18/10/2102	पिंग	07/07/2106
सिद्ध	16/12/2096	संक	16/12/2097	मंग	17/12/2099	पिंग	18/12/2102		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध	
26/01/2026		28/03/2026		17/06/2026		27/09/2026		26/01/2027	
28/03/2026		17/06/2026		27/09/2026		26/01/2027		17/06/2027	
धांय	31/01/2026	भ्राम	06/04/2026	भद्रि	01/07/2026	उल्क	17/10/2026	सिद्ध	23/02/2027
भ्राम	07/02/2026	भद्रि	17/04/2026	उल्क	18/07/2026	सिद्ध	09/11/2026	संक	26/03/2027
भद्रि	15/02/2026	उल्क	01/05/2026	सिद्ध	07/08/2026	संक	07/12/2026	मंग	30/03/2027
उल्क	25/02/2026	सिद्ध	16/05/2026	संक	29/08/2026	मंग	10/12/2026	पिंग	07/04/2027
सिद्ध	09/03/2026	संक	04/06/2026	मंग	01/09/2026	पिंग	17/12/2026	धांय	19/04/2027
संक	23/03/2026	मंग	06/06/2026	पिंग	07/09/2026	धांय	27/12/2026	भ्राम	05/05/2027
मंग	25/03/2026	पिंग	10/06/2026	धांय	15/09/2026	भ्राम	09/01/2027	भद्रि	25/05/2027
पिंग	28/03/2026	धांय	17/06/2026	भ्राम	27/09/2026	भद्रि	26/01/2027	उल्क	17/06/2027

पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम		धांय - भद्रि	
17/06/2027		27/11/2027		17/12/2027		17/03/2028		17/07/2028	
27/11/2027		17/12/2027		17/03/2028		17/07/2028		16/12/2028	
संक	23/07/2027	मंग	27/11/2027	धांय	25/12/2027	भ्राम	31/03/2028	भद्रि	07/08/2028
मंग	28/07/2027	पिंग	28/11/2027	भ्राम	04/01/2028	भद्रि	17/04/2028	उल्क	02/09/2028
पिंग	06/08/2027	धांय	30/11/2027	भद्रि	16/01/2028	उल्क	07/05/2028	सिद्ध	01/10/2028
धांय	19/08/2027	भ्राम	02/12/2027	उल्क	01/02/2028	सिद्ध	31/05/2028	संक	04/11/2028
भ्राम	06/09/2027	भद्रि	05/12/2027	सिद्ध	18/02/2028	संक	27/06/2028	मंग	08/11/2028
भद्रि	29/09/2027	उल्क	08/12/2027	संक	10/03/2028	मंग	30/06/2028	पिंग	17/11/2028
उल्क	26/10/2027	सिद्ध	12/12/2027	मंग	12/03/2028	पिंग	07/07/2028	धांय	29/11/2028
सिद्ध	27/11/2027	संक	17/12/2027	पिंग	17/03/2028	धांय	17/07/2028	भ्राम	16/12/2028

धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग		धांय - पिंग	
16/12/2028		17/06/2029		16/01/2030		16/09/2030		17/10/2030	
17/06/2029		16/01/2030		16/09/2030		17/10/2030		17/12/2030	
उल्क	16/01/2029	सिद्ध	28/07/2029	संक	11/03/2030	मंग	17/09/2030	पिंग	20/10/2030
सिद्ध	20/02/2029	संक	14/09/2029	मंग	18/03/2030	पिंग	19/09/2030	धांय	25/10/2030
संक	02/04/2029	मंग	20/09/2029	पिंग	31/03/2030	धांय	21/09/2030	भ्राम	01/11/2030
मंग	07/04/2029	पिंग	01/10/2029	धांय	21/04/2030	भ्राम	25/09/2030	भद्रि	09/11/2030
पिंग	17/04/2029	धांय	19/10/2029	भ्राम	18/05/2030	भद्रि	29/09/2030	उल्क	20/11/2030
धांय	02/05/2029	भ्राम	12/11/2029	भद्रि	20/06/2030	उल्क	04/10/2030	सिद्ध	01/12/2030
भ्राम	22/05/2029	भद्रि	11/12/2029	उल्क	31/07/2030	सिद्ध	10/10/2030	संक	15/12/2030
भद्रि	17/06/2029	उल्क	16/01/2030	सिद्ध	16/09/2030	संक	17/10/2030	मंग	17/12/2030

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक	
17/12/2030		28/05/2031		17/12/2031		16/08/2032		28/05/2033	
28/05/2031		17/12/2031		16/08/2032		28/05/2033		17/04/2034	
भ्राम	04/01/2031	भद्रि	25/06/2031	उल्क	27/01/2032	सिद्ध	11/10/2032	संक	08/08/2033
भद्रि	26/01/2031	उल्क	29/07/2031	सिद्ध	14/03/2032	संक	13/12/2032	मंग	17/08/2033
उल्क	22/02/2031	सिद्ध	06/09/2031	संक	07/05/2032	मंग	21/12/2032	पिंग	04/09/2033
सिद्ध	26/03/2031	संक	22/10/2031	मंग	14/05/2032	पिंग	05/01/2033	धांय	01/10/2033
संक	01/05/2031	मंग	27/10/2031	पिंग	27/05/2032	धांय	29/01/2033	भ्राम	06/11/2033
मंग	05/05/2031	पिंग	07/11/2031	धांय	17/06/2032	भ्राम	02/03/2033	भद्रि	21/12/2033
पिंग	14/05/2031	धांय	24/11/2031	भ्राम	14/07/2032	भद्रि	10/04/2033	उल्क	13/02/2034
धांय	28/05/2031	भ्राम	17/12/2031	भद्रि	16/08/2032	उल्क	28/05/2033	सिद्ध	17/04/2034

भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय		भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क	
17/04/2034		28/05/2034		17/08/2034		17/12/2034		27/08/2035	
28/05/2034		17/08/2034		17/12/2034		27/08/2035		27/06/2036	
मंग	18/04/2034	पिंग	01/06/2034	धांय	27/08/2034	भद्रि	21/01/2035	उल्क	17/10/2035
पिंग	21/04/2034	धांय	08/06/2034	भ्राम	10/09/2034	उल्क	04/03/2035	सिद्ध	15/12/2035
धांय	24/04/2034	भ्राम	17/06/2034	भद्रि	27/09/2034	सिद्ध	23/04/2035	संक	21/02/2036
भ्राम	28/04/2034	भद्रि	28/06/2034	उल्क	17/10/2034	संक	18/06/2035	मंग	29/02/2036
भद्रि	04/05/2034	उल्क	12/07/2034	सिद्ध	09/11/2034	मंग	25/06/2035	पिंग	17/03/2036
उल्क	11/05/2034	सिद्ध	28/07/2034	संक	07/12/2034	पिंग	09/07/2035	धांय	12/04/2036
सिद्ध	19/05/2034	संक	15/08/2034	मंग	10/12/2034	धांय	30/07/2035	भ्राम	15/05/2036
संक	28/05/2034	मंग	17/08/2034	पिंग	17/12/2034	भ्राम	27/08/2035	भद्रि	27/06/2036

भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय	
27/06/2036		17/06/2037		28/07/2038		16/09/2038		27/12/2038	
17/06/2037		28/07/2038		16/09/2038		27/12/2038		28/05/2039	
सिद्ध	04/09/2036	संक	15/09/2037	मंग	29/07/2038	पिंग	22/09/2038	धांय	09/01/2039
संक	22/11/2036	मंग	26/09/2037	पिंग	01/08/2038	धांय	30/09/2038	भ्राम	25/01/2039
मंग	02/12/2036	पिंग	19/10/2037	धांय	05/08/2038	भ्राम	12/10/2038	भद्रि	16/02/2039
पिंग	21/12/2036	धांय	22/11/2037	भ्राम	11/08/2038	भद्रि	26/10/2038	उल्क	13/03/2039
धांय	20/01/2037	भ्राम	06/01/2038	भद्रि	18/08/2038	उल्क	12/11/2038	सिद्ध	12/04/2039
भ्राम	28/02/2037	भद्रि	03/03/2038	उल्क	26/08/2038	सिद्ध	01/12/2038	संक	15/05/2039
भद्रि	19/04/2037	उल्क	10/05/2038	सिद्ध	05/09/2038	संक	24/12/2038	मंग	20/05/2039
उल्क	17/06/2037	सिद्ध	28/07/2038	संक	16/09/2038	मंग	27/12/2038	पिंग	28/05/2039

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 12 वर्ष 8 मास 11 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : अनुराधा - 4 अपसव्य
देह : वृश्चिक जीव : मीन

कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
06/07/1998		18/03/2011		17/03/2020		17/03/2036		18/03/2043	
18/03/2011		17/03/2020		17/03/2036		18/03/2043		18/03/2053	
	00/00/0000	मिथु	08/01/2012	वृष	08/10/2022	मेष	12/09/2036	धनु	17/03/2044
	06/07/1998	वृष	17/06/2013	मेष	22/11/2023	धनु	26/05/2037	वृश्चि	28/11/2044
वृष	14/11/1999	मेष	02/02/2014	धनु	28/06/2025	वृश्चि	21/11/2037	तुला	06/07/2046
मेष	04/05/2001	धनु	28/12/2014	वृश्चि	11/08/2026	तुला	04/01/2039	कन्या	30/05/2047
धनु	10/06/2003	वृश्चि	15/08/2015	तुला	03/03/2029	कन्या	22/08/2039	सिंह	29/11/2047
वृश्चि	28/11/2004	तुला	22/01/2017	कन्या	11/08/2030	सिंह	28/12/2039	कर्क	04/01/2050
तुला	08/04/2008	कन्या	14/11/2017	सिंह	30/05/2031	कर्क	17/06/2041	मिथु	29/11/2050
कन्या	28/02/2010	सिंह	27/04/2018	कर्क	08/10/2034	मिथु	02/02/2042	वृष	05/07/2052
सिंह	18/03/2011	कर्क	17/03/2020	मिथु	17/03/2036	वृष	18/03/2043	मेष	18/03/2053

वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
18/03/2053		17/03/2060		17/03/2076		18/03/2085		18/03/2090	
17/03/2060		17/03/2076		18/03/2085		18/03/2090		00/00/0000	
वृश्चि	13/09/2053	तुला	08/10/2062	कन्या	07/01/2077	सिंह	17/06/2085	कर्क	15/08/2094
तुला	27/10/2054	कन्या	17/03/2064	सिंह	21/06/2077	कर्क	06/07/2086	मिथु	05/07/2096
कन्या	14/06/2055	सिंह	04/01/2065	कर्क	12/05/2079	मिथु	17/12/2086	वृष	06/07/2098
सिंह	20/10/2055	कर्क	15/05/2068	मिथु	03/03/2080	वृष	05/10/2087		00/00/0000
कर्क	09/04/2057	मिथु	23/10/2069	वृष	11/08/2081	मेष	10/02/2088		00/00/0000
मिथु	25/11/2057	वृष	15/05/2072	मेष	29/03/2082	धनु	11/08/2088		00/00/0000
वृष	08/01/2059	मेष	28/06/2073	धनु	21/02/2083	वृश्चि	16/12/2088		00/00/0000
मेष	06/07/2059	धनु	02/02/2075	वृश्चि	09/10/2083	तुला	05/10/2089		00/00/0000
धनु	17/03/2060	वृश्चि	17/03/2076	तुला	18/03/2085	कन्या	18/03/2090		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - वृश्चि		वृष - तुला		वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क	
28/06/2025		11/08/2026		03/03/2029		11/08/2030		30/05/2031	
11/08/2026		03/03/2029		11/08/2030		30/05/2031		08/10/2034	
वृश्चि	27/07/2025	तुला	08/01/2027	कन्या	19/04/2029	सिंह	26/08/2030	कर्क	12/02/2032
तुला	30/09/2025	कन्या	02/04/2027	सिंह	16/05/2029	कर्क	26/10/2030	मिथु	01/06/2032
कन्या	06/11/2025	सिंह	19/05/2027	कर्क	03/09/2029	मिथु	21/11/2030	वृष	15/12/2032
सिंह	26/11/2025	कर्क	01/12/2027	मिथु	21/10/2029	वृष	07/01/2031	मेष	11/03/2033
कर्क	20/02/2026	मिथु	23/02/2028	वृष	13/01/2030	मेष	28/01/2031	धनु	11/07/2033
मिथु	29/03/2026	वृष	22/07/2028	मेष	18/02/2030	धनु	26/02/2031	वृश्चि	05/10/2033
वृष	03/06/2026	मेष	25/09/2028	धनु	12/04/2030	वृश्चि	18/03/2031	तुला	20/04/2034
मेष	01/07/2026	धनु	28/12/2028	वृश्चि	19/05/2030	तुला	04/05/2031	कन्या	08/08/2034
धनु	11/08/2026	वृश्चि	03/03/2029	तुला	11/08/2030	कन्या	30/05/2031	सिंह	08/10/2034

वृष - मिथु		मेष - मेष		मेष - धनु		मेष - वृश्चि		मेष - तुला	
08/10/2034		17/03/2036		12/09/2036		26/05/2037		21/11/2037	
17/03/2036		12/09/2036		26/05/2037		21/11/2037		04/01/2039	
मिथु	25/11/2034	मेष	30/03/2036	धनु	08/10/2036	वृश्चि	08/06/2037	तुला	26/01/2038
वृष	17/02/2035	धनु	17/04/2036	वृश्चि	26/10/2036	तुला	06/07/2037	कन्या	03/03/2038
मेष	26/03/2035	वृश्चि	29/04/2036	तुला	06/12/2036	कन्या	22/07/2037	सिंह	24/03/2038
धनु	17/05/2035	तुला	28/05/2036	कन्या	29/12/2036	सिंह	31/07/2037	कर्क	18/06/2038
वृश्चि	23/06/2035	कन्या	13/06/2036	सिंह	11/01/2037	कर्क	07/09/2037	मिथु	25/07/2038
तुला	15/09/2035	सिंह	22/06/2036	कर्क	05/03/2037	मिथु	23/09/2037	वृष	28/09/2038
कन्या	02/11/2035	कर्क	30/07/2036	मिथु	28/03/2037	वृष	22/10/2037	मेष	27/10/2038
सिंह	28/11/2035	मिथु	15/08/2036	वृष	08/05/2037	मेष	03/11/2037	धनु	07/12/2038
कर्क	17/03/2036	वृष	12/09/2036	मेष	26/05/2037	धनु	21/11/2037	वृश्चि	04/01/2039

मेष - कन्या		मेष - सिंह		मेष - कर्क		मेष - मिथु		मेष - वृष	
04/01/2039		22/08/2039		28/12/2039		17/06/2041		02/02/2042	
22/08/2039		28/12/2039		17/06/2041		02/02/2042		18/03/2043	
कन्या	25/01/2039	सिंह	29/08/2039	कर्क	19/04/2040	मिथु	08/07/2041	वृष	09/04/2042
सिंह	05/02/2039	कर्क	24/09/2039	मिथु	06/06/2040	वृष	14/08/2041	मेष	07/05/2042
कर्क	26/03/2039	मिथु	06/10/2039	वृष	31/08/2040	मेष	30/08/2041	धनु	17/06/2042
मिथु	15/04/2039	वृष	26/10/2039	मेष	08/10/2040	धनु	22/09/2041	वृश्चि	16/07/2042
वृष	22/05/2039	मेष	04/11/2039	धनु	30/11/2040	वृश्चि	08/10/2041	तुला	19/09/2042
मेष	07/06/2039	धनु	17/11/2039	वृश्चि	07/01/2041	तुला	14/11/2041	कन्या	26/10/2042
धनु	30/06/2039	वृश्चि	26/11/2039	तुला	03/04/2041	कन्या	04/12/2041	सिंह	15/11/2042
वृश्चि	16/07/2039	तुला	17/12/2039	कन्या	21/05/2041	सिंह	16/12/2041	कर्क	09/02/2043
तुला	22/08/2039	कन्या	28/12/2039	सिंह	17/06/2041	कर्क	02/02/2042	मिथु	18/03/2043

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - धनु		धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह	
18/03/2043		17/03/2044		28/11/2044		06/07/2046		30/05/2047	
17/03/2044		28/11/2044		06/07/2046		30/05/2047		29/11/2047	
धनु	24/04/2043	वृश्चि	04/04/2044	तुला	02/03/2045	कन्या	04/08/2046	सिंह	08/06/2047
वृश्चि	19/05/2043	तुला	15/05/2044	कन्या	23/04/2045	सिंह	21/08/2046	कर्क	17/07/2047
तुला	17/07/2043	कन्या	07/06/2044	सिंह	22/05/2045	कर्क	29/10/2046	मिथु	02/08/2047
कन्या	19/08/2043	सिंह	20/06/2044	कर्क	22/09/2045	मिथु	27/11/2046	वृष	31/08/2047
सिंह	06/09/2043	कर्क	13/08/2044	मिथु	14/11/2045	वृष	19/01/2047	मेष	13/09/2047
कर्क	22/11/2043	मिथु	05/09/2044	वृष	15/02/2046	मेष	11/02/2047	धनु	01/10/2047
मिथु	24/12/2043	वृष	16/10/2044	मेष	28/03/2046	धनु	16/03/2047	वृश्चि	14/10/2047
वृष	21/02/2044	मेष	03/11/2044	धनु	26/05/2046	वृश्चि	08/04/2047	तुला	12/11/2047
मेष	17/03/2044	धनु	28/11/2044	वृश्चि	06/07/2046	तुला	30/05/2047	कन्या	29/11/2047

धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष		वृश्चि - वृश्चि	
29/11/2047		04/01/2050		29/11/2050		05/07/2052		18/03/2053	
04/01/2050		29/11/2050		05/07/2052		18/03/2053		13/09/2053	
कर्क	08/05/2048	मिथु	02/02/2050	वृष	02/03/2051	मेष	23/07/2052	वृश्चि	30/03/2053
मिथु	16/07/2048	वृष	27/03/2050	मेष	12/04/2051	धनु	17/08/2052	तुला	28/04/2053
वृष	16/11/2048	मेष	19/04/2050	धनु	09/06/2051	वृश्चि	04/09/2052	कन्या	14/05/2053
मेष	08/01/2049	धनु	22/05/2050	वृश्चि	20/07/2051	तुला	15/10/2052	सिंह	23/05/2053
धनु	26/03/2049	वृश्चि	14/06/2050	तुला	22/10/2051	कन्या	07/11/2052	कर्क	30/06/2053
वृश्चि	19/05/2049	तुला	06/08/2050	कन्या	13/12/2051	सिंह	20/11/2052	मिथु	16/07/2053
तुला	19/09/2049	कन्या	04/09/2050	सिंह	12/01/2052	कर्क	13/01/2053	वृष	13/08/2053
कन्या	27/11/2049	सिंह	21/09/2050	कर्क	13/05/2052	मिथु	05/02/2053	मेष	26/08/2053
सिंह	04/01/2050	कर्क	29/11/2050	मिथु	05/07/2052	वृष	18/03/2053	धनु	13/09/2053

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु	
13/09/2053		27/10/2054		14/06/2055		20/10/2055		09/04/2057	
27/10/2054		14/06/2055		20/10/2055		09/04/2057		25/11/2057	
तुला	17/11/2053	कन्या	16/11/2054	सिंह	20/06/2055	कर्क	09/02/2056	मिथु	29/04/2057
कन्या	24/12/2053	सिंह	28/11/2054	कर्क	17/07/2055	मिथु	29/03/2056	वृष	05/06/2057
सिंह	13/01/2054	कर्क	15/01/2055	मिथु	29/07/2055	वृष	23/06/2056	मेष	21/06/2057
कर्क	09/04/2054	मिथु	05/02/2055	वृष	18/08/2055	मेष	30/07/2056	धनु	14/07/2057
मिथु	16/05/2054	वृष	14/03/2055	मेष	27/08/2055	धनु	22/09/2056	वृश्चि	30/07/2057
वृष	21/07/2054	मेष	30/03/2055	धनु	09/09/2055	वृश्चि	30/10/2056	तुला	05/09/2057
मेष	18/08/2054	धनु	22/04/2055	वृश्चि	18/09/2055	तुला	23/01/2057	कन्या	26/09/2057
धनु	28/09/2054	वृश्चि	08/05/2055	तुला	08/10/2055	कन्या	13/03/2057	सिंह	07/10/2057
वृश्चि	27/10/2054	तुला	14/06/2055	कन्या	20/10/2055	सिंह	09/04/2057	कर्क	25/11/2057

चर दशा

भोग्य दशा काल : कुम्भ 6 वर्ष 0 मास 0 दिन

कुम्भ 6 वर्ष	
06/07/1998	
06/07/2004	
मीन	05/01/1999
मेष	07/07/1999
वृष	05/01/2000
मिथु	06/07/2000
कर्क	05/01/2001
सिंह	06/07/2001
कन्या	05/01/2002
तुला	06/07/2002
वृश्चि	05/01/2003
धनु	07/07/2003
मक	05/01/2004
कुंभ	06/07/2004

मीन 12 वर्ष	
06/07/2004	
06/07/2016	
मेष	06/07/2005
वृष	06/07/2006
मिथु	07/07/2007
कर्क	06/07/2008
सिंह	06/07/2009
कन्या	06/07/2010
तुला	07/07/2011
वृश्चि	06/07/2012
धनु	06/07/2013
मक	06/07/2014
कुंभ	07/07/2015
मीन	06/07/2016

मेष 2 वर्ष	
06/07/2016	
06/07/2018	
वृष	05/09/2016
मिथु	05/11/2016
कर्क	05/01/2017
सिंह	06/03/2017
कन्या	06/05/2017
तुला	06/07/2017
वृश्चि	05/09/2017
धनु	05/11/2017
मक	05/01/2018
कुंभ	07/03/2018
मीन	07/05/2018
मेष	06/07/2018

वृष 12 वर्ष	
06/07/2018	
06/07/2030	
मेष	07/07/2019
मीन	06/07/2020
कुंभ	06/07/2021
मक	06/07/2022
धनु	07/07/2023
वृश्चि	06/07/2024
तुला	06/07/2025
कन्या	06/07/2026
सिंह	07/07/2027
कर्क	06/07/2028
मिथु	06/07/2029
वृष	06/07/2030

मिथुन 1 वर्ष	
06/07/2030	
07/07/2031	
वृष	06/08/2030
मेष	05/09/2030
मीन	06/10/2030
कुंभ	05/11/2030
मक	06/12/2030
धनु	05/01/2031
वृश्चि	04/02/2031
तुला	07/03/2031
कन्या	06/04/2031
सिंह	07/05/2031
कर्क	06/06/2031
मिथु	07/07/2031

कर्क 8 वर्ष	
07/07/2031	
07/07/2039	
मिथु	06/03/2032
वृष	05/11/2032
मेष	06/07/2033
मीन	07/03/2034
कुंभ	05/11/2034
मक	07/07/2035
धनु	06/03/2036
वृश्चि	05/11/2036
तुला	06/07/2037
कन्या	07/03/2038
सिंह	05/11/2038
कर्क	07/07/2039

सिंह 2 वर्ष	
07/07/2039	
06/07/2041	
कन्या	06/09/2039
तुला	05/11/2039
वृश्चि	05/01/2040
धनु	06/03/2040
मक	06/05/2040
कुंभ	06/07/2040
मीन	05/09/2040
मेष	05/11/2040
वृष	05/01/2041
मिथु	06/03/2041
कर्क	06/05/2041
सिंह	06/07/2041

कन्या 2 वर्ष	
06/07/2041	
07/07/2043	
तुला	05/09/2041
वृश्चि	05/11/2041
धनु	05/01/2042
मक	07/03/2042
कुंभ	07/05/2042
मीन	06/07/2042
मेष	05/09/2042
वृष	05/11/2042
मिथु	05/01/2043
कर्क	07/03/2043
सिंह	07/05/2043
कन्या	07/07/2043

तुला 7 वर्ष	
07/07/2043	
06/07/2050	
वृश्चि	05/02/2044
धनु	05/09/2044
मक	06/04/2045
कुंभ	05/11/2045
मीन	06/06/2046
मेष	05/01/2047
वृष	06/08/2047
मिथु	06/03/2048
कर्क	05/10/2048
सिंह	06/05/2049
कन्या	05/12/2049
तुला	06/07/2050

वृश्चिक 7 वर्ष	
06/07/2050	
06/07/2057	
तुला	04/02/2051
कन्या	06/09/2051
सिंह	06/04/2052
कर्क	05/11/2052
मिथु	06/06/2053
वृष	05/01/2054
मेष	06/08/2054
मीन	07/03/2055
कुंभ	06/10/2055
मक	06/05/2056
धनु	05/12/2056
वृश्चि	06/07/2057

धनु 3 वर्ष	
06/07/2057	
06/07/2060	
वृश्चि	05/10/2057
तुला	05/01/2058
कन्या	06/04/2058
सिंह	06/07/2058
कर्क	06/10/2058
मिथु	05/01/2059
वृष	06/04/2059
मेष	07/07/2059
मीन	06/10/2059
कुंभ	05/01/2060
मक	06/04/2060
धनु	06/07/2060

मकर 9 वर्ष	
06/07/2060	
06/07/2069	
धनु	06/04/2061
वृश्चि	05/01/2062
तुला	06/10/2062
कन्या	07/07/2063
सिंह	06/04/2064
कर्क	05/01/2065
मिथु	05/10/2065
वृष	06/07/2066
मेष	06/04/2067
मीन	05/01/2068
कुंभ	05/10/2068
मक	06/07/2069

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - मिथु		वृष - वृष	
06/07/2025		06/07/2026		07/07/2027		06/07/2028		06/07/2029	
06/07/2026		07/07/2027		06/07/2028		06/07/2029		06/07/2030	
तुला	06/08/2025	कन्या	06/08/2026	मिथु	06/08/2027	वृष	05/08/2028	मेष	06/08/2029
वृश्चि	05/09/2025	तुला	05/09/2026	वृष	06/09/2027	मेष	05/09/2028	मीन	05/09/2029
धनु	05/10/2025	वृश्चि	06/10/2026	मेष	06/10/2027	मीन	05/10/2028	कुंभ	05/10/2029
मक	05/11/2025	धनु	05/11/2026	मीन	05/11/2027	कुंभ	05/11/2028	मक	05/11/2029
कुंभ	05/12/2025	मक	06/12/2026	कुंभ	06/12/2027	मक	05/12/2028	धनु	05/12/2029
मीन	05/01/2026	कुंभ	05/01/2027	मक	05/01/2028	धनु	05/01/2029	वृश्चि	05/01/2030
मेष	04/02/2026	मीन	04/02/2027	धनु	05/02/2028	वृश्चि	04/02/2029	तुला	04/02/2030
वृष	07/03/2026	मेष	07/03/2027	वृश्चि	06/03/2028	तुला	06/03/2029	कन्या	07/03/2030
मिथु	06/04/2026	वृष	06/04/2027	तुला	06/04/2028	कन्या	06/04/2029	सिंह	06/04/2030
कर्क	07/05/2026	मिथु	07/05/2027	कन्या	06/05/2028	सिंह	06/05/2029	कर्क	07/05/2030
सिंह	06/06/2026	कर्क	06/06/2027	सिंह	05/06/2028	कर्क	06/06/2029	मिथु	06/06/2030
कन्या	06/07/2026	सिंह	07/07/2027	कर्क	06/07/2028	मिथु	06/07/2029	वृष	06/07/2030

मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक	
06/07/2030		06/08/2030		05/09/2030		06/10/2030		05/11/2030	
06/08/2030		05/09/2030		06/10/2030		05/11/2030		06/12/2030	
मेष	09/07/2030	वृष	08/08/2030	मेष	08/09/2030	मीन	08/10/2030	धनु	08/11/2030
मीन	12/07/2030	मिथु	11/08/2030	वृष	10/09/2030	मेष	11/10/2030	वृश्चि	10/11/2030
कुंभ	14/07/2030	कर्क	13/08/2030	मिथु	13/09/2030	वृष	13/10/2030	तुला	13/11/2030
मक	17/07/2030	सिंह	16/08/2030	कर्क	15/09/2030	मिथु	16/10/2030	कन्या	15/11/2030
धनु	19/07/2030	कन्या	19/08/2030	सिंह	18/09/2030	कर्क	18/10/2030	सिंह	18/11/2030
वृश्चि	22/07/2030	तुला	21/08/2030	कन्या	21/09/2030	सिंह	21/10/2030	कर्क	20/11/2030
तुला	24/07/2030	वृश्चि	24/08/2030	तुला	23/09/2030	कन्या	23/10/2030	मिथु	23/11/2030
कन्या	27/07/2030	धनु	26/08/2030	वृश्चि	26/09/2030	तुला	26/10/2030	वृष	25/11/2030
सिंह	29/07/2030	मक	29/08/2030	धनु	28/09/2030	वृश्चि	29/10/2030	मेष	28/11/2030
कर्क	01/08/2030	कुंभ	31/08/2030	मक	01/10/2030	धनु	31/10/2030	मीन	01/12/2030
मिथु	03/08/2030	मीन	03/09/2030	कुंभ	03/10/2030	मक	03/11/2030	कुंभ	03/12/2030
वृष	06/08/2030	मेष	05/09/2030	मीन	06/10/2030	कुंभ	05/11/2030	मक	06/12/2030

मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - सिंह	
06/12/2030		05/01/2031		04/02/2031		07/03/2031		06/04/2031	
05/01/2031		04/02/2031		07/03/2031		06/04/2031		07/05/2031	
वृश्चि	08/12/2030	तुला	08/01/2031	वृश्चि	07/02/2031	तुला	09/03/2031	कन्या	09/04/2031
तुला	11/12/2030	कन्या	10/01/2031	धनु	10/02/2031	वृश्चि	12/03/2031	तुला	11/04/2031
कन्या	13/12/2030	सिंह	13/01/2031	मक	12/02/2031	धनु	15/03/2031	वृश्चि	14/04/2031
सिंह	16/12/2030	कर्क	15/01/2031	कुंभ	15/02/2031	मक	17/03/2031	धनु	17/04/2031
कर्क	18/12/2030	मिथु	18/01/2031	मीन	17/02/2031	कुंभ	20/03/2031	मक	19/04/2031
मिथु	21/12/2030	वृष	20/01/2031	मेष	20/02/2031	मीन	22/03/2031	कुंभ	22/04/2031
वृष	23/12/2030	मेष	23/01/2031	वृष	22/02/2031	मेष	25/03/2031	मीन	24/04/2031
मेष	26/12/2030	मीन	25/01/2031	मिथु	25/02/2031	वृष	27/03/2031	मेष	27/04/2031
मीन	28/12/2030	कुंभ	28/01/2031	कर्क	27/02/2031	मिथु	30/03/2031	वृष	29/04/2031
कुंभ	31/12/2030	मक	30/01/2031	सिंह	02/03/2031	कर्क	01/04/2031	मिथु	02/05/2031
मक	03/01/2031	धनु	02/02/2031	कन्या	04/03/2031	सिंह	04/04/2031	कर्क	04/05/2031
धनु	05/01/2031	वृश्चि	04/02/2031	तुला	07/03/2031	कन्या	06/04/2031	सिंह	07/05/2031

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष	
07/05/2031		06/06/2031		07/07/2031		06/03/2032		05/11/2032	
06/06/2031		07/07/2031		06/03/2032		05/11/2032		06/07/2033	
मिथु	09/05/2031	वृष	09/06/2031	वृष	27/07/2031	मेष	26/03/2032	वृष	25/11/2032
वृष	12/05/2031	मेष	11/06/2031	मेष	16/08/2031	मीन	16/04/2032	मिथु	15/12/2032
मेष	14/05/2031	मीन	14/06/2031	मीन	06/09/2031	कुंभ	06/05/2032	कर्क	05/01/2033
मीन	17/05/2031	कुंभ	16/06/2031	कुंभ	26/09/2031	मक	26/05/2032	सिंह	25/01/2033
कुंभ	19/05/2031	मक	19/06/2031	मक	16/10/2031	धनु	16/06/2032	कन्या	14/02/2033
मक	22/05/2031	धनु	21/06/2031	धनु	05/11/2031	वृश्चि	06/07/2032	तुला	06/03/2033
धनु	25/05/2031	वृश्चि	24/06/2031	वृश्चि	26/11/2031	तुला	26/07/2032	वृश्चि	27/03/2033
वृश्चि	27/05/2031	तुला	27/06/2031	तुला	16/12/2031	कन्या	16/08/2032	धनु	16/04/2033
तुला	30/05/2031	कन्या	29/06/2031	कन्या	05/01/2032	सिंह	05/09/2032	मक	06/05/2033
कन्या	01/06/2031	सिंह	02/07/2031	सिंह	26/01/2032	कर्क	25/09/2032	कुंभ	27/05/2033
सिंह	04/06/2031	कर्क	04/07/2031	कर्क	15/02/2032	मिथु	15/10/2032	मीन	16/06/2033
कर्क	06/06/2031	मिथु	07/07/2031	मिथु	06/03/2032	वृष	05/11/2032	मेष	06/07/2033

कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक		कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि	
06/07/2033		07/03/2034		05/11/2034		07/07/2035		06/03/2036	
07/03/2034		05/11/2034		07/07/2035		06/03/2036		05/11/2036	
मेष	26/07/2033	मीन	27/03/2034	धनु	25/11/2034	वृश्चि	27/07/2035	तुला	26/03/2036
वृष	16/08/2033	मेष	16/04/2034	वृश्चि	16/12/2034	तुला	16/08/2035	कन्या	16/04/2036
मिथु	05/09/2033	वृष	07/05/2034	तुला	05/01/2035	कन्या	06/09/2035	सिंह	06/05/2036
कर्क	25/09/2033	मिथु	27/05/2034	कन्या	25/01/2035	सिंह	26/09/2035	कर्क	26/05/2036
सिंह	16/10/2033	कर्क	16/06/2034	सिंह	15/02/2035	कर्क	16/10/2035	मिथु	16/06/2036
कन्या	05/11/2033	सिंह	06/07/2034	कर्क	07/03/2035	मिथु	05/11/2035	वृष	06/07/2036
तुला	25/11/2033	कन्या	27/07/2034	मिथु	27/03/2035	वृष	26/11/2035	मेष	26/07/2036
वृश्चि	16/12/2033	तुला	16/08/2034	वृष	17/04/2035	मेष	16/12/2035	मीन	16/08/2036
धनु	05/01/2034	वृश्चि	05/09/2034	मेष	07/05/2035	मीन	05/01/2036	कुंभ	05/09/2036
मक	25/01/2034	धनु	26/09/2034	मीन	27/05/2035	कुंभ	26/01/2036	मक	25/09/2036
कुंभ	14/02/2034	मक	16/10/2034	कुंभ	16/06/2035	मक	15/02/2036	धनु	15/10/2036
मीन	07/03/2034	कुंभ	05/11/2034	मक	07/07/2035	धनु	06/03/2036	वृश्चि	05/11/2036

कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह		कर्क - कर्क		सिंह - कन्या	
05/11/2036		06/07/2037		07/03/2038		05/11/2038		07/07/2039	
06/07/2037		07/03/2038		05/11/2038		07/07/2039		06/09/2039	
वृश्चि	25/11/2036	तुला	26/07/2037	कन्या	27/03/2038	मिथु	25/11/2038	तुला	12/07/2039
धनु	15/12/2036	वृश्चि	16/08/2037	तुला	16/04/2038	वृष	16/12/2038	वृश्चि	17/07/2039
मक	05/01/2037	धनु	05/09/2037	वृश्चि	07/05/2038	मेष	05/01/2039	धनु	22/07/2039
कुंभ	25/01/2037	मक	25/09/2037	धनु	27/05/2038	मीन	25/01/2039	मक	27/07/2039
मीन	14/02/2037	कुंभ	16/10/2037	मक	16/06/2038	कुंभ	15/02/2039	कुंभ	01/08/2039
मेष	06/03/2037	मीन	05/11/2037	कुंभ	06/07/2038	मक	07/03/2039	मीन	06/08/2039
वृष	27/03/2037	मेष	25/11/2037	मीन	27/07/2038	धनु	27/03/2039	मेष	11/08/2039
मिथु	16/04/2037	वृष	16/12/2037	मेष	16/08/2038	वृश्चि	17/04/2039	वृष	16/08/2039
कर्क	06/05/2037	मिथु	05/01/2038	वृष	05/09/2038	तुला	07/05/2039	मिथु	21/08/2039
सिंह	27/05/2037	कर्क	25/01/2038	मिथु	26/09/2038	कन्या	27/05/2039	कर्क	26/08/2039
कन्या	16/06/2037	सिंह	14/02/2038	कर्क	16/10/2038	सिंह	16/06/2039	सिंह	31/08/2039
तुला	06/07/2037	कन्या	07/03/2038	सिंह	05/11/2038	कर्क	07/07/2039	कन्या	06/09/2039

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	92%	सुख, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	82%	धन, धनार्जन
मूंगा	मंगल	78%	सन्तति सुख, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	64%	सन्तति सुख, दम्पति
लहसुनिया	केतु	64%	स्वास्थ्य, पराक्रम
नीलम	शनि	62%	पराक्रम, कम खर्च, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	34%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	6%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

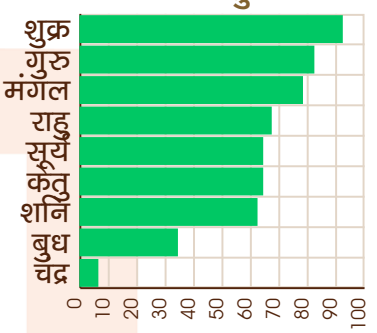

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	20/08/2000	52%	0%	66%	47%	82%	98%	75%	73%	52%
बुध	20/08/2017	70%	0%	78%	55%	82%	98%	62%	67%	64%
केतु	20/08/2024	52%	0%	84%	34%	82%	98%	50%	55%	77%
शुक्र	20/08/2044	52%	0%	78%	47%	82%	100%	69%	73%	70%
सूर्य	20/08/2050	77%	19%	84%	34%	89%	79%	50%	55%	52%
चंद्र	20/08/2060	70%	31%	78%	47%	82%	92%	62%	55%	52%
मंगल	21/08/2067	70%	19%	91%	9%	89%	92%	62%	55%	70%
राहु	20/08/2085	52%	0%	66%	34%	82%	98%	69%	80%	52%
गुरु	21/08/2101	70%	19%	84%	9%	95%	79%	62%	67%	64%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए हीरा, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज व मूंगा रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, माणिक्य, लहसुनिया एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। रत्न आपको परोपकारी, व्यवहार कुशल, पराक्रमी और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव देगा। हीरा रत्न प्रभाव से आप दूसरों का हित चाहने वाले, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाले व्यक्ति बनेंगे। शुक्र रत्न हीरा आपको बुद्धि एवं विद्या दोनो से धनी करेगा। आप मातृ भक्त और मात सेवक बनेंगे। सभी प्रकार के भौतिक सुख साधनों से आप संपन्न रहेंगे। हीरे की शक्तियां अच्छा घर, वाहन, आभूषण, वस्त्र आदि सब प्राप्त करने में सहयोग करेंगी।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। ग्रुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु दवितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है।

आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते है। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको चंचलता देने के साथ-साथ आपको बुद्धिमता देगा। यह रत्न आपको निर्णय लेने की योग्यता और विवेक क्षमता देगा। मूंगा रत्न के शुभ प्रभाव से आपकी बुद्धि सहज होगी। आपको तकनीकी विषयों में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे। मंगल रत्न मूंगे की शुभता से आप शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सफलता पा सकते है। मूंगा रत्न आपको उत्साही और ऊर्जा शक्ति से युक्त बनाये रखेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते है। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते है. आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की

होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते है। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात

केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने से आपमें विवेकशीलता की

कमी हो सकती है। यह रत्न आपके आत्मविश्वास भाव और पुरुषार्थ भाव को कमजोर कर सकता है। आपको शत्रुभय परेशान कर सकता है। आपके शत्रु चातुर्य और नीति योग्यता के प्रभाव से आपकी सफलता को बाधित कर सकते है। तार्किक बुद्धि का सहयोग आपको पूरा नहीं मिल पाएगा। बौद्धिकता योग्यता का सहयोग प्राप्त न होने के कारण आप बाहुबल से धनार्जन करने का प्रयास कर सकते है। आपके व्यय गलत कार्यों पर हो सकते है। पन्ना रत्न आपके विनोदी स्वभाव को बढ़ा सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बुद्धि, ज्ञान, संतान और जीवनशैली संबंधी परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको शिक्षा क्षेत्र में योग्यता की कमी दे सकता है। जीवनशैली को सुधारने में बुद्धि का सहयोग आपको नहीं मिल पाएगा। रत्न प्रभाव से चिंतकों और विचारकों का सानिंध्य आपको नहीं मिल पाएगा। पन्ना रत्न आपको शारीरिक, मानसिक और आर्थिक पक्ष से कमजोर कर सकता है। अष्टमेश का रत्न होने के कारण रत्न धारण पर जीवन के महत्वपूर्ण कार्यो में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता, उत्तम नियोजन कुशलता का ह्रास करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी महत्वकांक्षा भावना बढ़ सकती है। आपके दायित्वों का विस्तार हो सकता है। आपको अपने व्यवसाय में कई बार परिवर्तन करने पड़ सकते है। इस रत्न को पहनने पर कार्यक्षेत्र में आपके अधिकांश स्त्रियों से संबंध मधुर न रहें। मोती रत्न आपको आंशिक रूप से अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। जिसके कारण आप अव्यवहारिक हो सकते है। व्यापार और व्यवसाय के मामलों में आपको कार्यकुशलता की कमी का अनुभव हो सकता है। यह रत्न आपकी लोकप्रियता में कमी कर सकता है। अधिक से अधिक की प्राप्ति के लिए आप प्रयासरत हो सकते है। मोती रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में अस्थिरता ला सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते है। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(20/08/2024 - 20/08/2044)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया, नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(20/08/2044 - 20/08/2050)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज, मूंगा, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(20/08/2050 - 20/08/2060)

चन्द्र की दशा में आपका हीरा, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, नीलम, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(20/08/2060 - 21/08/2067)

मंगल की दशा में आपका हीरा, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त

करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(21/08/2067 - 20/08/2085)

राहु की दशा में आपका हीरा, पुखराज व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मूंगा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(20/08/2085 - 21/08/2101)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद, लहसुनिया व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 20/08/2000

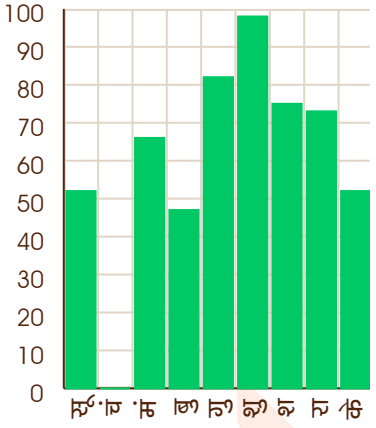

बुध - 20/08/2017

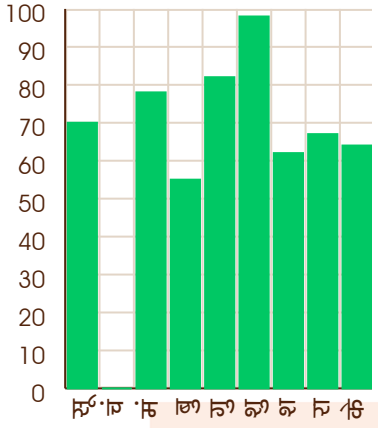

केतु - 20/08/2024

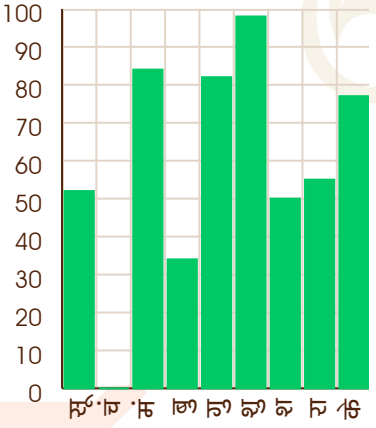

शुक्र - 20/08/2044

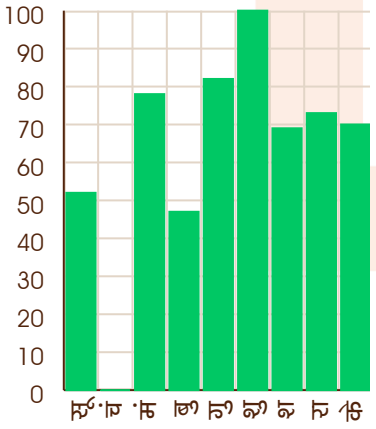

सूर्य - 20/08/2050

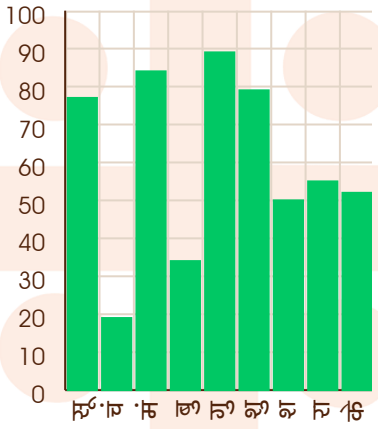

चन्द्र - 20/08/2060

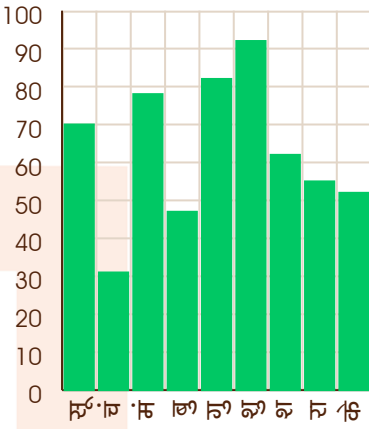

मंगल - 21/08/2067

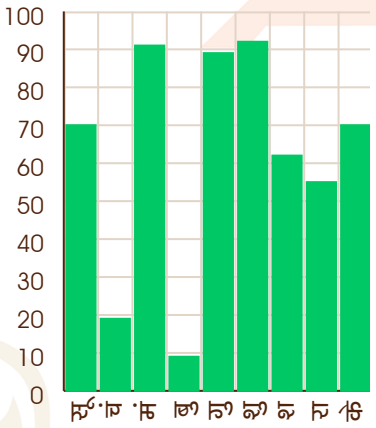

राहु - 20/08/2085

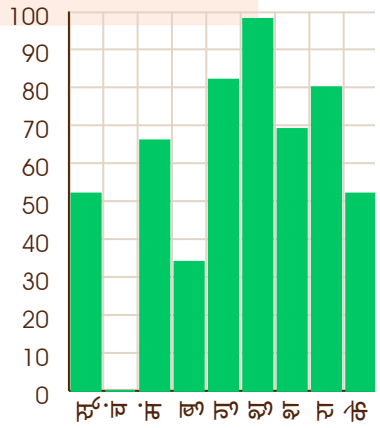

गुरु - 21/08/2101

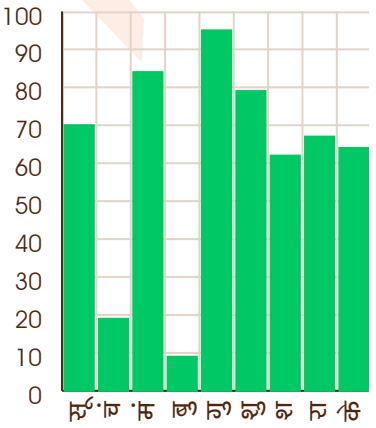

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये एमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता हैं। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में सूर्य और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक छः होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक छः होता है। इसका अधिष्ठाता शुक्र ग्रह है। मूलांक छः के प्रभाववश आप के अन्दर आकर्षण शक्ति तथा मिलनसारिता अधिक रहेगी। इस गुण के कारण आप लोक प्रियता प्राप्त करेंगी। सुन्दरता, सुन्दर वस्तुओं की ओर आकृष्ट होना आपकी सहज प्रवृत्ति होगी। विपरीत सेक्स के प्रति आपका आकर्षण रहेगा एवं सुन्दर नर-नारियों से संबंध बनाना, वार्तालाप करना आपकी प्रकृति में रहेगा।

विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में आपकी अभिरुचि रहेगी एवं कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार-व्यापार भी बना सकती हैं। संगीत-साहित्य, ललितकला, चित्रकला इत्यादि में रुचि रखेंगी। सुन्दर वस्त्र धारण करना एवं सुसज्जित मकान में रहना आपको अच्छा लगेगा। अतिथियों का आदर सत्कार करने में आपको गर्व महसूस होगा। घर या ऑफिस में सभी वस्तुऐं ढंग से सजावट के साथ रखना, सुरुचिपूर्ण फर्नीचर, परदे इत्यादि रखना आपको रास आयेगा।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं आपकी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि आपकी बात को सामने वाला मान जाया करे। किसी बात पर अड़े रहना तथा ईर्ष्या की मात्रा आपके अन्दर अधिक रहेगी। आप कार्यक्षेत्र में किसी की प्रतिद्वन्दिता को आसानी से सहन नहीं कर पायेंगी। जिसके कारण कभी-कभी मानसिक तनाव एवं आत्मग्लानि का भी सामना करना पड़ेगा। आप दूसरों को अपना बना लेने की कला में पारंगत रहेंगी। शीघ्र मित्र बनाने की कला आपके अन्दर अधिक मात्रा में होने से आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 4 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 6 और भाग्यांक 4 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। शुक्र एवं हर्षल के प्रभाववश आप एक कला प्रिय, शीघ्रातिशीघ्र उच्चता पाने वाली महिला के रूप में प्रसिद्ध होंगी।

आप ऐसा ही रोजगार-व्यवसाय पसंद करेंगी, जिसमें चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला का समावेश रहे। कला के क्षेत्र को यदि आप व्यवसाय के रूप में अपनाती हैं, तब आप अच्छी एवं शीघ्र सफलताएं प्राप्त करेंगी। शुक्र के प्रभाव से आपके अंदर अच्छी आकर्षण शक्ति रहेगी, जो आपके रोजगार में विशेष काम आएगी। आप सामने वाले व्यक्तियों को बहुत जल्दी अपने अनुकूल बनाने में माहिर होंगी, जिसका आपके रोजगार-व्यापार पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। आपकी रूचि धन संग्रह की अपेक्षा भौतिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं का संग्रह करने में अधिक रहने के कारण आप काफी मात्रा में इन पर धन व्यय करेंगी। आपको अपने जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुखों की, न्यूनाधिक मात्रा में, उपलब्धि प्राप्त होगी। सामाजिक क्षेत्र में आपकी स्थिति काफी अच्छी रहेगी एवं अपने क्रिया-कलापों के द्वारा आप समाज में मान-सम्मान तथा भरपूर सुख-सुविधाएं प्राप्त करेंगी। आपके जान-पहचान का क्षेत्र काफी विस्तृत होगा एवं समूह तथा संगठन इत्यादि में आप एक लोकप्रिय महिला के रूप मे अपनी पहचान स्थापित करेंगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 31 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 40 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 4 की मित्रता 1 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 41, 50, 59, 68
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीर्यार्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में कुंभ लग्न, कुंभ नवमांश एवं मिथुन द्रेष्काण में हुआ था। ज्योतिषीय आकृति से ऐसा स्पष्ट हो रहा है कि आपके जीवन का प्रस्तुतिकरण सुखद, सुलभ एवं स्वाभाविक रूप से आरामदायक जीवन काल का प्रतिनिधित्व करता है।

मुख्यतः आपकी आयु के 28 वें वर्ष में आप उच्चतम शिखर पर पहुंच कर अपनी शक्ति एवं स्वच्छंदता पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगी। यदि आप लापरवाही, आलसी एवं धीरे-धीरे चलने की प्रवृति रखें तो कभी-कभी धैर्यपूर्वक अपनी प्रस्तावित समस्या को शीघ्रतापूर्वक संपन्न कर सकेंगी। आप अपने हस्तगत कार्य के प्रति स्वयं प्रोत्साहित हो कर उसे संपन्न कर ली तो निश्चित रूप से धन संग्रह कर लेंगी।

आप ऐसी प्राणी हैं कि आपको बहुत मात्रा में विस्तार एवं विकसित होने में सफलता मिलेगी। यदि आप अपना जिद्दीपन एवं अड़ियल रूख के प्रति नरमी बरत सकी तो आप किसी भी कार्य को खेल-खेल में संपादित कर लेंगी एवं निष्कपट भाव से जन सामान्य के साथ दयालुता युक्त भावनाओं से उदारता बरतेंगी। अन्य व्यक्ति मात्र आपकी त्रुटियों को अप्रिय हाव-भाव से देखेंगे तथा बिना जाने ही आपकी दुर्बलता के विरुद्ध हो जाएंगे। यदि आप मर्यादित ढंग से बात चीत करने लगी तो आप अत्यधिक सुविख्यात हो जाएंगी।

आप उच्च कोटि की धार्मिक प्राणी हैं। आप जीवन दर्शन का अध्ययन कर जीवन के वास्तविक अर्थ से अवगत हो जाएंगी। आपके लिए व्यवसायों में अनुकूल कार्य व्यवसाय ज्योतिषीय कार्य, गणितीय कार्य, खगोल विद्या, सामान्य ज्ञान, गुप्त (विद्या) विज्ञान, एवं हवाई यात्रा संबंधित कार्य उत्तम हैं।

आप एक सुखद भवन के साथ-साथ समझदार एवं व्यवस्थित पति तथा प्रिय संतानों से युक्त होंगी। आप वैवाहिक जीवन का निर्वाह करेंगी। आप सदैव अपने घर परिवार को अपने अधिकृत रखेंगी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि आपकी आयु लंबी है तथा आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परंतु ऐसा आभास हो रहा है कि आप कुछ रोगादि के कुप्रभाव से अधोगति को प्राप्त हो सकती हैं। यथा रक्तचाप, हृदय संबंधी रोग, हृदय स्पंदन आदि रोग कुछ वर्षो के बाद हो सकते है। अतः उत्तम तो यह है कि सच्चे अर्थो में सावधानी बरते।

आप मित्रों के साथ आनन्द प्राप्त करेंगी। आप अपने भवन की प्राचीनता को नवीनीकरण करने हेतु संग्रह करेंगी। आप अत्यंत ही सामाजिक प्राणी हैं तथा समाज को अकेले ही आगे लेकर चलेंगी। आप एक विख्यात एवं आतिथ्य भावनाओं से युक्त प्राणी है।

आप निम्नांकित निर्देशों का पालन एवं अंगीकृत कर जीवन में अत्यधिक उन्नति प्राप्त कर सकती हैं।

आपके लिए अंकों में अनुकूल एवं प्रभावक अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक हैं तथा अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक आपके हित प्रतिकूल एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल एवं अत्यधिक लाभकारी दिन बुधवार शनिवार एवं शुक्रवार का दिन हैं। शेष रविवार, मंगलवार, एवं सोमवार का दिन आपके लिए बाधित एवं प्रतिकूल दिन हैं।

आपके लिए नीले रंग को छोड़ कर अन्य रंग सफेद, क्रीम, लाल एवं पीला रंग अति अनुकूल हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी

उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्तितिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं

उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में प्रथम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचल होते हैं परन्तु इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है जिससे अन्य जन इनसे प्रभावित रहते हैं। ये स्वभाव से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारधारा से युक्त होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही स्वीकार करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में स्नेह एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है तथा धार्मिकता की भावना में अल्पता रहती है एवं आधुनिकता से परिपुष्ट विचारों के होते हैं। साहित्य एवं कला में रूचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टिकोण विशाल होता है तथा इनके हृदय में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहता है। अध्ययन के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान अर्जित करके एक विदुषी के रूप में सामाजिक मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान अर्जित करते हैं। अवसरानुकूल इनको नेतृत्व का भी अवसर प्राप्त हो जाता है। ये भावुकता से कोई भी कार्य नहीं करते तथा बुद्धिमता पूर्वक सोच समझकर अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके आनंद पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगी परन्तु मन में अस्थिरता का भाव होगा। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपकी दृष्टि भी सूक्ष्म रहेगी तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होंगी।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक रूप से आप उद्विग्नता की अनुभूति करेंगी लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आप में पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव भी रहेगा फलतः अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को आप परिश्रम से सम्पन्न करेंगी तथा इनमें सफलता प्राप्त करेंगी जिससे भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगी तथा आनंद पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। लेकिन यदा कदा उग्रता के प्रदर्शन से आपको अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

आर्थिक रूप से आपके स्थिति सामान्यतया अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप भ्रमण या यात्रा की भी प्रिय होंगी तथा अवसरानुकूल भ्रमण तथा यात्रा आदि पर अपना काफी समय व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यय भी आप मुक्त भाव से करेंगी लेकिन उत्तम आय होने के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य कलापों एवं अनुष्ठानों को आप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी लेकिन यदा कदा तीर्थ यात्रा को आप सम्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार आप पराक्रमी बुद्धिमान एवं परिश्रमी महिला होंगी तथा भौतिक सुखों का

उपभोग करते हुए आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म के समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृति की महिला होंगी साथ ही स्वप्न दृष्टा प्रवृति भी रहेगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगी तथा जो कुछ भी मन में हो अन्य जनों के समक्ष स्पष्ट रूप से कह देंगी। आपका स्वभाव अत्यन्त ही उदार होगा तथा समाज सेवा के प्रति आपकी भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल इस कार्य को करती रहेंगी। आप में विनम्रता का भाव भी रहेगा तथा अजनबी व्यक्ति भी पहली ही बार में आपसे प्रभावित हो जाएगा तथा आपके प्रति उसके मन में सम्मान की भावना उत्पन्न हो जाएंगी। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार इसमें परिवर्तन करने में सक्षम रहेगी तथा उसे नवीन स्वरूप प्रदान करेंगी जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभावित रहेंगे परन्तु यदा कदा आत्मविश्वास की अल्पता दृष्टिगोचर होगी।

आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। साथ ही इनकी प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि के लिए यदा कदा आप अपने विचारों को परिवर्तित करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपको सुन्दर तथा सुस्वादु भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मिष्ठान एवं नमकीन आपके विशेष प्रिय रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर एवं स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना आपको प्रियकर लगेगा। साथ ही जमीन-जायदाद वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति या माता पिता के द्वारा पैतृक सम्पति भी आपको प्राप्त होगी तथा आनन्द पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा वैदिक कार्यो को सम्पन्न करने में समर्थ होंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमानी तथा बौद्धिक महिला होंगी तथा जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। यद्यपि स्वभाव से वे तेज होंगे परन्तु बुद्धिमता का भाव विद्यमान रहेगा। आपके प्रति वे विश्वसनीय आज्ञाकारी तथा कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहेंगे। पारिवारिक सुख शन्ति एवं समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही यदा कदा वैचारिक मतभेद भी रहेंगे तथापि परस्पर प्रेम एवं सौहार्द का भाव बना रहेगा। आप का हृदय विशाल होगा तथा अन्य सामाजिक जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति का भाव होगा। आपके व्यक्तित्व की विशेषता यह रहेगी कि आप अपने ही तरीके से सोचेंगी तथा वैसे ही कार्य रूप में परिणित करेंगी।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने परिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में समर्थ रहेंगी। समाज में आपको यथोचित सम्मान रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आधुनिक संचार उपकरणों यथा टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से भी युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। संगीत तथा कला आदि के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा अवसरानुकूल इन पर समय व्यतीत करेंगी। दूर समीप की यात्राएं आपकी होती रहेगी तथा इनसे भविष्य में लाभ तथा ख्याति मिलेगी। साथ ही लेखन कार्य से भी सम्मान प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आप सज्जनों से मित्रता करने वाली, परोपकारी, एवं विदुषी तथा सरकार से समय समय पर धन एवं मान सम्मान भी अर्जित करती रहेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा शुक्र भी स्वगृही होकर चतुर्थभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सर्वप्रकार से सांसारिक सुखों की प्राप्ति करेंगी। आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सुसम्पन्न होंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार अपनी सामाजिक स्थिति से आप सामान्यतया सन्तुष्ट रहेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको विपुल मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। पति के सहयोग या प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपकी ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा अन्यत्र से भी आप वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से शीघ्र एवं वांछित लाभ की प्राप्ति होगी। अतः अवसरानुकूल इस पर आपको पूंजी निवेश अवश्य करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर सुन्दर, विशाल एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित होगा। आपका आवास किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा वाहनों की संख्या एक से अधिक हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता की भावना भी विद्य मान होगी। परिवार की सुख-शान्ति एवं समृद्धि में उनका योगदान रहेगा तथा सभी सदस्यों का ध्यान रखेंगी जिससे सभी लोग उन्हें वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उन्नति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगी तथा उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी तीव्र रूचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता अर्जित करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप ससम्मान अर्जित करेंगी तथा जीवन में अपने लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा सामाजिक एवं स्वजनों से विशिष्ट आदर एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप कोई उच्चस्तरीय व्यावसायिक डिग्री या शिक्षा का पाठ्यक्रम अर्जित करने में भी सफलता प्राप्त कर सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है तथा सूर्य भी पंचम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी तथा इसमें आपको अवसरानुकूल उन्नति एवं सफलता प्राप्त होती रहेगी। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी तथा कठिन से कठिन समस्याओं का अपनी बुद्धिमता से समाधान करने में समर्थ होंगी। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक, साहित्य दर्शन एवं धर्म में भी आपकी रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। आप आधुनिक विज्ञान आदि के क्षेत्र में भी विशिष्ट सफलताएं अर्जित कर सकती है जिससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा समाज में सम्माननीय होंगी।

सूर्य की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा इस के क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का पूर्ण पालन करेंगी एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगी। इसी संदर्भ में आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं प्रतिभाशाली होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा पालन में भी सर्वदा तत्पर होंगी। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर विश्वास, सदभाव एवं सम्बन्धों में मधुरता का भाव बना रहेगा। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनका विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के माध्यम से ही करेंगे लेकिन दोंनो के प्रति सम्मान का भाव बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझी जाएंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही वे विशिष्ट उन्नति को प्राप्त करेंगे जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त वे बुद्धिमान, सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य कलापों को सम्पन्न करने वाले होंगे। जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे एवं उन्हें वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों के विषय में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपको रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध या शत्रुता का सामना समय समय पर करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभव को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे। आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करने में तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित करने तथा उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

आपके सेवक निष्ठा तथा ईमानदारी से आपकी सेवा करेंगे तथा आपके लिए वे आज्ञाकारी एवं विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते है। अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को जानकर बातूनी प्रवृत्ति से अन्य लोगों को भी बता देंगे इससे आपकी सामाजिक अवमानना हो सकती है। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करती रहें।

आप व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगी क्योंकि आप की रूचि विशेष रूप से धन संग्रह में रहेंगी यही कारण है कि आप सबसे मित्रता बनाए रखने में असफल रहेंगी। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण आप ऋण आदि भी ले सकती है तथा ऐसी स्थिति में ऋणदाता से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी।

आपके मामा मामी अच्छी प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको विशेष सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप लाभान्वित होती रहेंगी। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमों से सम्बन्धित रहेगी तथा इन पर आप काफी समय तक धन एवं समय बर्बाद करेंगी परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा गुप्त सूत्रों से अन्त में विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए खान पान में सावधानी रखें तथा चिन्ताओं से भी दूर रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भावस्थ स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है परन्तु राहु के प्रभाव से उसमें उग्रता स्वार्थीपन एवं आलस का भाव होता है एवं अपने कर्तव्यों की भी वह उपेक्षा करता है ।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे। सांसारिक कार्य कलापों को वह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे एवं अपने साहसिक कार्यो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे उनमें स्वाभिमान स्वार्थ एवं आलस का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन नहीं करेंगे फलतः पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों के प्रति उपेक्षा रखेंगे।

आपके पति श्याम वर्ण के आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु शरीर पुष्टता रहेगी। इससे उनके व्यक्तित्व आकर्षक बनेगा। साथ ही पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनकी रूचि होगी तथा इनका अनुकरण करने में प्रवृत होंगे। इसके अतिरिक्त समयानुसार साहित्य एवं कला में भी काफी समय व्यतीत करेंगे ।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा एवं विवाह पूर्व की वार्ताओं में भी गतिरोध आएंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना बनी रहेगी परन्तु पति की उग्रता तथा स्वार्थी प्रवृति से आपको यदा कदा अनावश्यक समस्याओं एवं विवादों का सामना करना पड़ेगा। अतः ऐसे समय में संयम से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह किसी मध्यम परिवार से होगा एवं सामाजिक तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सामान्य ही रहेगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके विशेष मधुर संबंध नहीं होंगे तथा एक दूसरे के प्रति उपेक्षा की भावना रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा भावना अल्प ही होगी तथा सुख दुख में उनकी कोई सहायता नहीं करेंगे। साथ ही साले एवं सालियां भी उनके कठोर स्वभाव एवं कटुवाणी से अप्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथा योग्य सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए साझेदारी में स्थिति अच्छी नहीं होगी एवं इससे लाभ की अपेक्षा हानि होगी। अतः साझेदारी की जीवन में दृढ़ता पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी। आध्यात्म ज्यौतिष तथा तंत्र मंत्र आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आपके अधिकाशं कार्य आध्यात्मिकता के आधार पर ही सिद्ध होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगी। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी परन्तु बाद में अपरिहार्य कारणों से इसे छोड़ भी सकती है जिससे आपको कष्ट की अनुभूति होगी। अतः इसके कारण पारिवारिक वातावरण भी अशान्त सा रहेगा लेकिन अपने बुद्धिचातुर्य तथा अन्य जनों की सहायता से जायदाद जोड़ने में सफल रहेगी। साथ ही यदा कदा बन्धुवर्ग से भी आपसी विवाद आदि हो सकता है।

आपका ससुराल पक्ष सामान्यतया सम्पन्न रहेगा तथा आपको वहां कोई कष्ट नहीं होगा। बीमा कराना आपके लिए सामान्य रूप से लाभदायक रहेगा यद्यपि इनसे कोई विशिष्ट लाभ नहीं होगा परन्तु जितना नुकसान हुआ है वह पूर्ण हो जाएगा। आपकी कुंडली के अनुसार जीवन में कोई छोटी या विशेष दुर्घटना का योग नहीं है तथापि समय समय पर सामान्य घटनाएं घटती रहेगी परन्तु इनसे आपको कोई विशेष नुकसान या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखों का आनन्द पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श तथा उदार प्रवृति की महिला होंगी तथा भगवान के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी। साथ ही अपने धार्मिक कार्यो को दिखावे के लिए नहीं बल्कि मन से करेंगी तथा अन्य जनों की भलाई के कार्यो को भी अवसरानुकूल सम्पन्न करती रहेंगी। आप दैनिक जीवन में पूजा ध्यान एवं योगादि अध्यात्मिक कार्यो को करती रहेंगी तथा मानसिक शान्ति के लिए तीर्थ यात्राओं या धार्मिक स्थलों पर जाएगी। महात्माओं तथा धर्म के गुरूओं के प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा रहेगी। साथ ही अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मो का भी पूर्ण सम्मान करेंगी तथा धार्मिक एवं पारिवारिक परम्पराओं तथा रीति रिवाजों का भी अनुपालन करने में तत्पर रहेंगी।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगी तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने में परिश्रमशील रहेंगी। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान तथा आध्यात्म संबधी ग्रंथों का अध्ययन करके ज्ञान अर्जित करेंगी। ज्यौतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी एवं अर्न्तप्रज्ञा शक्ति के द्वारा सत्य पूर्वाभास या भविष्य वाणियां करने में समर्थ रहेंगी।

आप धार्मिक तथा व्यवसायिक उददे्श्य की पूर्ति के लिए लम्बी दूरी की यात्राओं को सम्पन्न करेंगी तथा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में मान सम्मान ख्याति एवं लाभ की प्राप्ति होगी साथ ही परोपकार संबंधी कार्य भी करती रहेंगी। जीवन में यदा कदा स्वार्थवश आप कंजूसी का प्रदर्शन भी करेंगी। इसके साथ ही पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से आपका जीवन धन ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेगा तथा सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही चन्द्रमा भी दशम भाव मे ही स्थित है। वृश्चिक राशि एवं चंद्रमा दोनों जलतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रदान होगा तथा कार्य क्षेत्र में समय समय पर परिवर्तन भी करेंगी। ऐसे प्रयत्नों से आपको लाभ भी होगा परंतु कई बार अनावश्यक परेशानियां भी उत्पन्न हो सकती हैं। अतः ऐसी प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनोग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थ यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिटटी के खिलोने, बालू, ईट, रेत का कार्य, द्रवपपदार्थ यथा दूध, घी दही का कार्य सफेद एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, समुद्री आयात निर्यात तथा कला एवं चित्रकारी के क्षेत्र में कार्यारंभ करने से वांछित धन एवं लाभ अर्जित कर सकती हैं। साथ ही इसमें आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा अनावशयक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः इन्हीं क्षेत्रों में आपको अपने व्यापार का प्रारम्भ करना चाहिए।

दशमभावस्थ चंद्रमा के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से किसी सम्मानित एवं अधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी। समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा लोगों से यथोचित सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। आप किसी संस्था या क्लब में भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी के रूप में मनोनीत हो सकती है। लेकिन नीचस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से मान सम्मान एवं यश की प्राप्ति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है। अतः इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी विद्वान बुद्धिमान एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे सभी लोगों के मध्य आदरणीय समझें जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य बनाने में तत्पर होंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही पिता के सम्मान में भी वृद्धि करेंगी। लेकिन आपसी संबंधों में मधुरता की न्यूनता होगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेद बने रहेंगे। साथ ही आप में आज्ञाकारिता का भाव भी कम होगा जिससे महत्वपूर्ण कार्यो में पिता की सलाह कम ही लेंगे। अतः इसमें मधुरता के लिए आपको उपरोक्त परिस्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ तथा महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से अपनी इच्छाओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही समस्त सुख संसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रचुर मात्रा में निरन्तर धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज, प्रशासनिक कार्यो तथा कानून आदि के क्षेत्र से लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी यदि आप कार्यरत नहीं है तो आपके पति इन स्रोतों से धन अर्जित करेंगे।

बड़े भाई से आपका पूर्ण लगाव रहेगा तथा वे आपको सुख धन लाभ एवं स्नेह प्रदान करेंगे साथ ही आप भी उनका पितृवत सम्मान करेंगी तथा समय समय पर उनके निर्देशों का पालन भी करेंगी। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी तथा आपके सभी मित्र शिक्षित गुणवान बुद्धिमान तथा पराक्रम से युक्त रहेंगे। जीवन दर्शन के प्रति आप जिज्ञासु रहेंगी अतः मित्रों से आपको इस विषय में प्रचुर मार्गदर्शन मिलेगा। आप भी अवस्था के साथ साथ युवावर्ग को उपदेश प्रदान करेंगी। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा गणमान्य विद्वान एवं नेताओं आदि से आपकी अच्छी जान पहचान रहेगी तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी एवं सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तन मन धन से तत्पर रहेंगी। आपसे सभी लोग प्रभावित रहेंगे तथा समय के साथ साथ आप कोई विशिष्ट सामाजिक सम्मान भी अर्जित कर सकती है। इस प्रकार आपका जीवन धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फल स्वरूप किसी भी माध्यम से इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगी साथ ही इससे आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आप एक आत्म विश्वासी महिला होंगी तथा जीवन में आर्थिक तथा व्यापारिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं हिचकेंगी जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी रहेगी तथा इसमें सुदृढ़ता के कारण जीवन में सुख एवं आनंद प्राप्त करने के लिए मुक्त भाव से व्ययशील रहेंगी।

पारिवारिक जनों के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा उनकी सुख सुविधाओं, रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगी। साथ ही अपने सामाजिक स्तर में भी वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं वैभव की कमी नहीं रहेगी। अतः आनंद पूर्वक उपरोक्त क्षेत्र में सम्मान एवं आदर प्राप्त करेंगी साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं इच्छित व्यय करेंगी। इससे लोग आपके दानशीलता के भाव की मुक्त कंठ से प्रसंसा करेंगे।

जीवन में आपकी दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेगी। ये यात्राएं व्यवसाय या भ्रमण संबंधी हो सकती है। यद्यपि प्रारंभ में इन पर व्यय होगा परन्तु भविष्य में इससे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आपकी इसी संदर्भ में विदेश संबंधी यात्रा भी हो सकती है तथा काफी समय तक आप वहां प्रवास भी कर सकती है लेकिन बाई आंख संबंधी कष्ट या परेशानी हो सकती है परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा।

नक्षत्रफल

आप अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मृग, गण देव, वर्ण विप्र, वर्ग सर्प तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ने" से प्रारम्भ होगा यथा नेहा आदि।

आप प्रारम्भ से ही उद्यमी प्रवृति की होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसी परिश्रम के फल स्वरूप आप अपने अधिकांश कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही घर से बाहर देश विदेश में भी आपका आवागमन होता रहेगा। अपने समीपस्थ सम्बन्धियों तथा बन्धुजनों के कल्याणकारी कार्यों को करने में आप सदैव तत्पर रहेंगी तथा यत्नपूर्वक उनको सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। इससे आपका अर्न्तमन अत्यन्त उल्लसित रहेगा।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त ही मृदु तथा प्रिय वाणी का उपयोग करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। धन का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा। इससे आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही जीवन में समस्त सुखों का भी आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में भी सौभाग्यशाली महिला सिद्ध होंगी। आप अपने समाज में एक ख्याति प्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। इसके अतिरिक्त समाज से आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा एवं लोग आपको पूजनीया समझेंगे। साथ ही ऐश्वर्य से युक्त रहकर आप एक सामर्थ्यवान महिला भी होंगी।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप अपने जीवन काल में विपुल धन की स्वामिनी बनेंगी तथा अपने अधिकांश समय को घर से बाहर देश विदेश में ही व्यतीत करेंगी। कभी कभी अपने कार्य में व्यस्तता के कारण या अन्य कारणों से आपको भूख से भी व्याकुल रहना पड़ेगा। भ्रमण या घूमने फिरने की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा समय समय पर पिकनिक या यात्रादि कार्यक्रमों का प्रसन्नचित से आयोजन करेंगी। इससे आपके मन को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपका शरीर तथा मुखमंडल हमेशा कान्ति से सुशोभित रहेगा। साथ ही आप एक उत्सव प्रिय महिला भी होंगी तथा समय समय पर पार्टी इत्यादि के आयोजन में रूचिशील रहेंगी तथा इनका आयोजन करती रहेंगी। आपके शत्रुवर्ग आपसे अत्यन्त ही भयभीत रहेंगे तथा आपभी उनके दमन करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नाना प्रकार की कलाओं को भी जानने वाली होंगी तथा अपने जीवन काल में विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव का उपभोग करेंगी।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप ताम्र पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप राज्य या सरकार से नित्य धनलाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। साथ ही आप सन्तोषी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा। अतः सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। जीवन में विविध प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। माता पिता के प्रति आप पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी तथा उनसे भी आपको पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त होगी ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विदुषी के रूप में आपका सम्मान होता रहेगा। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगी तथा वाहन एवं भूमि आदि जायदाद से भी सुसम्पन्न रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा स्वभाव में साहस का समावेश रहेगा। आप परोपकार संबंधी कार्यों में भी में तत्पर रहेंगी तथा सज्जन पुरूषों का नित्य आदर करेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत रहेगा। साथ ही शारीरिक वर्ण में तनिक श्यामलता दृष्टिगोचर होगी। आपके हाथ अथवा पैरों में मत्स्यचिन्ह भी विद्यमान रहेगा। साथ ही हाथ की सभी रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की रहेंगी। आप अपने माता पिता तथा गुरूजनों से संबंध रखेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगी। परन्तु बुद्धि से आप अत्यन्त

तीक्ष्ण रहेंगी एवं बुद्धिचातुर्य तथा परिश्रम से राज्य या सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगी। आपको कठोर तथा क्रूर कर्म करना रूचिकर लगेगा। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी विभाग में आप कार्यरत हो सकती है। यदा कदा आप स्वाभाविक दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न भी रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर तथा मस्तक भी विस्तृत रहेगा। अन्य लोगों की वस्तुओं को देखकर आपके मन में लोलुपता का उदय होगा। आपका शरीर लावण्यता से भी युक्त रहेगा। आप ईश्वर एवं धर्म के प्रति भी अपनी आस्था प्रकट करेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून भी चोट ग्रस्त रहेंगे। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। आप नाना प्रकार के कार्यों को करने में रत रहेंगी। बन्धधुवर्ग से आपको सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपका समस्त समाज में प्रभाव तथा प्रभुत्व स्थापित रहेगा तथा आपके पराक्रम को सभी लोग स्वीकार करेंगे। आपके स्वभाव में उग्रता भी रहेगी एवं यदा कदा सरकार से आपको आर्थिक हानि भी उठानी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का भी पालन पोषण करने में समर्थ रहेंगी। पुरूषों के सम्बन्ध में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली सिद्ध होंगी तथा इनसे पूर्ण आदर सम्मान, सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी। आप राजकीय सेवा में भी तत्पर रहेंगी लेकिन दूसरे लोगों के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में हमेशा बनी रहेगी तथा इसके लिए आप सदैव प्रयत्नशील भी रहेंगी। आप दृढ प्रतिज्ञावाली महिला होंगी तथा जिस किसी भी कार्य को एक बार प्रारम्भ करेंगी उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगी। इसके अतिरिक्त साहस से भी आप परिपूर्ण रहेंगी तथा हमेशा किसी न किसी कार्य में रत रहेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप समय व्यतीत करने के लिए या मनोरंजन के लिए जुआ आदि खेलने को भी उत्सुक रहेंगी परन्तु इससे आप को लाभ की अपेक्षा आर्थिक हानि ही अधिक होगी। आपमें स्वभाविक उग्रता विद्यमान रहेगी अतः अन्यजनों से आपका विवाद होता रहेगा। आप कभी कभी अपने आपको हृदय से अत्यन्त ही दुर्बल अनुभव करेंगी। इसके साथ ही शान्ति आपको कभी कभी ही प्राप्त होगी तथा अशान्त ही अधिक मात्रा में रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बाल्यकाल से ही आप भ्रमणप्रिय रहेंगी तथा इधर उधर भ्रमण करती रहेंगी। आपकी प्रवृति भी अभिमानी होगी जिसका आप समय समय पर अन्यजनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी। अपने स्वजनों के प्रति भी आपके मन में प्रमे का भाव विद्यमान रहेगा तथा धनार्जन करने में आप अपूर्व साहस का परिचय देंगी एवं साहस पूर्वक धनार्जन करेंगी। कभी कभी आपनी निपुणता का परिचय भी देंगी।

बालप्रवासी कूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर एवं प्रिय रहेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरलता से युक्त होगी। अपने विचारों को सुगमता पूर्वक प्रकट करना तथा अन्य की बातों को सरलता से ग्रहण करना आपकी प्रवृति होगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध भोजन करना अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उत्तम तथा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आप देखने में सुन्दर एवं दर्शनीय होंगी तथा स्वभाव आपका दानशील रहेगा तथा अवसरानुकूल यत्नपूर्वक आप इस प्रवृति का अनुसरण करती रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा सादगी से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी। साथ ही समाज में एक महान विदुषी के रूप में भी आप आदरणीया रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा

वैभवशाली होता है।

मृग योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वतंत्र प्रवृति की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यकलापों को बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। आपके स्वभाव में उग्रता का अभाव रहेगा तथा शांत प्रवृति से आप कार्य करेंगी। साथ ही आप अच्छे साधनों के द्वारा अपनी आजीविका का अर्जन करेंगी। आप सत्य वक्ता होंगी तथा जीवन में इसका अनुपालन करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। धर्म के प्रति भी आपकी पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा रहेगी एवं देवता तथा बन्धुवर्ग के प्रति आपका पूर्ण स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा उनकी सहायता के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक शूरवीर तथा साहसी महिला होंगी तथा विवादादि कार्यों में सर्वदा विजयी रहेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी

सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा सर्वदा अशुभ फल कारक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को शुभारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण रूपेण सचेत रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक नही चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए एवं नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन गेहूं, मल्का आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा सोमवार के उपवास भी रखने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल भी कम होंगे। इसके अतिरिक्त मंगल के निम्न तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान द्वारा 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके शुभफलों में पूर्ण वृद्धि होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। जिसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्च शिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगी। संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र की माता होंगी। सुखी माता-पिता/सास-ससुर से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाली होंगी, पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाली, बहादुर होंगी, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगी। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप/सास-ससुर का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप अच्छा रुतबा प्राप्त करेंगी। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से पेट की खराबी होगी जिससे क्रोधी स्वभाव की होंगी। पति छोड़े या मर जाए, दूसरी शादी भी हो सकती है ऐसा शक है। पति की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। पति द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ससुराल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. पति के भाई, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगी। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करेंगी। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करती हैं

तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता/सास-ससुर का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य किये, बड़े-बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपके प्रेमी या विधुर पुरुषों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाज और तैरते को पानी में डुबाने वाली होंगी। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी पुरुष के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां/सास से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता/सास को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :
1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल पांचवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप शांत स्वभाव की हैं। आपको अपने जन्मस्थान से दूर निवास करना पड़ सकता है आप बहुत यात्रा करेंगी। आपको धन-संपदा मिलेगी। पति एवं संतान सुख प्राप्त होगा। आपकी औलाद अच्छी और सुखी रहेगी। आपका बेटा तथा पोता भी धनवान होगा। आप धनवान संतान की माता होंगी। आपकी उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ेगी आप अमीर होती चली जाएंगी। आप या आपके खानदान में कोई हकीम या डॉक्टर हो सकता है। आपके बुजुर्गों की माली हालत अच्छी होगी। प्रत्येक वर्ष जन्मदिन के बाद से उन्नति और तरक्की होती चली जाएगी। आप अपने भाई या बाप-ससुर की हैसियत से ऊंचे दर्जे की महिला होंगी। आपकी पुत्र प्राप्ति के बाद भाग्योन्नति होगी। आपके भाग्य के संबंध में अच्छा असर होने की उम्मीद है।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, आपने परिवार के लोगों से बिना कारण दुश्मनी रखी, तंबोला आदि खेला, संतान या पति से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपको कानों की तकलीफ, घुटने या पैरों में किसी प्रकार का कष्ट या जोड़ों का दर्द हो सकता है। संतान प्राप्ति या संतान सुख में बाधा की आशंका है। आपको अठराह की बिमारी या पति को पेट में

बीमारी हो सकती है जो संतानोत्पत्ति में विघ्नकारक होती है, हो सकती है। तंबोला आदि में हानि का योग है। पुत्र से क्लेश, परिवार में किसी को दमा या मिरगी का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।
2. शराब-बीयर न पियें, मछली न खायें।

उपाय :
1. घर में नीम का पेड़ जमीन या गमले में लगावें।
2. रात को लोटे में पानी भरकर सिरहाने रख कर सुबह किसी पौधे या बाग-बगीचे में डालें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से ऐसा लगता है कि आप मनमौजी होंगी। आप कम बोलेंगी परंतु गंभीर बात ही बोलेंगी। आपकी शिक्षा थोड़ी-बहुत बाधा के उपरांत पूरी होगी। दिमागी कार्य, व्यापार आदि से पूर्ण लाभ मिलेगा। आप विदेश का भ्रमण करेंगी। समुद्री यात्रा से पूर्ण लाभ प्राप्त होने की आशा है। आपके पास कृषि योग्य भूमि होगी। अमूमन आपका किसी के साथ झगड़ा विवाद नहीं होगा। यदि किसी कारण-अकारण किसी झगड़ा-मुकद्दमा हुआ भी तो आप की जीत होगी। प्रामाणिकता से धन कमाने से आपको यश भी मिलेगा। पति धनी परिवार से मिलेगा। आप स्वयं सम्पत्तिवान होंगी। 34 वर्ष की आयु के बाद पूर्ण संतान सुख मिलेगा। वृद्धावस्था अच्छी गुजरेगी। आपके मुंह से निकली बातें पूरी होंगी। अपनी विद्या, दिमागी काम, व्यापार से अच्छा धन कमाएंगी। कृषि कार्य, भाषण देना, लिखने-पढ़ने के काम आपके लिए अनुकूल होंगी। लेखिका या प्रिंटिंग या छपाई के कामों में अच्छा फल मिलेगा। आपको राजयोग का सुख मिलेगा। आपके पास दौलत और जमीन-जायदाद अच्छी रहेगी।

यदि आपके घर का मुख्य दरवाजा उत्तर दिशा में होगा या घर से उत्तर दिशा में लड़की का विवाह किया, ससुराल वालों से झगड़ा किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से 34 वर्ष की उम्र के लगभग माता की मृत्यु हो सकती है। 37 वर्ष पति सुख मिलेगा, दो विवाह योग, एक 34 से पहले दूसरा 34 वर्ष के बाद होने की संभावना है। आपको नेत्र रोग भी हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लड़की/बहन/ननद का विवाह घर से उत्तर दिशा की तरफ न करें।
2. सेवक/नौकरों से बचें।

उपाय :
1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी के बर्तन में दूध भर कर वीराने में दबायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दूसरे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप गुरु का दायित्व निभाएंगी शिक्षा तथा ज्ञान फैला कर उनकी समस्याओं का हल निकाल लेंगी। आपका गृहस्थ जीवन सुखी होगा। दौलत बहुत आ जाएगी। सरकारी कामकाज के अवसर मिलेंगे। आप अपनी जायदाद खुद बनाएंगी। आपके पिता/ससुर के आशीर्वाद से आपकी दौलत में वृद्धि होगी। अगर आप सरकारी नौकरी करती हैं तो 27वें साल में सरकारी नौकरी में तरक्की होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आप में हुकूमत करने की ताकत होगी और जीवन की हर मंजिल पर फतह पाएंगी। आपका कुछ बुरा होने वाला होगा उसके पहले आपको पता चल जाएगा। आपको अचानक दबा धन मिलने की संभावना है। आपको विद्या का बहुत लाभ मिलेगा। आपके पति सुंदर होंगे। आप जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। आप बहादुर होंगी। खेती-बाड़ी या मिट्टी से संबंधित कामों में या कपड़े से संबंधित नौकरी-व्यापार में अच्छा लाभ होगा।

यदि आपने पति का विरोध किया, सर्राफी-जौहरी का काम किया, माता-पिता/सास-ससुर का विरोध किया या माता-पिता/सास-ससुर को कष्ट दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपकी नजर पर बुरा प्रभाव पड़ने की शंका है। बुढ़ापे में स्वास्थ्य ईक नहीं रहेगा और आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहेगी। आपको दूसरे के झगड़े में पड़ने से नुकसान उठाना पड़ेगा। आप कुछ दुःखी रहेंगी ऐसी आशंका है। आप में बेरहमी भी होगी। पुलिस/कोर्ट से दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सर्राफी/जौहरी के काम न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान होंगी। पति, संतान सुख मिलेगा और स्वस्थ एवं खुश रहेंगी। आपकी यात्राएं अधिक और सफल

होंगी। आपके पति अपनी इच्छा से सभी काम करेंगे। विवाह के बाद घर में कुआं खुदवाना शुभ रहता है। आपके पति और संतान का बुरा प्रभाव 34 वर्ष की आयु में दूर होगा। शादी के चार साल तक खूब ऐशो आराम पाएंगी। आप में आध्यात्मिक रुचि और शक्ति निश्चित होगी। आपको राजयोग के संयोग से जीवन में सुख प्राप्त होगा। यदि आप मामा और मौसी के कारोबार में साथ दें तो उनका व्यापार सफल होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन सुख मिलेगा। माता/सास स्वस्थ और बहुत दिनों तक आपको सुख देंगी। आप अपने खानदान या गांव, देश-विदेश में प्रसिद्ध होंगी। आप उत्तम भोजन, भ्रमण एवं शयन की शौकीन होंगी। नौकरी-व्यापार पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। सामान्यतया आप सरकारी विभाग से लाभ पायेंगी, उच्च पद तथा राजकीय सुख से युक्त रहेंगी।

यदि आपने सुरमें से संबंधित काम किया, 21-22, 24-25 वर्ष आयु में विवाह किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी माता और आपके पति में झगड़ा होता रहेगा। आपके लिए इश्क और प्रेम तबाही का कारण बनेगा। आपके पति आपके खानदान के लिए मनहूस होंगे। गंदे प्रेम संबंध का बुरा फल मिलेगा। आप नशा आदि में पड़ कर बर्बाद हो सकती हैं। जीवन में दो विवाह संभव हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब न होने दें।

उपाय :

1. कुएं में केसर डालें।
2. चार आड़ू की गुठली में सुरमा भर कर वीराने में दबायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि तीसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप स्वस्थ, विद्वान, विवेकी और खर्चीले स्वभाव की होंगी। धन की कमी नहीं रहेगी। आपके पास बहुत धन आएगा। आप पराए लोगों की मदद करेंगी। आपको चोरी और धन नाश के लिए सतर्क रहना चाहिए। आप सबकी मदद करेंगी मगर वह व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ेगा, और खुद आराम पाएगा। आपके जीवन में अड़चने भी पैदा हो सकती हैं। आप साहसी होंगी। भाई-बहन से सामान्य सुख के आसार हैं। आप दुःसाहस करने में भी बाज नही आएंगी। लोहा/मशीनरी से संबंधित कामों से धन लाभ होगा।

यदि आपने चोरी-ठगी की, घर का मुख्य दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में हुआ, दूसरे लोगों के काम बिगाड़े तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से शराब पीना, मांस खाना अच्छा फल नहीं देगा। नगद धन

का अभाव रह सकता है। नर संतान को कष्ट की आशंका है। आपकी आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। छोटे भाई से दूरी या उसका सुख न होगा। भाई-बंधु आपकी नेकी को भूल जाएंगे। चोरी-ठगी करने पर भी धन की कमी रहेगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। मकान बनाने में बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें। मछली का शिकार न करें।
2. कीकर-बेरी का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. तीन कुत्तों को भोजन का हिस्सा देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष विवाह हो जाए तो बुरे फल की आशंका बनती है। आपका संबंध राजनीतिज्ञों से रहेगा। अगर आप सरकारी विभाग में सेवारत हैं तो सरकारी विभाग में पदोन्नति एवं पुरस्कार मिलने की आशा है। धन और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप बिजली के काम, पुलिस या जेल विभाग की नौकरी से आजीविका चला सकेंगी। शेयर/लाटरी में दिवालिया हो सकती हैं। आपको कन्या संतान का सुख विवाह के बाद जल्द ही परंतु पुत्र सुख में विलंब हो सकता है। विदेश की यात्रा भी हो सकती है। आप जन्म स्थान से बाहर रह कर ही सुखी रह सकेंगी। आप अपने धन पर यदि नियंत्रण नहीं रख सकीं तो सगे-संबंधी निश्चित रूप से धन की क्षति करने में पीछे नहीं रहेंगे।

यदि आपने अपने पास दोहता रखा या कुत्ता पाला, समाज में बदनामी के कार्य किये, पति से मार-पीट की तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से भाई-बन्धु आपकी संपत्ति खा जाएंगे। भाई द्वारा भी आपके धन का दुरुपयोग हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय, बिजली के सामान की दुकानदारी या व्यवसाय से हानि की आशंका है। पुलिस, जेल विभाग की नौकरी में धोखा-धड़ी करेंगी तो आपकी आयु क्षीण होगी। पति से मन-मुटाव रह सकता हैं इसका कारण आपका शंकाग्रस्त रहना बताता है। पति से जुदाई, मुकद्दमेबाजी हो ऐसी शंका है। आपको राजदरबार से परेशानी या काम काज में रुकावट नहीं आएगी। जीवन में आपकी बदनामी भी हो सकती है। जीवन में संघर्ष रहेगा। पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं रहेगी। धन-संपत्ति एवं पति के सुख में अभाव रह सकता है। कोई गर्भपात संभव है। पति को सिरदर्द की बीमारी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घर में कुत्ता न पालें।
2. पुलिस व जेल विभाग में काम न करें।

उपाय :
1. घर में 2 चांदी की ईंटें कायम करें।
2. नारियल का दान करें।
3. चांदी की डिब्बी में चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सुखी, धनी, मेहनती होंगी। आपकी तरक्की अधिक तबदीली कम रहेगी। आप अपने पिता/ससुर के लिए वरदान सिद्ध होंगी। आप पिता/ससुर की सेवा करेंगी। आप सरकारी विभाग में सेवारत होंगी तो अच्छी सरकारी आफिसर हो सकती हैं। यात्रा का आदेश पत्र प्राप्ति के बावजूद यात्रा न होगी। आपकी आजीविका निरंतर चलती रहेगी। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में भी हो सकता है। आपको शक्ति मिलेगी। आपके भाग्य में शुभ फल प्राप्त होगा। पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता/सास पर भी अच्छा ही प्रभाव रहना चाहिए। परंतु यह कोई जरूरी नही है कि माता/सास पर शुभ प्रभाव ही पड़े। आप लाखों का लेन-देन करेंगी परंतु धन जमा होने में आशंका है। आप गुरु-पिता की सेविका होंगी।

यदि आप अपने पिता/ससुर से दूर रहे, रिश्तेदारों को बर्बाद करने की कोशिश की या मकान को बिना कारण बेचा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से जहां आपका जन्म होगा या रिश्तेदार तबाह हो जाएंगे। आपके मन में काल्पनिक फिक्र पैदा हो सकती है। पुत्र को कोई कष्ट उत्पन्न होगा। आप पर बुरा असर पड़ सकता है। आपकी गृहस्थी पर कुछ बुरा प्रभाव पड़े ऐसी आशंका है अर्थात् नाभि के नीचे की बीमारियां होंगी या आप को गुप्तांग में बीमारी हो सकती है। आपकी लंबी या विदेश की यात्रा बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ सकता है। आपको संतानोत्पत्ति की चिंता बनी रहेगी। पोते के जन्म के बाद सेहत खराब हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. बकरी न पालें या बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिर के मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :
1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले-सफेद कुत्ते की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चो की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत अनुकूल नही रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादाप्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ,खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगीऔरदान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। सौभाग्य से युक्त हो कर आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही उच्चाधिकरी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होता रहेगा। इस मास आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अध्ययन या ज्ञार्नाजन में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसको प्राप्त करने में सफल भी रहेंगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस समय आप वांछित द्रव्य पदार्थो को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा उनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगी। इस मास में समाज में आपके पराक्रम एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी तथा आपकी विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त एवं प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप उन्नति करेंगी। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं तथा पति से पूर्ण सहयोग, नवीनवस्त्रों की प्राप्ति तथा अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। अतः यह मास आपके लिये अत्यंत ही सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगी। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक कष्ट आपको होते रहेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में अत्यन्त ही परिश्रम तथा पराक्रम से अल्प मात्रा में सफल हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती हैं। आपके संबधियों तथा मित्रों से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आजीविका संबधी कार्यों में भी इस मास में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे।शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इस समय जिस कार्य को आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अप्रसन्न रहेंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ आप को यदाकदा शुभफल भी प्राप्त होंगे। इससे आप पति का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप किसी धार्मिक आचरण करनेमें भी सफल हो सकती हैं।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में सुख एवं प्रसन्नता अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे पराजित एवं भयभीत रहेगा। साथ ही विविध प्रकार से आय स्त्रोतों में वृद्धि होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से लाभार्जन भी कर सकेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप उचित सहयोग तथा सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगी। इस मास में आप सौभाग्य शाली रहेंगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी समय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को पूर्ण करने में भी आप सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त किसी धार्मिक कार्य को भी आप इस समय सम्पन्न कर सकती हैं। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकाशं रूप से शुभ फलों को ही प्राप्त करेंगी तथापि अल्प मात्रा सें अशुभ फल प्राप्त होंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। इस मास में समाज बन्धु तथा मित्रों के मध्य भी आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा इनसे आपके संबध भी मधुर रहेंगे। साथ ही इनसे वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित सहयोग तथा सम्मान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप मिष्ठान का उपभोग इस मास में अधिक मात्रा में करेंगी परन्तु स्वास्थ्य मध्यम ही रहेगा। इस मास में शत्रु वर्ग को पराजित तथा भयभीत करने में आप सफल मानी जाएंगी। साथ ही पति से भी आप मनोवांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त व्यापार या अन्य कार्यो के द्वारा भी आप धनार्जन करने में समर्थ रहेगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप गर्मी या पित्तोत्पन्न रोगों से शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा अपने कार्य कलापों को भी सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस

समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा अन्य प्रकार से भी सुखोपभोग करने में सफल सिद्ध होंगी। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगी। अन्य लोगों की भलाई के लिए भी कार्यो को करने के लिए आप तत्पर रहेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय भी प्राप्त करेंगी जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी। इस मास भाई बहिनों का आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपसी संबध भी मधुरता से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय में पूर्ण होंगे जिससे आप हृदय से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र द्रव्य या स्वर्णादि के आभूषणों को भी प्राप्त कर सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सामान्यतया कष्ट से व्यतीत करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा अन्य ओर से भी कष्ट प्राप्त होंगे। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे। अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः मानसिक रूप से आप परेशान तथा अशान्त रहेंगी। इस समय पारिवारिक जनों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में भी इस समय व्यवधान आएंगे तथा उन्नति मार्ग भी अवरूद्ध होगा। इस मास आपके स्थान परिवर्तन की भी संभावनाएं रहेंगी साथ ही कोई अस्थाई कार्य भी छूटेगा। सामाजिक जनों से आपका वैमनस्य का भाव अधिक रहेगा अतः सामाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग भी उत्पन्न होंगे तथा धन भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप अशान्त एवं दुःखी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप ठंड या वातोत्पन्न रोगों से अस्वस्थ रहेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में कमी आएगी तथा बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप बुद्धिमता से सम्पन्न करने में सफल रहेंगी।साथ ही पुत्र से आप सुख प्राप्त करेंगी एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। समाज में भी आपकी प्रभुता में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास

आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा किसी शुभ समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं निष्ठा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी फलतः समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों या ठंड से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी समाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके साथ ही आग के द्वारा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शारीरिक दुर्बलता बनी रहेगी। साथ ही शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी जिससे मानसिक रूप से उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा दंड मिलने की भी संभावना रहेगी। इस समय आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से आप कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए प्रवृत होगी जिसके लिए बाद में पश्चाताप करेंगी। साथ ही मित्रों एवं संबधियों से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज से भी आप अपने को उपेक्षित समझेगी एवं आपकी आशाएं भी इस मास में अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति एवं पुत्र का वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति कर सकती हैं। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक रूप से सन्तुष्टि एवं शान्ति की अनुभूति कर सकेंगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा कई प्रकार से परेशानियां भी होगी। इस समय आप पति तथा अन्य बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगी साथ ही आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में अल्पता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः शारीरिक रूप से भी आप काफी अस्वस्थ रहेंगी तथा शरीर निर्बलता से युक्त रहेगा। इस समय आपके मन में लोभ के भाव की भी अधिकता रहेगी। मित्रों तथा बन्धुवर्गो से संबधों में

तनाव उत्पन्न होगा तथा सभी मित्र शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त एवं उद्विग्न रहेंगी। समाज में भी अन्य जनों से वाद विवाद या संघर्ष की स्थिति रहेगी जिससे समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सावधानी तथा बुद्धिमतापूर्वक इस समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितोत्पनन रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार क्षति प्राप्त करेंगी। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ सिद्ध होगा।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकाशं अशुभ फल प्राप्त करेंगी परन्तु शुभफल भी न्यूनाधिक अवश्य ही घटित होंगे। इस समय आप शत्रुवर्ग से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी तथा घर में किसी प्रकार की चोरी की घटना भी हो सकती है। इस मास में आपका धन व्यय अधिक होगा अतः आर्थिक रूप से आप कमजोर होंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी फलतः शरीर में भी दुर्बलता रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की किसी प्रकार की यात्रा भी कर सकती हैं। साथ ही अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगी फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही चिन्तित तथा उद्विग्न रहेंगी इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक इस मास को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः आप पति का पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होगा। इस समय आप की बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी कीर्ति में भी वृद्धि होगी।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप किसी सम्मानित पद को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा सरकार या अधिकारी वर्ग से भी लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। साथ ही पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश भाग्योदय सम्बन्धी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा दूर समीप की लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर

सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। इस प्रकार इस समय आपकी सर्वत्र यश तथा सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी एवं उनमें लाभ अर्जित करके सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी असीम श्रद्धा रहेगी। इस प्रकार इस महीने को आप अत्यंत ही सुख एवं आनंदपूर्वक व्यतीत करेंगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे अतः आप पदोन्नति भी प्राप्त कर सकती हैं। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी तथा उनकी भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में समाज में आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपके यश में भी विस्तार होगा साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं में भी आप सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा पुरूषवर्ग से भी लाभ हो सकता है। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ या सुखार्जन करने में सफल रहेंगी तथा धर्म में आपकी श्रद्धा रहेगी एवं समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रूकावटें डाल जा सकते है। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नही तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरूआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते है, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा ।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान कास्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा ।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थानपर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी तथा पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप इच्छित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगी। बन्धुवर्ग एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही वे आपको अपना पूर्ण सहयोग भी प्रदान करेंगे। इस समय आप वांछित द्रव्यों को प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको अपेक्षत सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा वांछित धन लाभ तथा सुख अर्जित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आपको समाज से पूर्ण सम्मान तथा यश प्राप्त होगा एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका व्यय अधिक होगा तथा दुष्ट व्यक्तियों से आपका मेल जोल रहेगा जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगी ।साथ ही धनाभाव की समस्या भी उत्पन्न होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप बैचेन तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बन सकते है। इस मास में आपके मित्र तथा बन्धुवर्ग से अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे। शत्रु पक्ष से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। फलतः कष्ट पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी तथा आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी आप इस मास में कर सकेंगी।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आाप शारीरिक रूप से सामान्यतया स्वस्थ रहेंगी तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके आय स्त्रोंतो में इस समय उन्नति होगी फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष दुर्बल रहेगा एवं आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेगा। इस समय आप अपने उच्चाधिकारी वर्ग से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। अपने प्रमुख कार्य के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोंतो से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे।आपके सौभाग्य में भी इस समय वृद्धि होगी तथा कई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। अतः आप यदा कदा गर्मी या पितदोष से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय किसी किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त अग्नि के कारण भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में सफल रहेंगी। सामाजिक जनों के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही पारिवारिक लोगों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे उचित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सम्मान अर्जित करेंगी तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होते रहेंगे। इस समय आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी अधिक रूचि रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस मास में शत्रुपक्ष आपसे पराजित, भयभीत तथा चिन्तित रहेगा तथा व्यापार एवं अन्य कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल सिद्ध होंगी। इस प्रकार आपका पारिवारिक जीवन भी सुखी तथा शान्त रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णादि के आभूषणों को भी अर्जित करने में सफल हो सकती हैं। अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फलों को भी प्राप्त करेंगी। इस समय आप स्व पराक्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुख का उपभोग भी करेंगी। सामाजिक जनौं के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि

होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही आप सामाजिक लोगों के परोपकार संबधी कार्यों को भी इस मास में सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगी। आपके मित्रों तथा बन्धुओं से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। अतः आप वात जनित या ठंड से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त आग द्वारा भी आपको किसी प्रकार की क्षति हो सकती है। अतः सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी जिससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करती रहेंगी। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। साथ ही मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। इस मास में आपकी नौकरी या व्यापार में मंदी आयेगी तथा अनावश्यक बाधाएं भी उत्पन्न होंगी जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान होंगी। इसके साथ ही आपका कोई जीविका संबधी कार्य बंद होगा या उसमें कोई परिवर्तन होगा। समाज में लोगों से भी आपके विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे अतः आपके सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि एवं शरीर में किसी रोग के उत्पन्न होने की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप ठण्ड या बात से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में पछताना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि द्वारा भी आपको किसी प्रकार की हानि पहुँच सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगी। सन्तति पक्ष से आपको इस मास में पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ की भी संभावना बनेगी। आपके प्रभुत्व को इस समय सभी लोग स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। साथ ही अच्छे समाचार आपको मिलेंगे।

इस समय आपके सभी सांसारिक कार्य पूर्णतया सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा निष्ठा पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा एवं इनसे धनार्जन भी प्रचुर मात्रा में होगा।आपकी महत्वपूर्ण आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्रों से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण भी प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः यह माह आपके लिये अत्यंत शुभफलदायक रहेगा तथा आप सुख पूर्वक इसे व्यतीत करेंगी।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही शत्रुपक्ष के बलवान होने के कारण आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। इस मास में आप अपने उच्चाधिकारियों का पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा उनसे आप किसी प्रकार दंडित भी हो सकती है।आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकती है जिसके बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय संबध तनाव पूर्ण रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। साथ ही समाज में भी आपके सम्मान में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पित से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार का भय भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आपको किसी प्रकार की क्षति या नुकसान हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति या पुरूष वर्ग से आप कष्ट की अनुभूति करेंगी तथा शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भी नित्य भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में होगा।साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा धनाभाव की समस्या का भी सामना करना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लालच की प्रवृति में वृद्धि होगी। फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से तनाव पूर्ण संबध होने के

कारण उनसे भी आपको कोई सहयोग प्राप्त नहीं होगा तथा वे मित्र होकर शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका सामाजिक जनों से वाद विवाद भी होगा। अतः धैर्यपूर्वक समस्याओं का सामना करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप पति तथा बन्धुओं से सहयोग प्राप्त कर सकेंगी तथा अपनी बुद्धि के द्वारा महत्वपूर्ण कार्यो को भी सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचि का प्रदर्शन करेंगी।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप मध्यम रूप से व्यतीत करेंगी तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। इस महीने में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट की अनुभूति करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा ही रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक एवं मानसिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी कर सकती है। इस समय आपके सांसारिक कार्यो में व्यवधान उत्पन्न होंगे फलतः इनमें आपको अल्प सफलता ही प्राप्त होगी। इसके कारण आप मानसिक रूप से तनाव तथा अशान्ति का अनुभव करेंगी। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की अभिवृद्धि होगी जिसके कारण महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त धन भी आप प्रचुर मात्रा में अर्जित करेंगी तथा धर्मानुपालन में प्रवृत रह कर समाज में यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में न्यूनाधिक सफल रहेंगी।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः आपका धनार्जन पूर्ण मात्रा में होगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामाजिक लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित होता रहेगा। आपकी बुद्धि में इस मास निर्मलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही समय आप यात्रा से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान प्राप्त

होगा तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप वांछित सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनसे आपके मधुर संबध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र सम्माननीया रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। इस प्रकार समस्त सुखों से युक्त होकर आप समाज से यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप प्रोन्नति भी प्राप्त कर सकती है। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी तथा उनके कल्याण संबधी कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही अन्य साधनों द्वारा भी आप धनार्जन करेंगी तथा अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को इस समय पूर्ण करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में यात्रा के द्वारा भी लाभ प्राप्त करेंगी। इस समय आपको नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णाभूषणों की उपलब्धि भी हो सकती है।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नती के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सोफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबो की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नही कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग

मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नही रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए उत्तम रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली खासियत जो आप में है, आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आनंद भी लेंगे। अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी कुण्डली में दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। आपके आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपको कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए और उद्देश्य पूर्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

9 अगस्त के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। परिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। 9 अगस्त से घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा।

15 अक्टूबर के बाद अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपके पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपका आत्म सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। 18 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपकी दृढ़ निश्चयता और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

18 फरवरी से गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 18 फरवरी के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

राहु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 15 अक्टूबर के बाद व्यावसायिक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष कोई विशेष यात्रा के योग नहीं बन रहे। 18 फरवरी के बाद आपकी छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

राहु के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु नमव भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुएकादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं एकादश में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं वह काबिले तारीफ है। 5 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। 23 अक्तूबर से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगीपरन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करनी होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तमरहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 5 मार्च के बाद गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर भी बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं।

12 अगस्त से आपको भाईयों और मित्रोंकर अच्छा सहयोग मिलने के कारण फिर से धन संचय करने में लग जाएंगे। आपके संचित धन में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में आपको सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 23 अक्तूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़ीयानहींरहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसी

विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

12 अगस्त से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव होने से आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का योग बन रहा है। आपके भाई व मित्रों के लिए समय बहुत शुभ है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। आपको प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ के दो माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे, परन्तु 5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है।31 मई से पंचम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी।

उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 23अक्तूबरसे आपके बच्चों का समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 5 मार्च से द्वादश स्थान परगुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपशारीरिक आरोग्यता को प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकता है। 5 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहें तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। 5 मार्च के बाद आपकीविदेश यात्रा होंगी।

12 अगस्त के बाद आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीयस्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में

आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। 12 अगस्त से पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप मन्त्र जाप करेंगे। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं नवम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 18 मार्च के बाद वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा और आपको बन्धु-बान्धवों का पूरा सहयोग मिलेगा।

आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति के योग हैं। आप अपने व्यापार को ऊंचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चतुर और सूझ-बूझ भरे व्यक्ति हैं तो इसके चलते आप इन चुनौतियों को ही लाभकारी अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं।

लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। यदि ऋण के लिए आवेदन दिया है तो वह भी मिल जाएगा। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक संपति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगा। जिससे आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके

मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। अतः आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं वे गलत संगत में पड़ सकते हैं जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो अपने लक्ष्य से उनका मन भटक सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना प्रारम्भ हो जाएगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करने समय सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

वर्ष के मध्य में एकादश स्थान का मंगल प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए काफी शुभ है। उनके करियर में सफलता के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, भिखारियों को दान देना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध हितकारी रहने वाला है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। अष्टम स्थान का राहु आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगा। अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के मार्ग खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 28 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 12 अगस्त के बाद सप्तम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक अनुकूलता पर धन का व्यय होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। पारिवारिक सुख सुविधा के लिए अधिक धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक दृष्टिकोण से उत्तम रहेगा। 28 मार्च के बाद आपके परिवार में

सदस्य वद्धि के संकेत हैं। यह वृद्धि किसी के विवाह या शिशु जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी ।जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध शुभ नहीं है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम एवं सुबह-सुबह टहलना आदि
वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप सेहत पर ध्यान नहीं देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर अनावश्यक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर योगा आदि करना आपके लिए लाभप्रद है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। ज्योतिष व गुप्त विद्या के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति व्यवसाय के रूप में करियर खोज रहे हैं। उनके लिए शनि ग्रह का गोचर एक सुनहरा अवसर लेकर आ रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है, जिसमें आपको अच्छी उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित भी यात्रएं होती रहेंगी। 13 जुलाई के बाद द्वादश स्थान पर

शनि ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान-पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने पूजा घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनि व बुधवार के दिन काली व नीली वस्तु का दान करें एवं राहु के निम्न मन्त्र का पाठ करें।

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि छठे भाव में और सिंह राशि का राहु सप्तम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होग, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

6 अप्रैल के बाद आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझ कर ही धन का व्यवहार करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 6 अप्रैल से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य

भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य उनका विवाह हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो उसकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है। आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम या सुबह-सुबह टहलने जाना। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती है या प्रारम्भ हो सकती है। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यवसाय में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं

के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 6 अप्रैल से समय धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दुसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। जितना आप अच्छा कार्य करेंगे उतना ही आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन व पूजन करें। इसके प्रभाव से ग्रहजनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आपका अच्छा खर्च हो जाएगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलेगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

15 अप्रैल के बाद घरेलू वातावरण बहुत ही अच्छा रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अप्रैल के बाद दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। वे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे समाज में आपका मान संमान बढ़ेगा। यदि आप दूसरे संतान की इच्छा रखने हैं तो गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह टहलने जाना इत्यादि।

27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। रोजगार के नये नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। 27 अगस्त के बाद आलस्य की भावना आपकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है। अतः अगस्त के बाद आलस्यता व अत्यधिक आत्मविश्वास का त्याग करें और यथार्थवादी बनें ।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 15 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु, राहु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपकी अवश्य विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- श्वेतार्क गणपति अपने घर में स्थापित करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में स्थानान्तरण की भी संभावना बन रही है। 26 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

सितम्बर के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों को अचानक हानि होगी। परिवार में रोग-बीमारी अधिक होने के कारण आपका व्यय बढ़ेगा।

धन संपत्ति

वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान का गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता जी से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं।

16 सितम्बर के बाद लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आय के मार्ग प्रभावित होंगे। किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपका घरेलू माहौल अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 26 अप्रैल से संतान व भाईयों के लिए समय बहुत

ही शुभ हो रहा है।

सप्तम स्थान का शनि आपकी पत्नी के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं संमान प्रदान करेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप श्रेष्ठ कार्य करने में रुचिशील रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा।

26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का श्रेष्ठ समय रहेगा। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो इस समय के अंतराल में उसका विवाह हो सकता है। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। मौसमजनित बीमारियां भी आपको तंग कर सकती हैं। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि छठे स्थान का राहु रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

अप्रैल के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे। फिर भी आलस्य की भावना बनी रहेगी। किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। 19 अक्टूबर के बाद अचानक आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त हो सकते हैं। परन्तु शीघ्र ही यह स्थिति भी ठीक हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए साल का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 16 सितम्बर के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्रा भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 26 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रूचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। परन्तु इन सभी कार्यों में आपकी पत्नी का सहयोग कम ही रहेगा।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं और शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे की लोटे में चावल, रोली डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। आपके शत्रु आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते हैं तथा आप इस परेशानी से निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। 11 मई के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में सावधानी बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी फिर भी आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे क्योंकि राहु के साथ गुरु की युति अच्छी नहीं होती। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके अच्छा संदेश नहीं दे रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप देन लेन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्म पत्नी एवं पुत्र का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

7 अक्टूबर से व्यापारिक व्यक्तियों को कुछ लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जो आपके लिए अच्छा नहीं है। शेयर बाजार से दूरी बनाए रखना आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रही है। सहनशक्ति बनाए रखें। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। मई के बाद आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए समय अच्छा नहीं है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए शुभ नहीं है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो आपके बच्चों के लिए अनुकूल नहीं है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों का संतान हानि (गर्भपात) हो सकता है। अतः उस समय आपको संतान पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय काफी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, जिससे आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपको मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। लग्न स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में अचानक कोई बड़ी बीमारी होने का प्रबल संकेत दिख रहा है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। फिर भी अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। पंचम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपकी उन्नति को रोक रही है। मई के बाद नौकरी के लिए प्रयासरत अभ्यार्थियों को प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है क्योंकि आने वाले समय में यही परिश्रम आपकी सफलता का द्वार खोलेगा।

7 अक्टूबर के बाद समय में कुछ सुधार हो रहा है तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को सफलता मिल सकती है। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए भी समय शुभ है। नौकरी वांछित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्रा का भी आनन्द ले सकते हैं। व्यवसाय से संबंधित भी आपकी यात्राएं होती रहेंगी।

11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। सांस्कृतिक उत्सवों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। आपके धर्म के अनुसार जितने भी पर्व होते हैं उन सभी पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे। मई के बाद आप दान पुण्य में ज्यादा रुचि लेंगे- जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अक्टूबर के बाद आपके दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष यज्ञ अनुष्ठान करेंगे, जिससे आपको अत्यधिक मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगा।

- दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें तथा सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें ।
- अपने बजन के बराबर अन्न का दान (तुला दान) करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक स्थिति के लिए सामान्य रहेगा। आपके अंदर काम करने का जुनून तो होगा परन्तु कोई शुभ अवसर नहीं मिलने के कारण आपका मनोबल कमजोर हो सकता है। 5 अप्रैल के बाद आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है, आपको धोखा मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 2 जून के बाद सफलता की कुछ उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको कुछ लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे, जिसमें आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभाववित हो रहा है। कोर्ट कचहरी व किसी कानूनी प्रक्रिया में फंस सकते हैं। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में रुचि से अधिक दबाव की स्थिति बन सकती है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आर्थिक स्थिति में सुदृढ .ता बनी रहेगी। 3 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

अप्रैल के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। कुछ अनाावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। धन विनियोजन को प्रबल करने के लिये आपको पराक्रम से काम लेना होगा। इस अवधि में आपका सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा। 4 नवम्बर से वित्तीय विषयों के लिए समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ तो उत्तम रहेगा, परन्तु 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। 7 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह की उपस्थिति अचानक घरेलू महौल को खराब कर सकती है। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। सप्तम स्थान में शनि की स्थिति आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छी नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें।

सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह साल अच्छा नहीं है। अतः आपको सभी के साथ अच्छा संबंध बना कर रखना चाहिए। छोटी-मोटी बातों को अनदेखा कर देना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। 4 नवम्बर के बाद माता पिता के लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उनके स्वास्थ्य पर आपको ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

संतान

पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपको अपनी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। भाग्य थोड़ा कम ही साथ देगा।

2 जून के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बढ़िया रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 2 जून से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लेकिन वर्षान्त में समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

4 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियो को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंताजनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय

समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस साल आपको परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेंगे। आप अपने लक्ष्य के पथ पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को ले आगे बढ़ते रहेंगे। 2 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रूझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ नहीं है। परन्तु विदेश में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। 4 नवम्बर से समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घ ार से दूर भी हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। लम्बी यात्रा का योग इस वर्ष कम ही बन रहा है। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

2 जून से सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्रा होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 4 नवम्बर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्मो को ही पूजा समझेंगे। 2 जून से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मुख्यतः सारे ग्रहो का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ शनि एवं गुरु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। वर्ष के प्रारम्भ में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास लगन से करें क्योंकि 6 अप्रैल के बाद आपको सफलता मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। व्यापार में हानि या साझेदारी में धोखा मिल सकता है। उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में किंचित लाभ होगा तथा उन्नति के मार्ग भी खुलेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु एवं शनि के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं क्योंकि 6 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए और ज्यादा खराब रहने वाला है। चोरी, दुर्घटना व सट्टा इत्यादि के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। रोग-व्याधि, कोर्ट कचहरी इत्यादि में भी आपका धन व्यय होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारी में शादी इत्यादि मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 3 दिसम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिंताएं बनी

रहेंगी। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। किसी के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है इसलिए जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 3 दिसम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। आपको बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि गर्भवती स्त्रियों के लिए खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप ज्यातर बीमार ही रहेंगे कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

साल का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तुला दान या महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं है। वर्षान्त में बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। सामुद्रिक या दर्शनीय स्थलों की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

नौकरी व व्यवसाय से संबंधित देश विदेश की यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा व वाहन चलाते समय हमेशा सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बन रहा है क्योंकि इस वर्ष मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। आपके आस्था एवं विश्वास में कमी आ सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथसालय या गरीब बच्चे के पढाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- महामृत्यंजय का पाठ करना या तुला दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सामान्य रहेगा। कार्य-स्थल में अपने काम को लेकर असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि आपको परेशान कर सकते हैं। वैसे मानसिक और शारीरिक रूप से आप काफी ऊर्जावान रहेंगे। नौकरी या व्यवसाय में आप काफी व्यस्त रहेंगे व आपका यह कड़ा परिश्रम ही आपकी सफलता में सहायक होगा। जहाँ तक हो सके अपने कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने की कोशिश करें। क्योंकि 6 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे।

25 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। सफलता के उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व कानूनी प्रक्रिया से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। ध्यान रखें वैसे भी सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप मनचाहा धन कमाने में सफल रहेंगे। जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा भी वापस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। शेयर बाजार में सोच समझकर ही निवेश करें। लॉटरी व सट्टेबाजी में धन न लगाएं।

25 सितम्बर के बाद आपकी आय में वृद्धि होगी। बैंक से आसानी से कर्ज प्राप्त हो सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ प्राप्त होगा। किसी प्रभावशाली व उच्च पदस्थ व्यक्ति की मदद से आपको आर्थिक लाभ होने की संभावना है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी। व्यावसायिक यात्राएँ धन अधिक खर्च करवाएंगी परंतु आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग बना रहेगा। लेकिन 6 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस अवधी में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप संतान की इच्छा रखते है तो यह समय श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

6 मई से जुलाई पर्यन्त समय प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। परन्तु 6 मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ शारीरिक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं।

शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंताएं भी बढ़ेंगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि जुलाई के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। अतः वाहनादि चलाते समय ज्यादा सावधान रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त

होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। परन्तु 6 मई से जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। यह समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष शुभ नहीं है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी। 6 मई के बाद आप विदेश यात्रा करेंगे ।

इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना या चोट-चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है। 25 सितम्बर के बाद शनि भी शुभ हो जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएंगे तथा सभी सत्कर्मों में पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगी। 6 मई के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा। उस अवधि में आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- मंगलवार का व्रत करें तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं नवम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। जोखिम लेने से न घबराएं और अपने कम्फर्ट जोन से बाहन निकलें। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध नौकरी वाले लोगों के लिए अनुकूल रहेगा। दशमस्थ गुरु के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे। मनचाही नौकरी मिलगी और पदोन्नति भी होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन इस मुसीबत से निकलने में आप सफल रहेंगे। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। भूमि, भवन व वाहन का सुख प्राप्त होगा। संचित धन की वृद्धि होगी। आभूषण एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली सारी बाधाएं दूर होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु आपके दूसरे भाव में प्रवेश करने वाले हैं। उस समय आपको आर्थिक मामलों को लेकर बहुत ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। दूसरों की बातों में न आएं और दूसरों के ऊपर पैसे खर्च करने से भी परहेज करें। आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं है। गलत कार्य में धन निवेश न करें नहीं तो धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम

भूमिका होगी। आपके भाईयों की उन्नति होगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

22 जून को द्वितीय स्थान का राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यहीं रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होगा। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

22 जून के बाद द्वितीयस्थ राहु के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। 10 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

इस अवधि में आपकी छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरीपेसा व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी। नवमस्थ शनि के कारण लम्बी यात्राओं का आनन्द लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा में व्यवधान आ सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस अवधि में आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों, चींटियों व मछलियों के लिए दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। पूरे वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ़ जाएगी। व्यापार में आपके भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

30 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले लोगों का पदोन्नति के साथ अनुकूल स्थान पर तबादला होगा। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। सितम्बर के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय के अंतराल में व्यापार के साथ साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वितीय स्थान का राहु अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। निवेश या आर्थिक मामलों में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर पूरे वर्ष प्रतिकूल रहेगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। 30 जुलाई

तक विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। जुलाई के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। माता पिता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा व सबका सहयोग मिलेगा। सितम्बर के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी दूसरी संतान का चौमुखी विकास होगा। विवाह भी हो सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। 19 सितम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है।

वर्षान्त में अत्यधिक आलस्य के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे तथा मानसिक तनाव भी बना रहेगा। नियमित रूप से व्यायाम करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीकी शिक्षा व विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में सफलता के योग हैं। करियर में उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यापार में महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिकारी वर्ग से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई टैक्नोलॉजी व मशीनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। सितम्बर के बाद आपकी परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में नौकरी में स्थानान्तरण के योग हैं यह स्थानान्तरण आपके हित में होगा। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

30 जुलाई के बाद व्यवसाय या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी। साथ ही परिवार सहित प्रसिद्ध क्षेत्रों की यात्राएं होंगी एवं सगे संबंधियों के घर में विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में जाने का अवसर मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

सितम्बर के बाद आपके धार्मिक कार्य किंचित प्रभावित होंगे। लग्न स्थान का राहु आपके दैनिक पूजा पाठ में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। मानसिक अस्थिरता के कारण भी आप कोई विशेष पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे। गणेश जी का मन्त्र पाठ आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहने वाला है। सहयोगी तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति अथवा कार्यक्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी। व्यापार में नीति निपुणता से काम लेना आपके लिए लाभकारी रहेगा। 16 फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी होगी।

गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यापार में व्यवधान व परिवर्तन को दिखा रहा है। व्यवसाय में आपका निवेश अधिक होगा परंतु लाभ कम मिलेगा। हालांकि चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि पिता या किसी बड़े सम्मानित व्यक्ति की सहायता से आपको लाभ मिलेगा जो आने वाले समय के लिए बहुत ही अनुकूल है। साझेदारी में व्यापार शुरु करना आपके लिए शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण शारीरिक व्याधि दूर करने में अधिक व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है तथा अपने खर्चे पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। केस, मुकद्दमा व कानूनी प्रक्रिया में भी आपके कुछ अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष परिवार में एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग

हो सकती है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं तथा अपने बौद्धिक शक्ति के द्वारा पारिवारिक विषमता को अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। इस वर्ष आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य रहेगा।

संतान

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए कष्टप्रद रहने वाला है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा आपके प्रथम बच्चे की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग तथा इंफेक्शन के कारण होगा।

आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इस सब का नकारात्मक प्रभाव आपकी सेहत पर पड़ेगा, जिससे आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण पेट, मोटापा व लीवर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवारी को गुरु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पढ़ाई लिखाई में कमी या प्रतियोगिता में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। प्रतियोगिता में प्रतिद्वंदियों द्वारा रुकावट डाली जा सकती है।

जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह साल श्रेष्ठ रहने वाला है। विदेशी शिक्षा प्राप्त करने वालों को वांछित सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आपकी सारी यात्राओं में व्यवधान आने की संभावना है। पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं कर पाएंगे। अचानक व्यवसाय से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। इस यात्रा के अंतराल में आपको शरीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर तबादला होगा। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपके विदेश यात्रा होगी तथा इस यात्रा से आपको विशेष लाभ होने वाला है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा तथा मानसिक अस्थिरता के कारण आप पूजा-पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। तन्त्र मन्त्र व साधन के प्रति आपकी रुचि ज्यादा बढ़ेगी। धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा भी इस वर्ष प्रभावित रहने वाली है।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू किसी धार्मिक स्थान पर दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष कार्य व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। आप नये उद्यम शुरु करेंगे। आपको मित्रों और परिजनों से खूब मदद मिलेगी। दशमस्थ शनि के कारण आपको व्यापार में अच्छा खासा लाभ होने की संभावना बन रही है। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। काम धंधे में बढ़ोत्तरी होने से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कोई अच्छी योजना बना कर व्यापार में उन्नति करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पूर्वार्द्ध की अपेक्षा अनुकूल रहने वाला है। नौकरी करने वालों के लिए उच्च पद प्राप्ति का योग बना रहा है तथा आर्थिक सहायता इत्यादि भी मिलेगी। साझेदारी में किसी के साथ व्यवसाय करने की प्रबल संभावना बन रही है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में अचानक कुछ अनावश्यक परेशानियां आ सकती हैं, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उस का भी निदान निकाल लेंगे तथा अपने कार्यों में अग्रसर बने रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्चे बढेंगे। अतः खर्चे पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी जिंदगी बहुत अच्छी गुजरने वाली है। आपकी आमदनी में बढ़ोत्तरी के प्रबल योग बने हुए हैं साथ ही आप धन की बचत भी कर पाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। आपको शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे। व्यवसाय के माध्यम से आपका धनार्जन होगा। आपके व्यावसायिक जीवन में स्थिरता व सुदृढ़ता आएगी। आपका यह सुदृढ़ीकरण आपको अपने व्यापार में नये निवेश के लिए प्रोत्साहित करेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। परिवार में किसी सदस्य को लेकर मानसिक चिंता बढ़ सकती है। पिता के लिए उत्तम एवं व्यावसायिक लाभ भी होगा, परंतु माता के स्वास्थ्य को लेकर आपकी चिंता बढ़ सकती है।

वर्ष के दूसरे भाग में किसी निकट संबंधी के बारे में कुछ अच्छी खबर मिल सकती है। परिवार के विरोधी दूर होंगे एवं परिवार के लोगों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा हो

जायेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में विवाह होने की संभावनाएं प्रबल होंगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी भी आ सकती है, परन्तु 15 जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है, उस समय आपकी सन्तान हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में उम्दा प्रदर्शन करेगी। धन प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति का भी पूर्ण योग बना हुआ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में भी वृद्धि की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त वे कठिन परिश्रम करेंगे तथा व्यापार में सफलता प्राप्त करके धनार्जन करेंगे।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य कमजोर कर सकता है। शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम होती प्रतीत होगी। आपको पेट की तकलीफ परेशान कर सकती है। खान-पान पर संयम रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा एवं विवाहित व्यक्तियों को अपने जीवनसाथी से काफी सेवा भाव मिलने की संभावना रहेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, व्यक्तिगत प्रभाव, आकर्षण तथा कार्य क्षमताओं में विकास होगा तथा आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। लग्नस्थ गुरु के कारण आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा फिर भी आपको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। वर्ष का उत्तरार्द्ध करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है।

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आप आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ जाएगी। किसी विशेष पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए समय अनुकूल चल रहा है। घर से दूर जाकर पढ़ाई करने का योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। अपने कार्यों के विस्तार व उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए परिवर्तन का प्रबल योग बन रहा है, यह स्थानांतरण आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध होगा। आप अपने व्यापार,

साझेदार एवं पत्नी से दूर ही रहेंगे।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है, क्योकि द्व ादश स्थान का राहु दुर्घटना व चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बनी रहेगी। पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में अधिक व्यतीत होगा, जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन इत्यादि। सभी धार्मिक कार्यों में आपको परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा। दुर्गाबीसा यंत्र धारण करने से द्वादशस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य व कार्य संबंधी परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं बाल, दाढ़ी न कटवाएं।
- प्रतिदिन बेसन के लड्डू दान करें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में लड्डू गोपाल की मूर्ति स्थापित करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(20/08/2024 - 20/08/2044)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 20/08/2024 को आरम्भ और 20/08/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह मीन राशि में उच्च का और कन्या में निम्न का होता है। यह स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि दशम भाव पर है और इस भाव पर इसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। चतुर्थ भाव माता, भवन, घरेलू वातावरण, निजी मामलों, गुप्त जीवन, वाहन, उद्यान, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, जल, दूध, नदी तथा झील का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है और भाव को प्रबलित कर रहा है जो सुख स्थान का भाव है। इसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी तथा आप सामान्य रूप से जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र चतुर्थ भाव में भाव को प्रबलित कर रहा है। यह अचल संपत्ति और वाहन का भाव भी है। इस दशा काल में आप एक नया घर या नई गाड़ी ले सकते हैं। आपकी जीवन चर्या में उन्नति तथा आनन्द में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

शुक्र, एक योग कारक ग्रह, चतुर्थ भाव में स्थित है और आपकी जन्म कुण्डली के दशम भाव को देख रहा है, जो जीवन चर्या और व्यसाय का द्योतक है। इस दशा काल में आप जमीन-जायदाद के लेन-देन में व्यस्त रहेंगे और इसी से संबंधित व्यवसाय करेंगे। आपकी माता भी आपके व्यावसायिक जीवन को विकसित करने में सहायक होंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप भावुक होने के साथ-साथ धनवान, आदरणीय, और खुशहाल होंगे। आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा तथा आप परम्परा और मूल्यों का आदर करेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(20/08/2024 - 20/12/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ होकर 20/08/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ होकर 20/12/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। शुक्र विवाह, प्रेम और रति का कारक है। शुक्र शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। मित्रों से संबंध बेहतर होंगे। माता से मधुर संबंध रहेंगे। वाहन सुख रहेगा, जायदाद भी प्राप्त कर सकते हैं। धर्म में रुचि होगी। स्वयं को सफल महसूस करेंगे और संतुष्ट रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(20/12/2027 - 20/12/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ होकर 20/08/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 20/12/2027 को प्रारंभ होकर 20/12/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर कहीं भटक सकते हैं। उदर या हृदय रोग हो सकता है। सावधानी और बचाव आवश्यक हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(20/12/2028 - 20/08/2030)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ हुई थी और 20/08/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 20/12/2028 से प्रारंभ होकर 20/08/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

दशम भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। समाज और कार्यक्षेत्र में उत्थान होगा। कार्यक्षमता उत्तम होने के कारण आप कार्य में परिवर्तन कर प्रगति करेंगे। समाज में लोकप्रिय बनेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्र को चंद्र मंत्र पढ़ते हुए दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(20/08/2030 - 21/10/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ होकर 20/08/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 20/08/2030 को प्रारंभ होकर 21/10/2031 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। मंगल ऊर्जा का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप क्रोधी और विचलित हो सकते हैं। किसी को धोखा न दें। कंजूसी और मष्तिष्क में दुर्बलता बढ़ सकती है। संतान और जीवनसाथी के लिए भी समय अशुभ हो सकता है। विवेकशक्ति में कमी होगी; जल्दबाजी के कार्यो से बाद में पछताना पड़ेगा।

आपका दिल दिमाग पर हावी रहेगा, भावुकता बढ़ेगी, अच्छी सलाह को अनसुनी कर देंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का मूंगा सोने या तांबे की अंगूठी में मंगलवार के

दिन प्रातःकाल दूध से धोकर, हनुमान या गणेश या शिव जी के पूजन के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(21/10/2031 - 20/10/2034)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ होकर 20/08/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 21/10/2031 को प्रारंभ होकर 20/10/2034 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका निम्न कोटि के लोगों से प्रेम प्रसंग हो सकता है। गरिष्ठ भोजन के शौकीन हो सकते हैं जिससे बीमार हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(20/10/2034 - 20/06/2037)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/08/2024 को आरंभ हुई थी और 20/08/2044 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 20/10/2034 को प्रारंभ होकर 20/06/2037 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 6, 8,10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, धन संचित होगा, परिवार में खुशहाली होगी। प्रत्येक कार्य ईमानदारी और कानून के अनुसार करेंगे। सहकर्मियों से भी व्यवहार उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(20/06/2037 - 20/08/2040)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ हुई थी और वद 20/08/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 20/06/2037 को प्रारंभ होकर 20/08/2040 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्दयी मगर साहसी हो सकते हैं। धनी बनेंगे, सरकार से सम्मान मिलेगा। बहुत सारे लोगों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता मिलेगी, मगर बाधाओं को पार करने के बाद। मन उदास या चिंतित रहेगा। वक्त गुज़रने पर सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी की अंगूठी में पूजा के उपरांत शनिवार के दिन रात्रिभोजन के बाद मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(20/08/2040 - 21/06/2043)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/08/2024 को प्रारंभ हुई थी और वद 20/08/2044 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 20/08/2040 जो आपके लिए 21/06/2043 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

छठे भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है जिससे शत्रुता बढ़ेगी। झगड़ालू होने के बावजूद समाज में सम्मान बढ़ेगा। अधिक उत्तेजना से स्नायुरोग हो सकता है अतः वाणी मृदु बनायें। आलस्य के कारण पढ़ाई में बाधा आ सकती है।

महादशा :- सूर्य
(20/08/2044 - 20/08/2050)

सूर्य की महादशा 20/08/2044 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष के बाद 20/08/2050 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। सूर्य आत्मा, शासन, विद्युत और प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है और पंचम भाव शिक्षा, संतान तथा बुद्धि का सूचक है। अतः इस दशा में आपको संतान से सुख मिलेगा। आपकी मंत्र शास्त्र में रुचि रहेगी और आपको प्रतिष्ठा तथा सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

आज का ग्रह सूर्य आपको उत्तम स्वास्थ्य और शक्ति देगा। आपका स्वास्थ्य आम तौर से उत्तम रहेगा। सूर्य आपको कान्ति तथा जीवन-शक्ति देगा। आपकी इच्छा-शक्ति उत्तम होगी और आपका बल तथा व्यक्तित्व सुन्दर होंगे। मानसिक स्तर पर भी आप मजबूत होंगे और आप में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा रहेगा। आप महत्वाकांक्षी तथा अन्तर्दर्शी होंगे। आपको ताप-संबंधी रोगों, मामूली पित्तदोष तथा पाचन-संबंधी पीड़ाओं के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। शुद्ध भोजन तथा अन्य गतिविधियां आवश्यक हैं।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको सट्टे व निवेश से । धन तथा जीवन की सारी सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है। आप भाग्यशाली और समृद्ध होंगे। आपको अपने व्यवसाय या व्यापार में कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। एकादश भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण आपको पिता से धन प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आपको कोई शक्तिशाली तथा अधिकारिक पद मिल सकता है। आप सलाहकार का कार्य करेंगे। आपकी जीवन वृत्ति से संबद्ध अचानक कुछ घटनाएं घट सकती हैं। कोई भी घटना आपके लिये लाभदायक होगी। आपको अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी, आप उच्च पद प्राप्त करेंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है या वे यात्रा पर जा सकते हैं जो अन्ततः उनके लिये लाभदायक होंगे। व्यापार और व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ होगा। जहाँ तक आपकी नौकरी और कार्य का प्रश्न है, यह दशा आपके लिए अति उत्तम है जिसमें आपको लाभ और शक्ति की प्राप्ति होगी और आप प्रभावशाली होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके बच्चे समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख प्राप्त होगा। आपकी क्रियाएं सुखकर होंगी,। आपके अनेक मित्र होंगे क्योंकि आप स्वाभाविक रूप से उदार हैं, आपका स्वाभाव अच्छा है ओर आप निष्कपट तथा समाज के प्रति निष्ठावान हैं। आपको अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी को उच्च पद, सरकार से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके पिता के भाग्य में वृद्धि होगी। उनकी आध्यात्मिक तथा दान पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे-भाई-बहनों को साहित्य अथवा संवादपटुता के क्षेत्र में लाभ हो सकता है और उन्हें सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी में लाभ मिलेगा और वे पारिवारिक मामलों में शामिल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। शिशु-जन्म के अवसर पर भी सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी अध्यात्म तथा वेदान्त दर्शन में रुचि होगी। आपकी मंत्र शास्त्र तथा विज्ञान के विषयों में भी रुचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(20/08/2044 - 07/12/2044)

आपके लिए सूर्य की महादशा 20/08/2044 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 07/12/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होंगे। शेयर इत्यादि में भी लाभ संभव है। संतान पढ़ाई आदि में नाम कमाएगी। आपको उच्चपद की प्राप्ति हो सकती है या सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। मंत्र, योग, धार्मिक प्रवचनों आदि में रुचि बढ़ेगी।

आपके पिता के लिए समय भाग्यशाली है। उनकी प्रसिद्धि बढ़ेगी। वे अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए समय संतोषजनक है। जीवनसाथी की आय बढ़ेगी। मामा के परिवार में खर्चा बढ़ सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायतें जैसे बुखार, पेट की खराबी आदि से बचाव करना हितकर रहेगा। भाग्यसंवर्धन के लिए रविवार के दिन सूर्योदय के समय गेहूं, लाल-पुष्प और चंदन आदि का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(07/12/2044 - 08/06/2045)

आपकी सूर्य की महादशा 20/08/2044 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 08/06/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अवधि में सलाहकारों को प्रसिद्धि मिलेगी। सेवारत जातकों को प्रशंसा और प्रोन्नति प्राप्त होगी। व्यापारीगणों को धन की प्राप्ति होगी। उनकी संकल्पशक्ति दृढ़ होगी।

क्रय, उपहार या विरासत द्वारा जायदाद प्राप्त हो सकती है। माता के साथ संबंध उत्तम रहेंगे। पिता की आय बढ़ सकती है। विरासत की जायदाद में लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं। मुकदमेबाजी खत्म होगी। भाई-बहनों से संबंधों में अचानक बदलाव आ सकता है। मामापक्ष के लोगों का भाग्य चमकेगा। विद्यार्थीगण विज्ञान और समाज विज्ञान में अच्छे अंक प्राप्त करेंगे।

खेलकूद में आपकी रुचि रहेगी।

स्नायविक उत्तेजना और अत्यधिक श्रम से बचाव करें। घुटनों की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(08/06/2045 - 14/10/2045)

आपकी सूर्य की महादशा 20/08/2044 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 14/10/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में नौकरी में परिवर्तन हो सकता है। आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के लिए आर्थिक रूप से समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी धर्म या अध्यात्म में रुचि हो सकती है। जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। मामापक्ष के लोगों को धनहानि हो सकती है। आपको जायदाद से लाभ बढ़ सकता है।

आपके पिता को किसी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। वे वर्तमान मकान में कुछ परिवर्तन कर सकते हैं। माता जायदाद क्रय कर सकती हैं। छोटे भाई-बहनों को व्यवसाय में सफलता के लिए अधिक परिश्रम करना चाहिए। बड़े भाई-बहनों के परिवार में तनाव हो सकता है।

आपको आर्थिक लाभ होगा। कुछ अतिरिक्त खर्चे हो सकते हैं। व्यापारियों को अतिरिक्त निवेश करना पड़ सकता है। सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है पर सावधानी आवश्यक है। निवेश से पूर्व विस्तृत विश्लेषण करना ठीक रहेगा।

उदर और हृदय से संबंधित रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, गुड़ और लाल दाल का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(14/10/2045 - 08/09/2046)

आपके लिए सूर्य की महादशा 20/08/2044 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 14/10/2045 को प्रारंभ होकर 08/09/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में परिवार और जनता से व्यवहार में सावधानी आवश्यक है क्योंकि आप आत्मकेंद्रित हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। सकारात्मक व्यवहार के कारण प्रसिद्धि मिलेगी।

आपके पिता को धन का लाभ होगा। माता अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगी। भाई-बहनों के लिए भी समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। उन में उत्साह भरपूर रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम बोनस, ग्रेच्युटी आदि से बढ़ेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारी अधिक लाभ कमाएंगे और प्रतिस्पर्धियों को पीछे छोड़ देंगे।

उत्सर्जन तंत्र और अस्थियों की व्याधि से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले

वस्त्र और उड़द की दाल दान में दें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

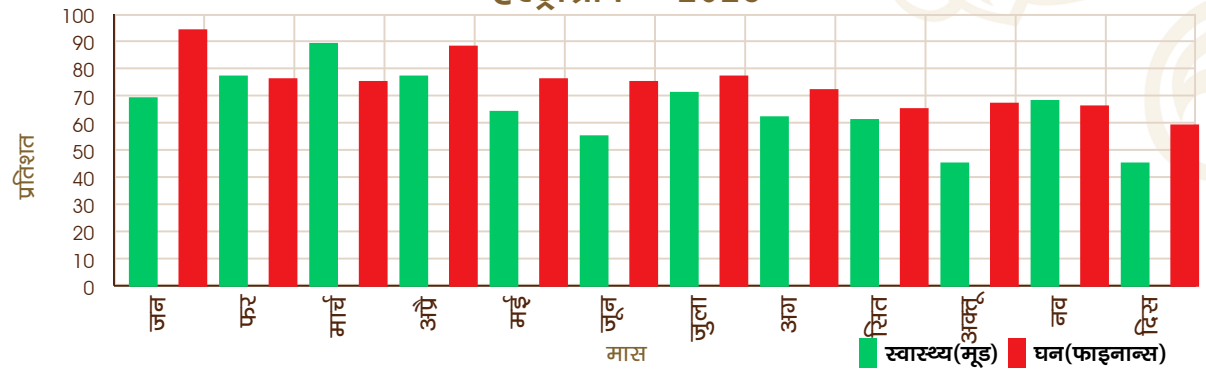

एस्ट्रोग्राफ - 2027

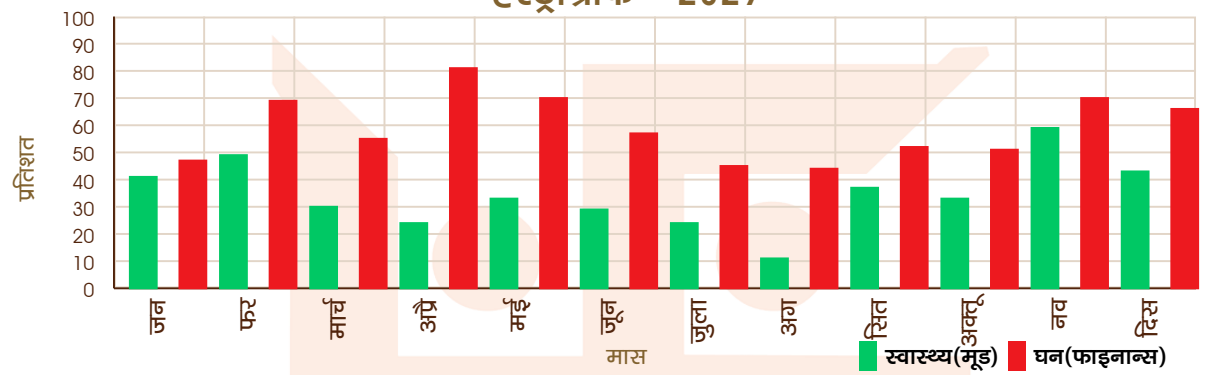

एस्ट्रोग्राफ - 2028

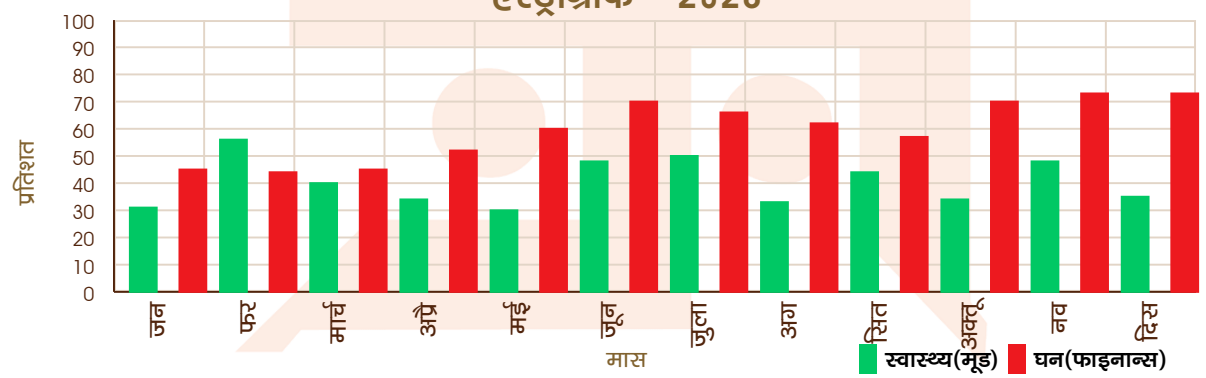

एस्ट्रोग्राफ - 2029

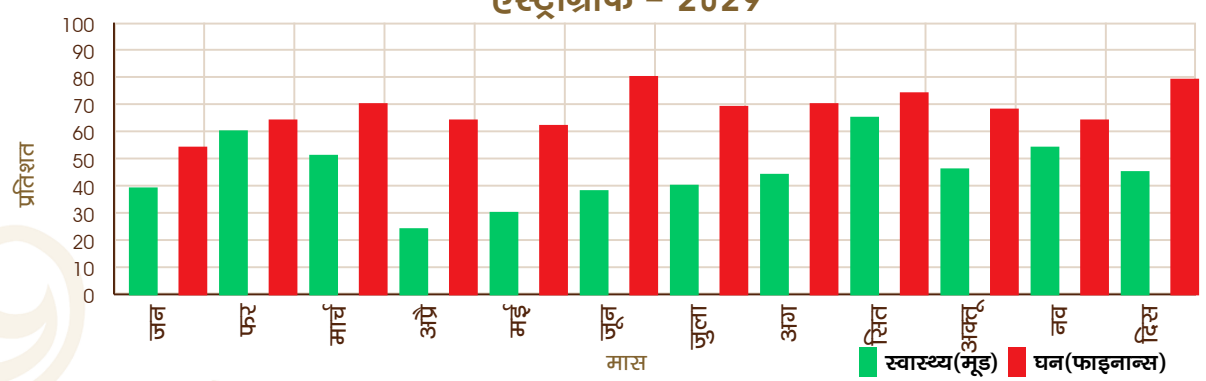

एस्ट्रोग्राफ - 2030

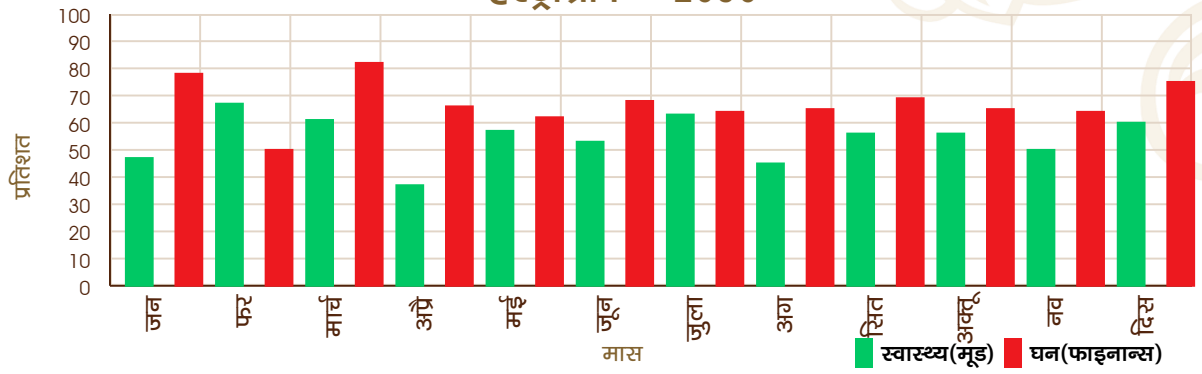

एस्ट्रोग्राफ - 2031

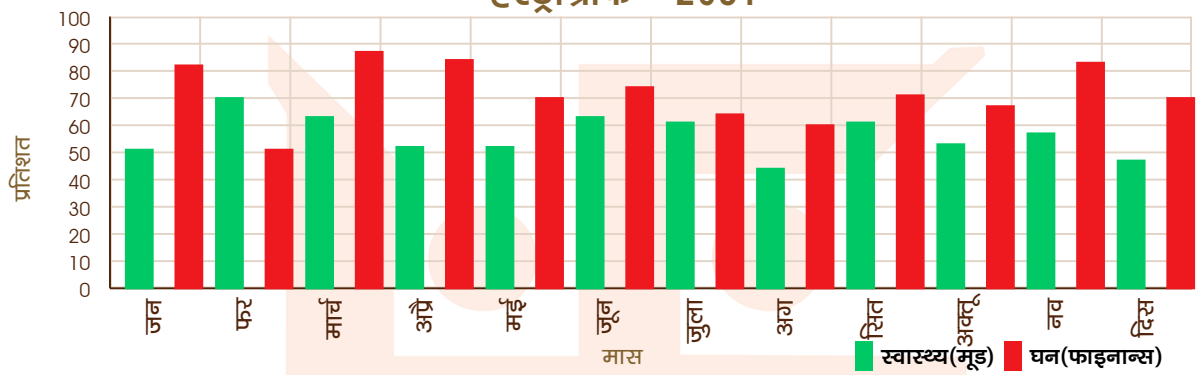

एस्ट्रोग्राफ - 2032

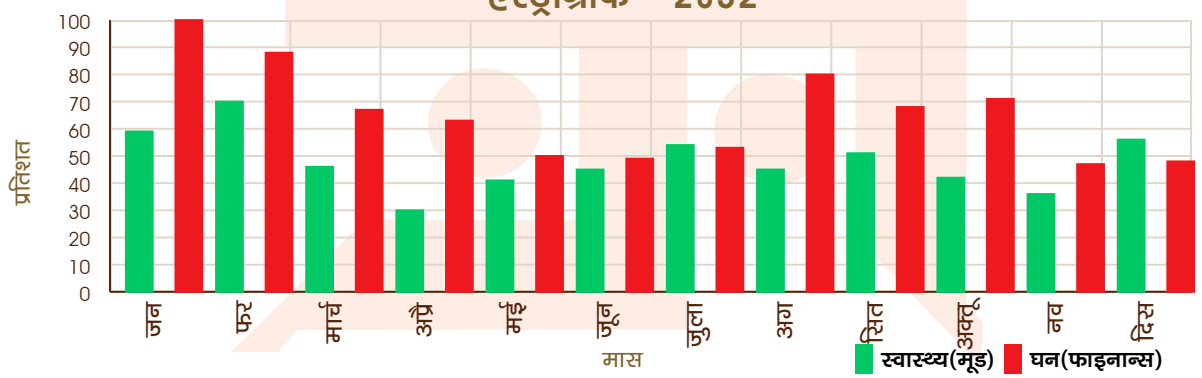

एस्ट्रोग्राफ - 2033

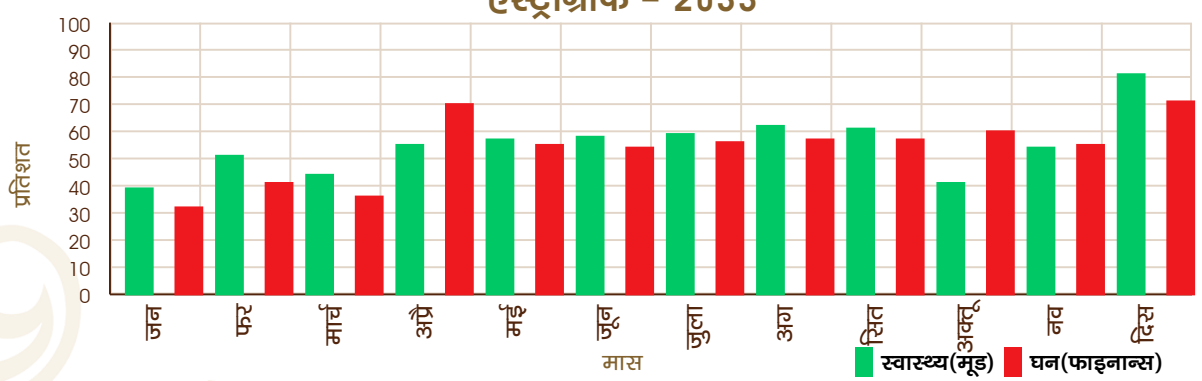

एस्ट्रोग्राफ - 2034

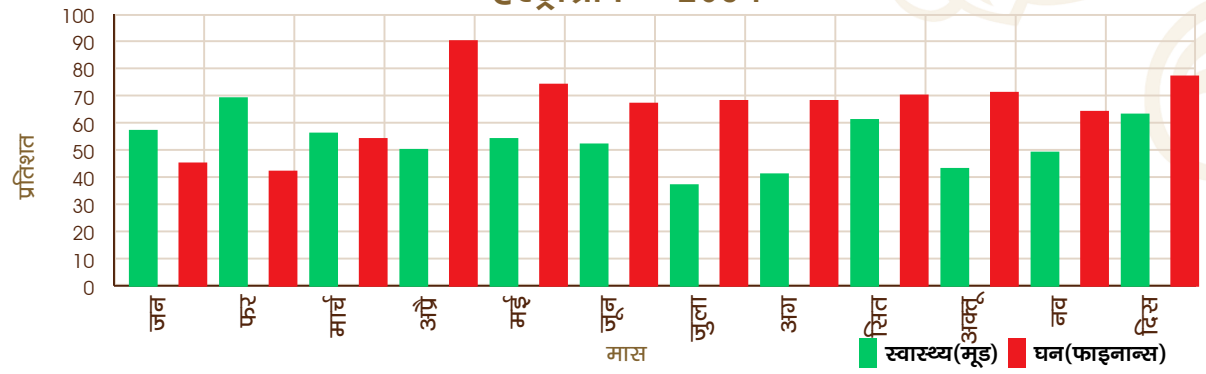

एस्ट्रोग्राफ - 2035

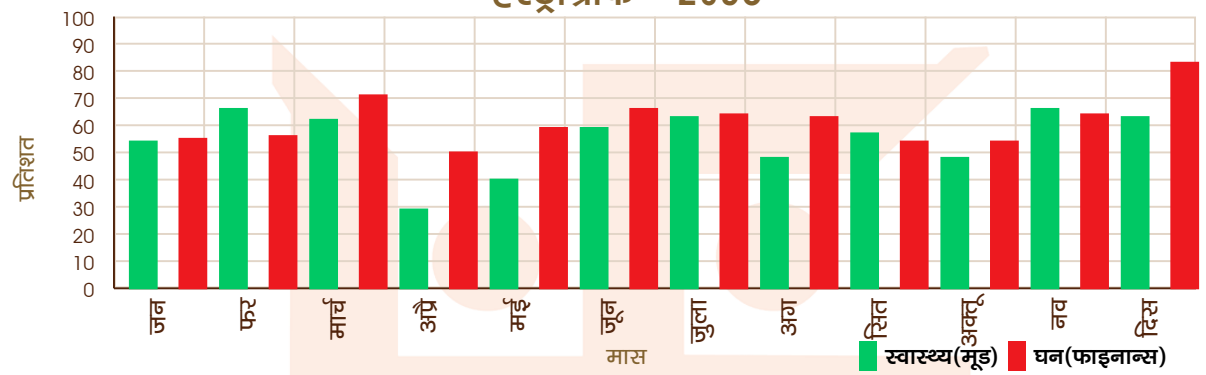

एस्ट्रोग्राफ - 2036

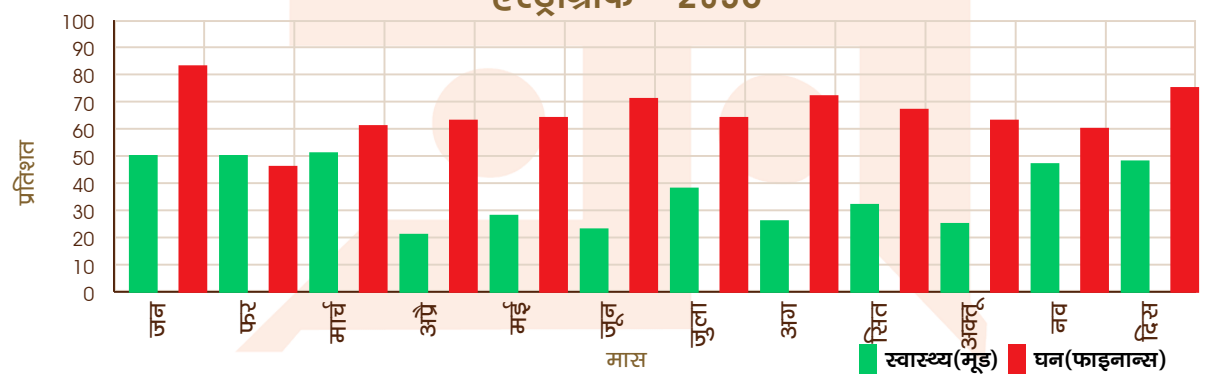

एस्ट्रोग्राफ - 2037

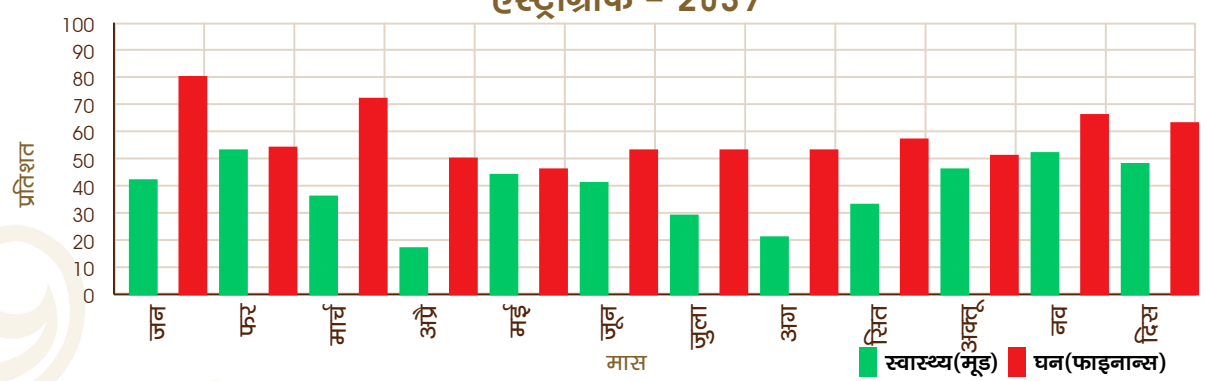

एस्ट्रोग्राफ - 2038

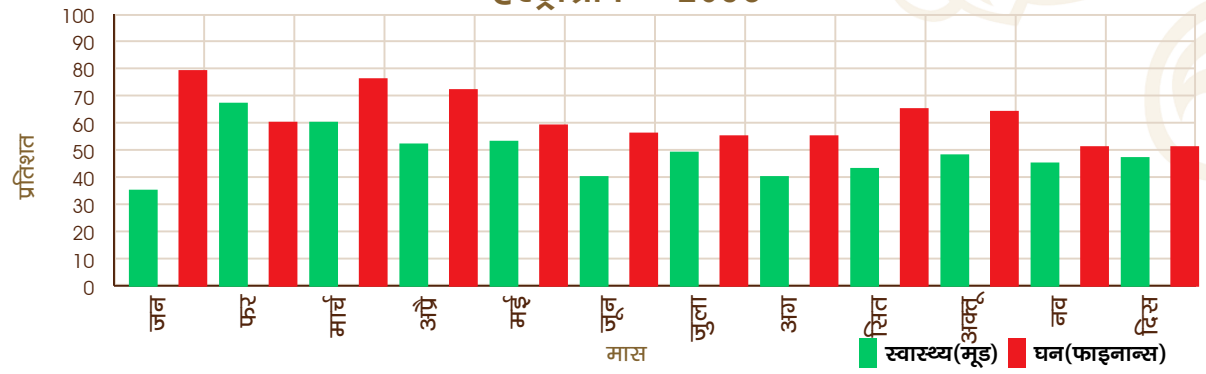

एस्ट्रोग्राफ - 2039

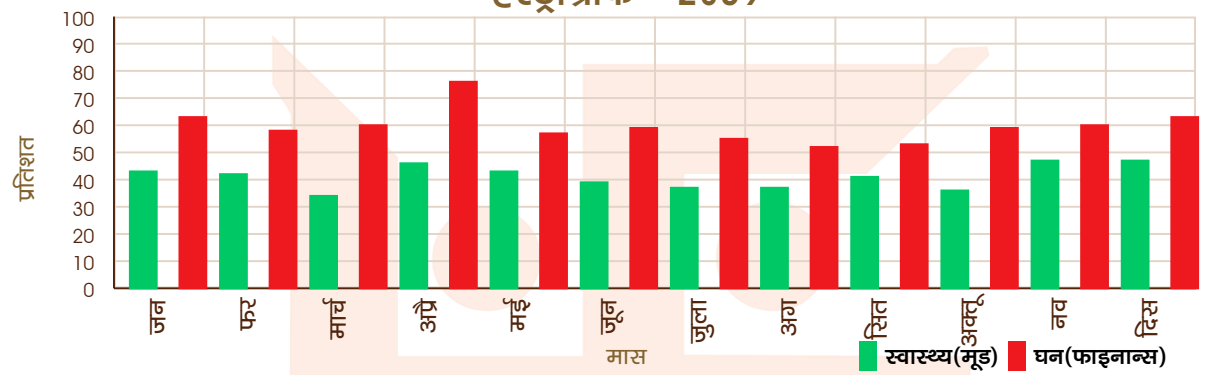

एस्ट्रोग्राफ - 2040

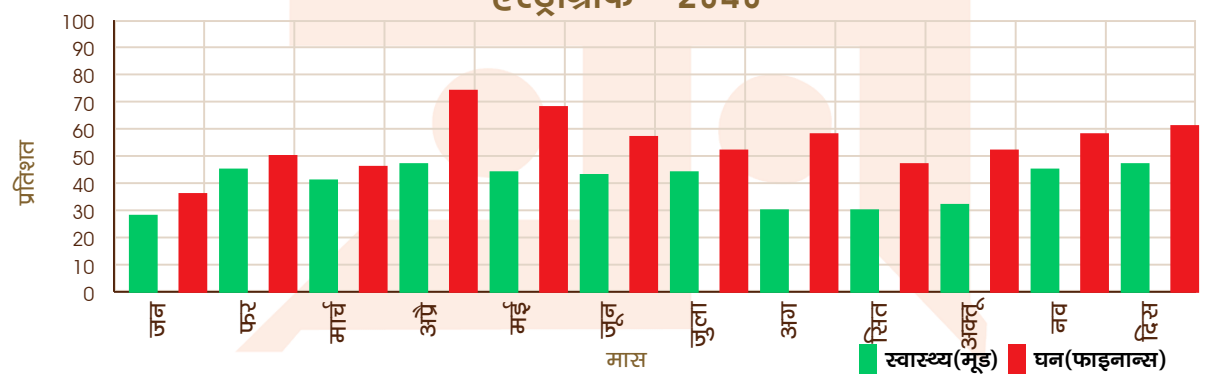

एस्ट्रोग्राफ - 2041

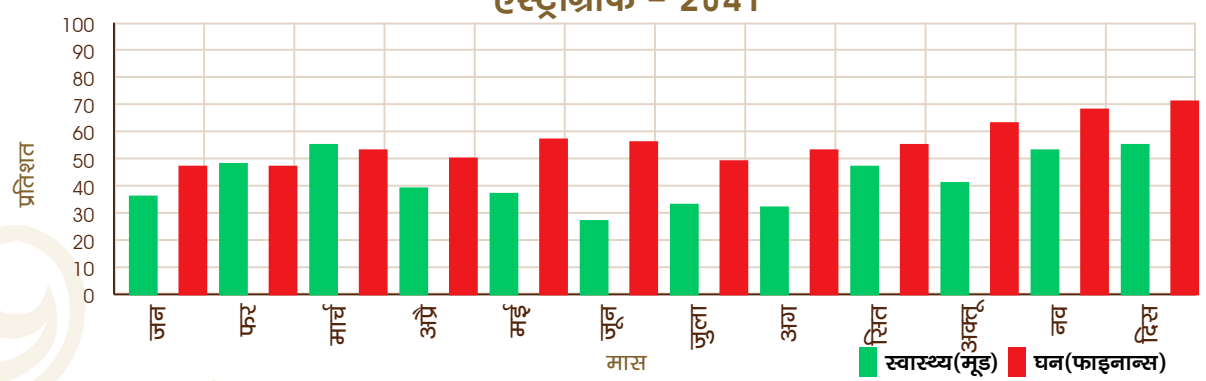

एस्ट्रोग्राफ - 2042

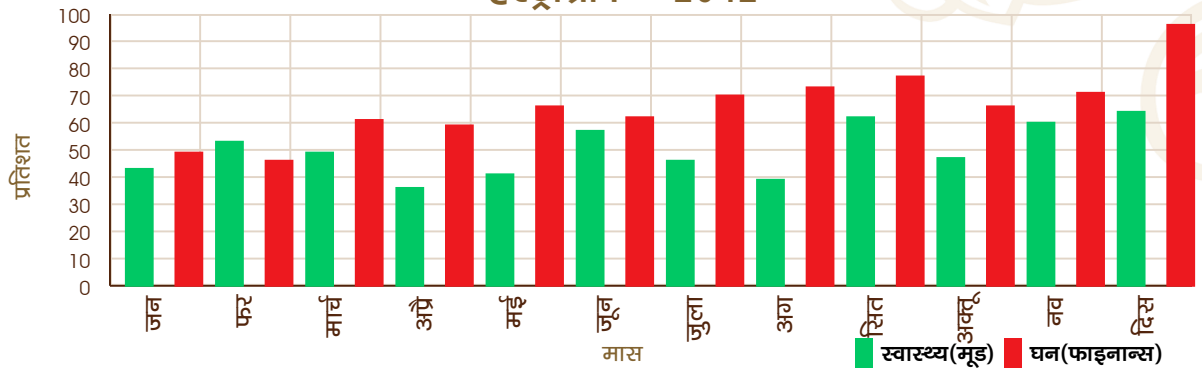

एस्ट्रोग्राफ - 2043

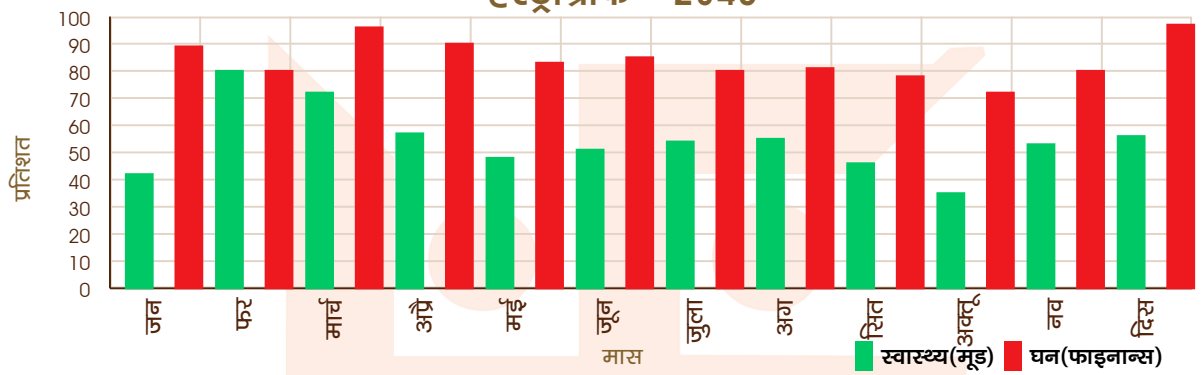

एस्ट्रोग्राफ - 2044

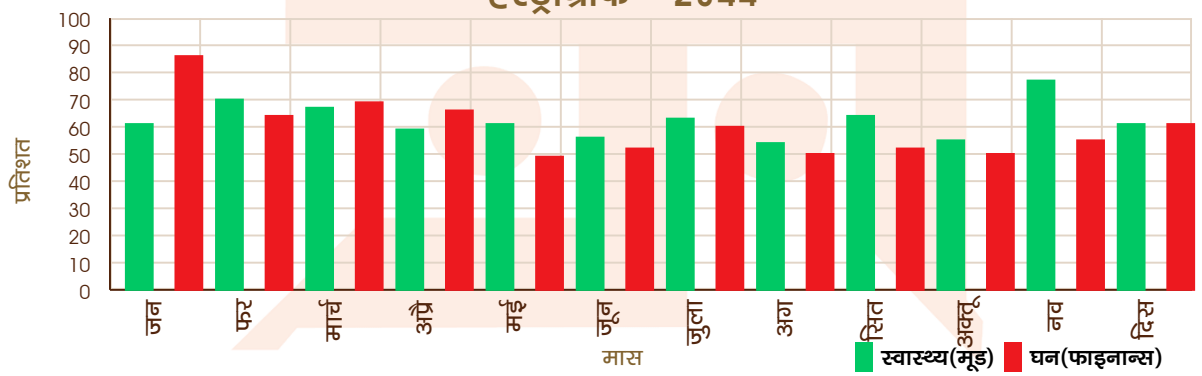

एस्ट्रोग्राफ - 2045

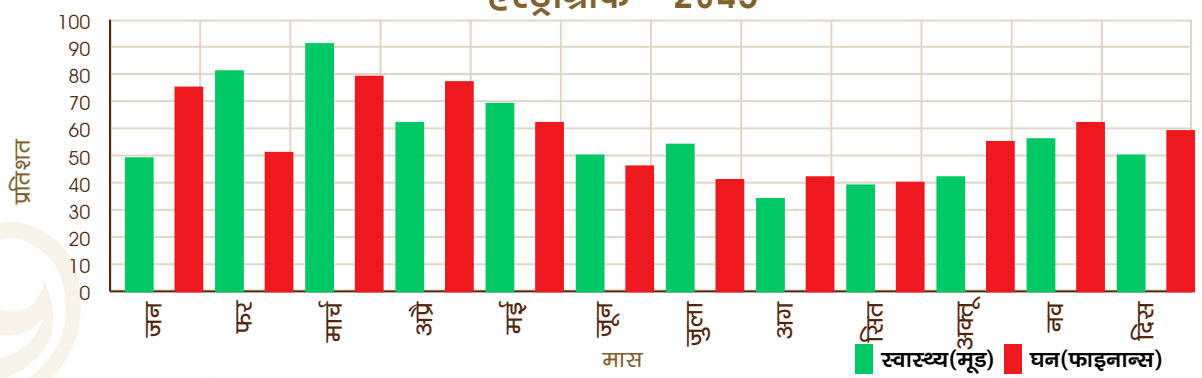

मालव्य योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसन्धि-
र्मध्ये क्षामः शशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः।
सद्दीप्ताक्षः समितिविदितो जानुदेशाप्रपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ।।
वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिः ससुतो भुनक्ति
लाटांश्च मालवससिन्धुसुपारियात्रान्।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9 1-2।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि या उच्चहोकर शुक्र केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है।

मालव्यनामक योग में समुत्पन्न जातक सर्वावयव सम्पन्न शरीरवाला, चन्द्रवत कान्तिवाला, युद्ध में मान रखने वाला, आजान बाहु (घुटनापर्यन्त बांह वाला) और दीर्घायु राजा होता है। मुख की लम्बाई 13 अङ्गुल एवं 10 अङ्गुल दोनों कानों के मध्य वाला होता है। लाट, मालवा, सिन्धु और परियात्र पर्वतीय देशों का प्रधान शासन अपने पुत्रों के साथ करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उच्चकोटि के कानून विशेषज्ञ, राजनेता, इलेक्ट्रोनिक्स विशेषज्ञ, संगीतज्ञ, अभिनेता, कलाकार, सिनेमा क्षेत्र में प्रसिद्ध, मीडिया में श्रेष्ठ, ज्योतिष के प्रति श्रद्धालु, एक्सपोर्ट अर्थात् निर्यात के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

एकावलीयोग

लग्नतश्चान्यतो वाऽपि क्रमेण पतिता ग्रहाः।
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 1।।

यदि किसी भी कुंडली में लग्न से सभी स्थानों में क्रम से एक या दो ग्रह पड़े या किसी भी स्थान से यह ग्रह क्रम का हो तो एकवली योग होता है। इस योग में समुत्पन्न जातक महाराजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 99999 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप एकावलीराजा के समान राजसुख प्राप्त करेंगे। आपकी उन्नति राजपद से महाराज पद पर हो सकती है।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

जलधियोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
गोसंपद्धनधान्यशोभिसदनं बन्धुप्रपूर्णं वर-
स्त्रीरत्नाम्बरभूषणानि महितस्थानं च सर्वोत्तमम्।
प्राप्नोत्यम्बुधियोगजः स्थिरसुखो हस्त्यश्वयानादिगो
राजेड्यो द्विजदेवकार्यनिरतः कूपप्रपाकृत्पथि।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 48।।

यदि जन्मकुंडली में सुखस्थान में शुभग्रह हों अथवा चतुर्थस्थान पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ रही हो और चतुर्थेश अस्त न हो तथा अपनी स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो जलधि (समुद्र) योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धन-धान्य गोधन से युक्त उच्च भवन में निवास करेंगे तथा बंधु-बाधवों से सुख प्राप्त करेंगे। पत्नी, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि सुख से सुखी होंगे। आप स्थिर लक्ष्मीवान होंगे तथा धार्मिक कार्यों में रूचि रखेंगे। हर प्रकार का सुख आपके भाग्य से प्राप्त होता रहेगा।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,केतु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-143 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

वाहनादि प्राप्ति योग

वाहनेशे बलयुते वाहने शुभसंयुते ।
शुभग्रहेण संदृष्टे वाहनादिफलं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-152 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश बलिष्ठ होकर सुख स्थान में शुभ युक्त या दृष्ट हो तो वाहन आदि सुख प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

दत्तकपुत्रप्राप्ति योग

दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः ।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश तथा सप्तमेश में से कोई संबंध स्थापित न हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दत्तक पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्त्री मृत्यु या अपुत्र योग

दारेशे सुतगे प्रणष्टवनितोऽपुत्रोऽथवा ।
।। फलदीपिका ।। अ.-10/श्लो.-2 ।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश संतान भाव में स्थित हो तो पत्नी या पुत्र मर जाता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी मर सकता है अथवा आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा संभाव्य है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,शनि योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।